श्री:

ज्योतिष्मती

नववर्षाङ्क

वर्ष
२२
सं० २०१५

संख्या
१
कातिक



वार्षिक
मूल्य
१२·००

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी

इस अङ्क का
मूल्य २·२५

विषय-सूची

आवश्यक सूचना

आगामी नये वर्ष सं० २०३६ वि० (सन् १९७९-८० ई०) का 'श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग' और 'श्रीगजेन्द्रविजयपञ्चाङ्ग' प्रत्येक बड़े नगरोंके स्थानीय पुस्तक विक्रेताओंसे खरीदें। यदि वहां न मिले तो "धर्मसन प्रकाशन नई सड़क देहली ६" से मंगावें। इस अङ्कमें जिन सज्जनोंका वार्षिक मूल्य समाप्त है उन्हें छपा हुआ मनीआर्डर फार्म साथ भेजा जा रहा है। —व्यवस्थापक

❀ श्रीः ❀

ज्योतिष्मती

[भारतीय संस्कृति और ज्योतिर्विज्ञानकी प्रचारक प्रमुखपत्रिका]

❀

सम्पादक एवं संचालक

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी

मुख्य सभापति—अ०भा० ज्योतिषपरिषद् (भारत सरकारसे पंजीकृत)

उपसम्पादक

डॉ० रुद्रदेव त्रिपाठी साहित्य सांख्ययोगाचार्य M.A., Ph.D.
श्री भवानी शंकर त्रिवेदी शास्त्री B.A.
श्री कैलाश पाराशर एम.ए., पत्रकारिता

प्रकाशक

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हिमाचल प्रदेश)

Telegram—'Jyotishmati' Telephone-696

'ज्योतिष्मती' के नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य

१. भारतकी प्राचीन विद्याओंका अन्वेषण और संवर्द्धन।

२. भारतीय संस्कृतिका प्रचार और उसके उज्ज्वलतम लक्ष्यकी पूर्तिका प्रयत्न।

३. ज्योतिर्विज्ञानकी उन्नति और ज्योतिः-शास्त्र द्वारा भारतीय व्यापारके संवर्द्धनकी कामना।

संचालकगणोंके नियम

संरक्षक

(१) जो महानुभाव ५०१) रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती'के संरक्षक माने जायेंगे। संरक्षकोंके शुभ नाम मुख पृष्ठ पर छपेंगे।

सहायक

(२) जो सज्जन १०१) रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती' के सहायक माने जायेंगे। सहायकोंके शुभ नाम मुख पृष्ठ पर छपेंगे।

(३) जो सज्जन एक बार ५०१) रु० देंगे वे आजीवन संमान्य सदस्य और जो १२५) रु० एक बार देंगे वे आजीवन सदस्य माने जायेंगे।

(४) 'ज्योतिष्मती' आश्विन शुक्ला १५, पौष शुक्ला १५, चैत्र शुक्ला १५ और आषाढ़ शुक्ला १५ को प्रकाशित होती है। इसका वार्षिक मूल्य १२.०० बारह रुपये और एक प्रतिके ३.२५ तीन रुपये पच्चीस पैसे हैं।

(५) जिन सज्जनोंके लेख ज्योतिष्मती-निकेतन की ओरसे प्रार्थनापूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जायेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(६) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र-पत्रिकाएं सम्पादक 'ज्योतिष्मती' सोलन (हिमाचल-प्रदेश) के पतेसे भेजनी चाहिएं।

(७) लेख आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए

(८) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'ज्योतिष्मती' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विन मासकी शरद पूर्णिमासे) ही बनाये जाते हैं चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि शरदपूर्णिमाका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछेका अङ्क न लेना चाहें तो वे बीचमें किसी भी समयसे वर्षभरके लिए ग्राहक हो सकते हैं।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखनी चाहिए। पता अंग्रेजीमें लिखना हो तो घसीट अस्पष्ट अक्षरोंमें न लिख कर केपिटल लेटर्स (बड़े अक्षरों) में स्पष्ट लिखें। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डर कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिए। वार्षिक मूल्य व एक अङ्कके मूल्यके नोट या टिकट लिफाफेमें कदापि न भेजें।

'ज्योतिष्मती'का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिये टिकट आवें गे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'ज्योतिष्मती' प्रकाशित होनेकी तिथि शुक्ला पूर्णिमा है। प्रकाशन तिथिसे सात दिन पूर्व प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दी जाती है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथि से १० दिनके अन्दर अपना ग्राहक नम्बर लिखकर हमें सूचना देनी चाहिए।

व्यवस्थापक—

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हि०प्र०)

"तमसो मा ज्योतिर्गमय"

ज्योतिष्मती

[त्रैमासिक पत्रिका]

(कार्तिक-मार्गशीर्ष-पौष, दि० १७ अक्टूबर ७८ से १३ जनवरी ७६ तक)

गुम्फन्तीव पुरातनैरथ नवैर्ज्योतिःप्रबन्धैः समं
भाग्याभाग्यविनिर्णयं कविकथा-सन्दोहमातन्वती ।
अज्ञानान्धनिवारणं विदधती विज्ञानसूर्योज्ज्वला
जीयाद्धर्ममयी सुकर्मनिरता 'ज्योतिष्मती' भूतले ॥

वर्ष	सोलन, आश्विन शु० १५ सोमवार, स० २०३५ वि०	संख्या
२२	२४ आश्विन, शाके १९०० (१६ अक्टूबर १९७८ ई०)	१

सूक्ति-सुधा

पहले परस्पर प्रेम ही, रक्षक रहा संसारमें ।
शासनप्रथा तो तब चली जब छल घुसा व्यवहारमें ॥ १ ॥
जैसे नियम बढ़ते गये, जलाल भी बढ़ता गया ।
ज्यों-ज्यों बना जग अति चतुर, त्यों-त्यों जकड़ता ही गया ॥ २ ॥
अब तो प्रशिक्षण है प्रचुर, पाखण्ड पढ़नेके लिए ।
न्यायालयोंमें है प्रशिक्षित, झूठ गढ़नेके लिए ॥ ३ ॥
पाखण्डपूरित झूठ ही, जिस कालका चातुर्य है ।
सोचो भला उसमें कहां तक, शान्तिका माधुर्य है ॥ ४ ॥
परमार्थपथ पर ले चले, वह दिव्य पारस प्रेम है ।
सहयोगको सुस्थिर करे, वह शान्ति साधक स्नेह है ॥ ५ ॥
जो सबल बाधाको हरे—व्यवहार कहते हैं उसे ।
पल-पल लखे अपनत्वसे, परिवार कहते हैं उसे ॥ ६ ॥
शासन वही है स्वच्छ, जिसकी आंख सब पर ही तुली ।
रक्षण तथा शिक्षण युगल, भुजदण्ड जिसके हों बली ॥ ७ ॥

—डा० वेदप्रकाश शास्त्री

बाईसवें वर्षमें पदार्पण

अनन्त शक्तिमयी जगज्जननी जगदम्बा आद्याशक्ति माँकी अपार कृपा तथा विद्वज्जनोंके शुभाशीर्वादोंके फलस्वरूप आपकी प्रिय पत्रिका 'ज्योतिष्मती' अपने जीवनके इक्कीस वर्ष निर्विघ्न भावसे सानन्द सम्पूर्ण कर आज २२वें वर्षमें पदार्पण कर रही है। इक्कीस वर्षकी लम्बी अवधिमें राष्ट्र और समाजने अपने जीवनमें जहां अनेक उलट फेर और परिवर्तन देखे हैं, बड़े-बड़े सत्ताधारियों की सत्ता जहां नामशेष रह गई है, जन-जीवन जहां आलोडित-विलोडित होकर कहींका कहीं जा पहुँचा है और मानव मनमें चिर प्रतिष्ठित आस्थाएं जहां डिगमगाने लगी हैं, वहां ज्योतिष्मती जैसी अल्प-साधन और स्वल्पवित्त छोटी-सी पत्रिकाका निरन्तर प्रगति-पथ पर अग्रसर होते रहनेका सम्पूर्ण श्रेय भगवद्कृपाके साथ-साथ अपने उदारमना संरक्षक-सहायक विद्वान् लेखक और विज्ञ-विवेचक सहृदय ग्राहक-अनुग्राहकोंको ही जाता है।

भारतकी प्राचीन पवित्र परम्परा, संस्कृति, धर्म-साहित्य और ज्ञान-विज्ञान तथा विशेषतः वेदोंके नेत्रभूत ज्योतिर्विज्ञानके दिव्य आलोकसे राष्ट्रको, समाजको और व्यक्तिको समुचित मार्ग प्रदर्शित करनेके पुनीत कार्यमें 'ज्योतिष्मती' सदा अग्रणी रही है। यही कारण है कि ज्योतिष्मतीकी प्रतिष्ठा और लोकप्रियता दिनोंदिन बढ़ती जा रही है और इसे मासिक रूप प्रदान करनेकी मांग उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। इसके लिए हम भी कुछ वर्षोंसे प्रयत्नशील हैं और देहलीमें कार्यालय स्थापित करनेके लिए अपने निजी मकानको खाली करानेके प्रयत्नमें लगे हुए हैं। किन्तु, अब ऐसा सोचा जा रहा है कि जब तक वह मकान खाली न हो अन्यत्र तात्कालिक व्यवस्था कर ली जाए और इस प्रकार अपने प्रिय पाठकों तथा ग्राहक अनुग्राहकोंकी 'ज्योतिष्मती' को मासिक बना देनेकी मांगको पूरा करनेकी दिशामें कुछ सक्रिय कदम उठाया जाए। आशा है जिस महामहिमामयी भगवतीकी अनुकम्पासे ज्योतिष्मती अपने जीवनके २१ वर्ष पूरे करके २२वें वर्षमें पदार्पण कर रही है उसीके कृपा-कटाक्षोंके फलस्वरूप इसे मासिक रूप प्रदान करनेका संकल्प भी शीघ्र सफल होगा।

दिल्ली जयपुर कानपुर आदि दूरस्थ नगरोंके स्नेही सज्जनोंका अनुरोध था कि—"आपके यहां दूरभाष (टेलीफोन) का होना अत्यावश्यक है। तत्कालमें किसी विषय पर आपसे कोई परामर्श करना हो तो तार उतना उपयोगी नहीं होता जितना कि टेलीफोन।" उन सज्जनोंको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गत माससे 'ज्योतिष्मती-निकेतन' सोलनमें टेलीफोन लग गया है।

जिन संरक्षक सहायक सज्जनोंने गतवर्षसे अपना वार्षिक सदस्यता शुल्क नहीं भेजा है वे अब शीघ्र भेजकर अनुगृहीत करें। साथ ही 'इष्टं धर्मेण योजयेत्' के अनुसार कमसे कम अपने एक दो इष्टमित्र सम्बन्धीको 'ज्योतिष्मती' का संरक्षक या सहायक बनाकर सहयोग देनेकी कृपा करें।

स्नेहाधीन—
हरदेव शर्मा त्रिवेदी
विजया १०, सं० २०३५ वि० (११-१०-७८)

ज्योतिष्मती-निकेतन
सोलन (हिमाचल प्रदेश)
Telephone No 696

सम्पादकीय विचार—

जनता सरकार अब भी चेते

यह सर्वविदित है कि श्री नेहरू और उनकी पुत्री श्रीमती इन्दिरा गांधीने अपने तीस वर्षके सुदीर्घ कांग्रेसी शासनकालमें सरकार तथा राष्ट्रको भ्रष्टाचारके दल-दलमें आद्यन्त ऐसा फँसा दिया था कि उससे निस्तार पाना नई जनता सरकारके लिए वास्तवमें एक बहुत बड़ी चुनौती है। किन्तु, देखना यह है कि जनता सरकार राष्ट्रको विनाशके कगार तक पहुंचा देने वाले इस भ्रष्टाचारसे मुक्ति पानेके लिए कोई ठोस और सक्रिय कदम उठा भी रही है या नहीं। कहीं जनता सरकारको चलाने वाले ये बड़े-बड़े नेतागण भी कांग्रेसियोंकी भांति केवल बातें-ही बातें करके झूठे और थोथे आश्वासन देकर तो अपने कर्तव्यकी इतिश्री नहीं समझ बैठ रहे हैं। इन्दिरा-गांधी और उसके समर्थक सहयोगी नेतागण—

"मनस्यन्यत् वचस्यन्यत् कर्मण्यन्यत्......"

के प्रत्यक्ष प्रतीक थे। वे लोग कहते कुछ थे और करते कुछ थे।

किन्तु, इधर डेढ़ वर्षके शासनकालमें नयी सरकारने ऐसा कोई ठोस कार्य नहीं करके दिखाया जिससे यह सिद्ध हो सके कि जनता-पार्टीके ये नेतागण—

"मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्"

के स्वर्णिम सिद्धान्त पर चल रहे हों। इन लोगोंकी भी कथनी और करनीमें कांग्रेसियों की भांति कहीं कोई एकरूपता दिखाई नहीं देती। दूर क्यों जाएं, पब्लिक स्कूलोंके मामले को ही देख लीजिए। निश्चित ही ये पब्लिक स्कूल (जिनमें पढ़ने वाले एक-एक बच्चे पर अभिभावकोंको दो-तीन सौ रुपये मासिक तक खर्च करना पड़ता है) भ्रष्टाचारके जीते-जागते गढ़ हैं। सरकारने काले धनके उपयोगके जो अनेक तरीके निकाले हैं उनमेंसे एक ये पब्लिक स्कूल भी हैं। एक तरफ तो सरकार, जनता पार्टी और श्री जयप्रकाश बाबू जैसे उसके अग्रणी पथ प्रदर्शक, महान् नेता, समाजमेंसे ऊंच-नीच की भेद-भावना और वर्गभेदको मिटानेके लिए लम्बे-चौड़े लेक्चर झाड़ते रहते हैं और दूसरी ओर वर्गभेदके जनक इन पब्लिक स्कूलों के बन्द करनेकी कभी कोई बात तक मुंह पर न लाए, तथा कभी कुछ इनके विरुद्ध कह भी दें तो उनके बन्द करनेका नाम तक न लें। यह कैसी बड़ी विडम्बना है? विडम्बना ही नहीं राष्ट्रके साथ एक बहुत बड़ी धोखाधड़ी भी है। उदाहरणके लिए अपने प्रधानमन्त्री श्री मोरारजी भाईको ही देख लें, वे भी मौके-बेमौके इन पब्लिक स्कूलोंके विरुद्ध आवाज तो उठाते रहते हैं, किन्तु इन्हें बन्द करनेका जब प्रश्न आता है तो उनके हाथ-पांव फूल जाते हैं। जैसे कि २७ सितम्बरको प्रकाशित बम्बईकी एक साप्ताहिक पत्रिकाके लिए भेंट देते हुए श्री देसाईने कहा कि "मेरा विचार है कि पब्लिक स्कूल बन्द कर देने चाहिए।" ऐसा कहते हुए भी इन पब्लिक स्कूलोंको बन्द

करनेके लिए कोई कदम नहीं उठाया जा रहा है। इससे स्पष्ट है कि जनता सरकारके संचालकोंको भी कथनी और करनीमें एकरूपता नहीं है। वे जो कुछ कहते हैं उस पर अमल करनेका उनमें साहस नहीं है।

बढ़ती हुई हिंसक प्रवृत्तियाँ

कांग्रेसके सत्ता सम्भालनेके बादसे देशमें जिन अनेक बुराइयोंने घर कर लिया, हिंसात्मक प्रवृत्ति भी उन्हींमेंसे एक है। इस हिंसात्मक प्रवृत्ति पर काबू पानेके लिए भी जनता सरकारने कभी कुछ किया हो ऐसा कहीं दिखाई नहीं देता। इसके विपरीत स्थिति तो उत्तरोत्तर भयावह होती जाती पतीत हो रही है। प्रतिदिन प्रातःकाल समाचार पत्रोंमें दो-चार निरपराध निरीह व्यक्तियोंके मारे जाने के समाचार छपते ही रहते हैं। पिछले दिनों नई दिल्ली के दो किशोर भाई-बहनों (संजय और गीता चोपड़ा) की रंगा और बिल्ला जैसे गुण्डोंके हाथों निर्मम हत्याके समाचारोंसे सारा राष्ट्र त्रस्त हो उठा था। किन्तु, इस मामलेमें भी पुलिसने वक्तव्य देनेके सिवा कुछ करके दिखाया हो ऐसा प्रतीत नहीं होता। बच्चोंकी लाशोंका पता लगाया हो तो लोगोंने, अपराधियोंकी कारको पकड़ा हो तो लोगोंने और अन्तमें अपराधी पकड़े भी लोगों (सनिकों) के हाथों गए। पुलिस मात्र झूठे सच्चे वक्तव्य ही देती रही। स्पष्ट बात तो यह है कि यह बच्चे तो बड़े अधिकारीके थे इसलिए इनके बारेमें इतना हल्ला-गुल्ला मचा और दौड़-धूप भी हुई। किन्तु, ऐसे ही अनेक गरीब लोग इन असामाजिक तत्वोंके हाथों प्रतिदिन मारे जाते हैं उनके लिए तो किसीके कान पर जूं तक नहीं रेंगती।

दुश्चरित्रताके प्रचारक ये चलचित्र

पिछले कांग्रेसी शासन-कालमें भ्रष्टाचारको पनपने की जो खुली छूट दी गई, उसका जीता-जागता नमूना हिंसा मारधाड़ और दुश्चरित्रता के दृश्योंसे भरी हुई आजकी फिल्में भी प्रस्तुत करती हैं। नेहरूके सत्ता सम्भालनेके पूर्व जहां राम-राज्य, भरत-मिलाप, सीता और संत ज्ञानेश्वर जैसी धार्मिक तथा सिकन्दर, पुकार और नौशेरवां जैसी ऐतिहासिक और चित्रलेखा जैसी सांस्कृतिक चरित्र निर्माणक फिल्में बनती थीं एवं अपार भीड़ आकर्षित करती थी, वहां कांग्रेसके सत्ता सम्भालते ही उनका स्थान 'शोले' जैसी फिल्मोंने ले लिया जिनमें एक डाकू पूरेके पूरे एक परिवारकी हत्या कर डालता है और ६-६ लाशें एक साथ पड़ी दिखाई गई है, एवं उस डाकूको हीरो और श्रेष्ठ अभिनेता मानती है। इस फिल्मके विरुद्ध पत्र-पत्रिकाओंने एक स्वरसे आवाज उठाई थी, किन्तु कांग्रेसी सरकार भला इस पर क्यों रोक लगाती ? संजयगांधीके मित्र अमिताभ बच्चनने इसमें प्रमुख भूमिका जो निभाई थी। उन दिनों किसीकी क्या मजाल थी कि संजय गांधी या उनके साथीके किसी काम पर कोई उंगली उठा सके। किन्तु, प्रश्न यह है कि अब तो कांग्रेसी सरकार नहीं है, फिर 'शोले' जैसी हिंसक प्रवृत्तियों और मारधाड़से भरी हिंसक फिल्मों पर सरकार प्रतिबंध क्यों नहीं लगाती ? जबकि प्रतिदिन हम यह पढ़ेते हैं कि किसी न किसी अपराधीने अपने अपराध की मूल प्रेरणा किसी न किसी फिल्मको बताया होता है। जनता सरकार पब्लिक

स्कूलोंको तो बंद नहीं कर सकती पर क्या इन हिंसा और मारधाड़से भरी दुश्चरित्रता मूलक फिल्मों पर भी रोक नहीं लगा सकती ?

स्पष्ट है कि आज राष्ट्रमेंसे चरित्र नाम की वस्तुका लोप हो चुका है और चरित्रके अभावमें वह विनाशके कगार पर खड़ा है।

"विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः।"

की उक्ति आज अक्षरशः चरितार्थ हो रही है। लगता है कि भगवान् श्रीकृष्णकी गीतामें दी गई :—

ध्यायतो विषयान्पुंसः संगस्तेषूपजायते।
संगात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥
क्रोधाद् भवति संमोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥

इस चेतावनीकी ओर ध्यान न देकर सम्पूर्ण राष्ट्र उत्तरोत्तर पतनकी ओर अग्रसर होता जा रहा है। और इन सबका मूलकारण है धर्मके प्रति अश्रद्धा। श्री नेहरूके सत्ता सम्भालनेके पहले तक राष्ट्रके प्रत्येक स्कूलमें धर्म-शिक्षाका एक पीरियड होता था और अलगसे एक धर्मशिक्षककी नियुक्ति की जाती थी। किन्तु, धर्मद्वेषी श्रीनेहरूने सत्ता सम्भालते ही धर्मका नाम लेने पर भी प्रतिबंध लगा दिया। लोग हिन्दु धर्मके स्थान पर हिन्दु संस्कृतिका प्रयोग करने लगे और "संस्कृति" का आज क्या अर्थ है ? यह तो सब जानते ही हैं। सांस्कृतिक कार्यक्रमका अर्थ है अर्धनग्न नृत्य और गानका कार्यक्रम। तदनुसार भारत सरकारका सांस्कृतिक कार्यका मंत्रालय भी नाचने-गानेको प्रोत्साहन दे रहा है। उसका वास्तविक भारतीय संस्कृति और प्राचीन परम्पराके संरक्षणसे कोई वास्ता नहीं। और वास्ता हो भी कैसे। भारतकी संस्कृति टिकी हुई है सनातन शास्त्रों पर और वे शास्त्र लिखे गए हैं संस्कृतमें। इसके लिए संस्कृतका पठन-पाठन और शास्त्रोंका स्वाध्याय परमावश्यक है। किन्तु कांग्रेसी सरकारका इन सबसे कोई वास्ता था ही नहीं, अब जनता सरकार भी इस ओर कुछ ध्यान दे रही हो ऐसा दिखाई नहीं देता। संजय और गीता चोपड़ाकी निर्मम हत्याके बाद विट्ठलभाई पटेलभवन नईदिल्लीमें इस संबंद्धमें आयोजित एक संगोष्ठीमें श्रीविजय-कुमार मल्होत्राने यह कहनेका साहस अवश्य दिखाया था कि "धार्मिक भावनाओंके अभावके कारण ही समाजमें हिंसात्मक प्रवृत्तियां तथा अन्य बुराइयां घर करती जा रही है।" किन्तु श्री मल्होत्राके इस कथन पर किसीने कोई ध्यान नहीं दिया। उनकी बात नक्कारखानेमें तूतीकी आवाज बनकर रह गई। हम भी इन पंक्तियोंके द्वारा जनता सरकारसे स्पष्ट कह देना चाहते हैं कि यदि वह और उसके संचालक नेतागण अपनी कथनी और करनीमें एकरूपता दिखाना चाहते हैं तो उन्हें तत्काल ऐसे कदम उठाने चाहिएं जिससे जनतामें धार्मिक भावना जागृत हो सके। स्कूलोंमें धर्म शिक्षाके पीरियड फिरसे चलाए जाने चाहिए। संस्कृत और प्राचीन शास्त्रोंकी परम्पराको प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। हिंसा और कुरुचिसे पूर्ण चल-चित्रों पर तत्काल रोक लगा दी जाए। वर्ग भेदके जनक पब्लिक स्कूल बन्द कर दिए जाएं और सबसे बढ़कर सरकार तथा विशेषकर पुलिस तन्त्रमें आद्यन्त व्याप्त भ्रष्टाचारको समाप्त करनेके लिए सुदृढ़ और कठोर उपाय किये जाने चाहिए। यदि ऐसा न कर जनता

सरकार भी कांग्रेसी सरकारके चरणचिह्नों पर ही चलती रही तो उसका भी वैसा ही परिणाम अवश्यम्भावी है। आशा है जनता सरकार के कर्णधार अब भी चेतेंगे, सम्भलेंगे और कुछ सोचनेके लिए विवश होंगे।

पहलवानोंको बधाई

पिछले दिनों राष्ट्रमण्डलीय खेलोंके आयोजनमें भारतीय कुश्तीदलने भी भाग लिया और हर्षका विषय है कि हमारे युवकोंने स्वर्ण रजत एवं कांस्य पदक जीतकर देशको गौरवान्वित किया।

भारत मल्ल-विद्यामें प्राचीनकालसे ही अग्रणी रहा। कला पुरुषोत्तम भगवान् श्री कृष्ण, बलराम, बलके धाम हनुमान्, महाबली भीम आदि विश्वमें मल्ल विद्याके निष्णात माने गये हैं। भारतके प्रोफेसर राममूर्ति एवं गामा विश्व विजेता रहे।

शरीरको स्वस्थ एवं सुगठित रखनेके लिये व्यायामको शिक्षाका महत्वपूर्ण आवश्यक अंग माना गया है। महामना मालवीयजीने इस लिये घरघरमें अखाड़ा हो ऐसी कामना व्यक्त की थी। प्राचीन भारतमें मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष की द्वादशी तिथिको 'मल्लद्वादशी' नाम दिया गया है। इस दिन मल्लयुद्ध प्रतियोगिता हुआ करती थी। 'श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग' में प्रतिवर्ष मार्गशीर्ष कृ० द्वादशीको 'मल्ल १२' उल्लेख किया जाता है। मल्लविद्यागुरु भगवान् श्रीकृष्णको मार्गशीर्षमास विशेष प्रिय था इसलिए गीतामें कहा है—"मासानां मार्गशीर्षोऽहम्।' और द्वादशी तिथिके स्वामी स्वयं भगवान् श्री हरि हैं।

स्मरण रहे जिन दस युवकोंने राष्ट्रमण्डलीय खेलोंमें कुश्तीदलका प्रतिनिधित्व किया उसमें नौ पहलवान् बिड़ला मिल दिल्ली व्यायामशालाके थे और सभीने पदक प्राप्त किये। इस हेतु मल्ल विद्याके आचार्य गुरु हनुमानको हम ज्योतिष्मती-परिवारकी ओर से हार्दिक बधाई देते हैं।

गुरु हनुमान्ने अपना सम्पूर्ण जीवन कुश्ती कलाको समर्पित कर दिया है, उनकी साधना का ही फल है कि भारतकी इस लुप्त होती कलामें फिरसे प्राणोंका संचार करा दिया है और भारतको पुनः गौरवमण्डित करनेके लिये वे प्राणपणसे लगे हुये हैं। भारत सरकार एवं जनसाधारणसे हमारा यह निवेदन है कि कुश्तीकलाके संवर्धन हेतु हर सम्भव सहायता की जानी चाहिए।

जिन पहलवानोंने पदक जीते उनमें महाबली सत्तपाल, सुदेश, अशोक आदि उल्लेखनीय हैं। खेलप्रेमी श्रीविजयकुमारजी मल्होत्रा के सफल नेतृत्वकी भी हम सराहना करते हैं।

साधुवाद

निम्बार्क गंगा-सोसायटी स्थल मंदिर उदयपुर द्वारा राजस्थान विश्वविद्यालयसे मान्यता प्राप्त उदयपुरमें शिक्षाशास्त्री-विद्यालय (बी.एड. विद्यालयकी) स्थापना राजस्थान ही नहीं अपितु देशके संस्कृत जगत्में एक महत्वपूर्ण घटना मानी जायेगी, उदयपुर संभवतः देशमें प्रथम नगर होगा जहां अब तीन बी.एड् कालेज हो गये हैं। संस्कृतमें बी.एड विद्यालय खोलनेका श्रेय हमारे सम्माननीय

(शेष पृष्ठ ५६ पर)

सकल कामना साधक-'श्रीरामचरित मानस' पाठकी अमोघ विधि

[लेखक :—श्री चन्द्रभूषण शास्त्री-काव्यतीर्थ, चित्तौगढ़ राजस्थान]

सन्त सार्वदेशिक होते हैं, एक देशीय नहीं। उनके हृदयमें आत्मकल्याणकी उतनी लगन नहीं होती जितनी जन-मंगलकी हुआ करती है। सन्त उदार और परपीड़ा-कातर होते हैं। वे विशालमना और दिव्य-दृष्टि वाले होते हैं। अतएव उन्हें त्रिकालदर्शी कहते हैं। अनन्य प्रपन्न भक्त और भगवान् में अन्योन्याश्रित सुदृढ़ सम्बन्ध रहता है। कहीं-कहीं तो भगवदीय विधानको भी भक्तजन बदल दिया करते हैं—अभिमानसे नहीं अयने प्रभु की अनुपम कृपाके बलपर। ऐसे अनेक भक्तों के चरित्र पुराण इतिहास भक्तमाल आदि ग्रन्थोंमें पढ़े व सुने जाते हैं।

प्रातःस्मरणीय गोस्वामी सन्त श्री तुलसी दास भगवान् राघवेन्द्रके परम भक्तोंमें माने गये हैं। उनके भक्तिभावपूर्ण हार्दिक उद्गारोंके स्पष्ट दर्शन उनके ही स्वरचित रामचरित-मानस, विनय-पत्रिका, गीतावली, दोहावली आदिमें होते हैं। जिनके गम्भीर अध्ययनसे सभी सम्प्रदायोंके सन्त-महान्त-आचार्य उपाध्याय आदि इसमें एक मत हैं कि श्रीगोस्वामी जी परमभक्त व महान् सन्त थे, भगवच्चरणारविन्दोंमें उनकी दृढ़ निष्ठा व अपरिमेय श्रद्धा एवं विश्वास था। उन महाभागवत सन्तकी रुचिर एवं सरस लेखनीसे निर्गत 'रामचरित मानस' आदि ग्रन्थोंने आज श्रीरामजीको अति निकट बुला लिया है। यह है सन्तकी भक्ति-भाव-भरित लेखनीका प्रत्यक्ष प्रभाव। मानस ने आज जन-जनके मानसमंदिरमें भगवान् श्री रामकी प्रतिष्ठा कर दी है। आबालवृद्ध, नर, नारी मानस रूपी पीयूषका पान करते-करते रामके रसिक भक्त हो गये हैं और हो रहे हैं।

मानसका प्रभाव केवल भारतमें ही नहीं विश्वके कोने-कोनेमें फैल रहा है। लोग भगवान् रामको साक्षात् परात्परब्रह्म सच्चिदानन्द सर्वेश्वर मानने लगे हैं। यह इस सन्तकी भक्ति पूर्ण भावनाका ही प्रसाद नहीं तो क्या है।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम व उनके परिवारी भक्तगणके आदर्श चरित्र आजके युगमें सच्ची मानवताका मार्गदर्शन कर रहे हैं। यही 'मानस' सर्वोपकारी महान् सन्त श्रीगोस्वामी जीका आकल्प प्रतिनिधित्व करता ही रहेगा। यह अभ्रान्त रूपसे महामन्त्र है और सर्वसिद्धि-प्रद है। स्वयं गोस्वामीजी भक्तोंको 'मानस' में संकेत करते हैं—

जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं।
सुख सम्पति नाना विधि पावहिं॥
(उत्तर-कांड)

मन कामनासिद्धि नर पावा।
जे यह कथा कपट तजि गावा॥
(उत्तर-कांड)

वास्तवमें यदि श्रद्धा और सच्ची निष्ठा के साथ विधिवत् मानसका पारायण किया जाय तो उसके सभी मनोरथ अवश्य ही पूर्ण हो जाते हैं। इस महामन्त्र रूप मानस जाप में कई सम्पुट हैं। कई प्रकारकी पारायण विधियां भी हैं। अभी १० वर्ष पूर्व मुझे मेरे एक भगवद्भक्त प्रेमी सज्जनने एक विधि बताई है, जो एक उच्चकोटिके महात्माके द्वारा प्रसादीकृत है।

मैंने स्वयं उसी तरह कई पारायण किये। मेरे अभीष्ट मनोरथ शतशः सम्पन्न हुए। तदनन्तर मैंने इस विधिको अमोघ मानकर अपने मिलने वाले स्नेही साथी व शिष्योंसे भी विधिवत् पारायण करनेकी प्रेरणा दी, उनको भी आशातीत लाभ हुआ। इन अनुभवोंसे मेरा इस प्रयोग विधिमें पूर्ण विश्वास हो गया है। यह विधि अनेकानेक प्रतिबन्धक कर्मजन्य विघ्न-बाधाओंको मिटाकर हठात् प्रयुक्ताकी इच्छित कामनाओंको सफल कर देती है।

"मन्त्र महामनि विषय व्यालके।
मेटत कठिन कुअंक भालके॥"

यह उक्ति यहीं चरितार्थ देखी गई है। अभियोग (मुकदमा) में विजय। रोग-निवृत्ति, शत्रुओंका पराजय अवश्य हो जाता है। व्यापार में लाभ, इच्छानुसार अर्थलाभ, नौकरीकी कामना, परीक्षामें सफलता भी देखी गई है। अर्थलाभमें, ऋणमुक्तिमें, तो यह ५-७ बार परीक्षित भी हो चुकी है। आज मैं उस अनुभूत विधिको सभी सकाम भक्तोंके हितार्थ यहां प्रकट कर देना उचित मानता हूं। और आशा करता हूं कि सभी श्रीरामचरितमानस पाठी भक्त इस विधिसे अपने-अपने अभीष्ट फल प्राप्त करेंगे। पाठ विधि निम्न है—इस विषयमें फिर भी कहीं सन्देह हो जाय तो, पत्र द्वारा भी मुझे पूछ सकते हैं।

पारायण जहां तक हो स्वयं ही करें। दूसरोंसे प्रयोग करानेमें उनके विचार-भावना लगनके अनुरूप ही सिद्धि होगी, जो कुछ अपूर्ण भी रह सकती है। ऐसी मेरी मान्यता है। यदि स्वयं प्रयोग चलानेमें अशक्त हैं तो शुद्ध उच्चारण करने वाले रामभक्त विद्वान् सच्चरित्र व्यक्तिसे भी कार्य सिद्धि तक पारायण कराये जा सकते हैं।

विधि :—प्रातः स्नान सन्ध्या आदिसे निवृत्त होकर उत्तराभिमुख आसन पर बैठे। आसन कुशा या ऊनका हो। सामने भगवान् रामका सुन्दर पंचायतन स्थापन किया जाय। भगवान्को स्नान चन्दन गन्ध माला धूप दीप नैवेद्य आदि अर्पण करके बड़ी श्रद्धा व भक्तिभावनाके साथ मानसका पाठ आरम्भ करें।

मंगलाचरण :—

रक्ताम्भोजदलाभिरामनयनं पीताम्बरालंकृतम्।
श्यामाङ्गं द्विभुजं प्रसन्नवदनं श्रीसीतया शोभितम्॥
कारुण्यामृतसागरं प्रियगुणैर्भ्रात्रादिभिर्भावितम्।
वंदे विष्णुशिवादिसेव्यमनिशं भक्तेष्टसिद्धिप्रदम्॥
(मानसके प्रारम्भमें है)

दूसरा :—

मनोजवं मारुत तुल्यवेगं,
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानर यूथ मुख्यं,
श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥ २॥

उपरोक्त दोनों श्लोकोंसे मंगलाचरण-पूर्वक प्रार्थना करे।

इसके बाद बालकांडमें--

"जय जय सुरनायक जनसुखदायक"—यह प्रार्थना—"हरति शोक संदेह" दोहा नं० १८६ तक करे।

फिर निम्न सोरठोंका उच्चारण करे—

"जो सुमिरित सिधि होय"

से लेकर

"जासु वचन रवि कर निकट।"

तक। बाल-कांड आदिमें १ से ५ तक है।

सम्पुट—

जिमि सरिता सागर महुँ जाहीं।
यद्यपि ताहि कामना नाहीं॥
जिमि सुख सम्पति विनहि बोलाएं।
धरमशील पहिं जाहिं सुहाये॥

(बा. कां. दो. २९३ के नीचे)

पुनश्च :—

तांकहुँ प्रभु कुछ अगम नहीं,
जापर तुम अनुकूल।
तव प्रभाव बडवानल हिं,
जारि सकई खलु तूल॥ १॥

(सु० कां० दो० ३३)

पुन: उपरोक्त—'जिमि सरिता सागर मँहजाई'। इत्यादि—

तदनन्तर :—किष्किन्धा काण्ड दोहा नं० २९ के नीचेकी चोपाइयां—'कहहू रीछपति सुनु हनुमाना।' से लेकर काण्डकी समाप्ति तक पढ़ें। पुनः वही सम्पुट 'जिमि सरिता सागर०, बोलकर नित्यका पाठ करें।

पाठमें भी प्रति दोहे छन्द कवित्त पर भी यही संपुट लगाया जाय तो शीघ्र धन लाभ, व्यापारमें वृद्धि मन प्रसन्न होता है।

कमसे कम ५ दोहाका तो नित्य पाठ करना ही चाहिए। केवल किष्किन्धा काण्डका ही इस विधिसे पाठ करें।

९ पाठ करने पर ही मनोरथ सिद्धिके दर्शन होने लगते हैं। यदि पूरे मानसका उक्त विधिसे नवाह्निक पाठ करे तो पठन कालमें ही कठिनसे कठिन कार्योंमें भी सफलताके दर्शन हो जाते हैं। नित्य पाठ करने वाला धन-धान्यसे सम्पन्न सुखी और सर्वत्र विजयी होता है। यह प्रयोग अमोघ है। साधक साधना करके स्वयं देखें।

पाठ-समाप्ति पर "श्रीराम जय राम जय जय राम" ५ बार बोलें। नित्य पाठकर्ता के अभ्यासमें आजानेसे ५ मिनटमें ही यह विधि हो जाती है। नवीन पाठकर्ताको थोड़ी सरल होने तक कुछ अटपटी अवश्य लगेगी। फिर नहीं। प्रयोग सरल है, अचूक है। भगवान् कृपासे व्यापारमें लाभ, धन-वृद्धि, ऋण-मुक्ति, शत्रु-विजय, रोग-निवृत्ति, पुत्र-प्राप्ति, परीक्षा में सफलता, नौकरी लगना, भारी उलझनें मिट जाना आदि सम्पूर्ण लाभ इससे हुए देखे गये हैं। साधक स्वयं ही करके देखें और करावें।

मानसके सर्वकामनापूरक अनेक मन्त्रों (दोहों चौपाइयों) का अनुभवसिद्ध विधिविधान 'मानस सुन्दर मन्त्रमणिमाला' शीर्षक लेख सं० २०३६ वि० के 'श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग' में देखें।

केवल 'ज्योतिष्मती' के लिए

ज्योतिषशास्त्र और सन्मति वर्धमान महावीर

[लेखक :—डा० भूपसिंह राजपूत, हाँसी (हिसार)]

जैन अथवा श्रमण मतका प्रवर्तन ऋषभदेवजीसे माना जाता है। जैनमतानुसार आपका जन्म तृतीय आरे सुषमा दुषमके ८४ लाख पूर्व तीन वर्ष साढ़े आठ मास शेष रहने पर क्षत्रियोंके इक्ष्वाकुवंशमें अयोध्या नगरीमें हुआ था। आपकी आयुका प्रमाण ८४ लाख पूर्व (एक पूर्व ७,०५,६०,००,००,००,००० वर्ष) का कहा गया है। इस प्रकार आपकी आयु पांच हजार नौसौ सत्ताईस शंख चार पद्म वर्ष (५९,२७,०४,००,००,००,००, ००, ००, ००० वर्ष) की बैठती है। फलतः जैनमतकी प्राचीनता पृथ्वी पर वैज्ञानिक दृष्टिसे मानवोत्पत्तिसे भी असंख्यों अरबों-खरबों वर्ष पूर्व जा ठहरती है।

किन्तु, वैष्णव लोग आपका समय इतना पुराना नहीं मानते। वैष्णव मतानुसार आप भगवान् विष्णुके अवतार हैं। ऐतिहासिक वंशावलियोंके अनुसार आप भगवान् रामके पूर्वज थे और क्षत्रियोंके सूर्यवंशसे सम्बन्धित थे। इसी सूर्यवंशमें जैन परम्परामें मान्य २४ तीर्थङ्करोंमेंसे २२ तीर्थङ्कर हुए हैं। शेष दो तीर्थङ्कर चन्द्रवंशीक्षत्रिय घरानोंसे हुए हैं।

महावीर स्वामीने अपने पूर्ववर्ती २३ तीर्थङ्करोंके उपदेशोंका अवगुण्ठन करके और समयानुकूल संशोधन करके जैन विचारधाराको क्रमबद्ध कर देनेका ऐतिहासिक कार्य किया था। आप भगवान् बुद्धके समकालीन तथा सजातीय थे। कहा जाता है कि आपकी छह मौसियोंमेंसे एक मौसीके कारण आपके गौतम परिवारसे सम्बन्ध भी थे।

बुद्ध और महावीरसे पूर्व भी इनकी विचारधारा यहां मौजूद थी सांख्यदर्शनके प्रणेता कपिल मुनि क्षत्रिय थे और आप दोनोंके पूर्ववर्ती थे। कपिलमुनिने सम्यक्‌दर्शनका प्रतिपादन किया था। सांख्यदर्शन वाले मीमांसकोंके यज्ञ पर जोर देनेकी निन्दा करते हैं। वे वेदोंका समुचित आदर नहीं करते। तत्वज्ञान तथा अहिंसा पर जोर देते हैं। वे लोग जैनोंकी तरह आत्मबाहुल्यवाद (अनेक आत्मा) और बौद्धोंके क्षणिकवादकी तरह परिणामवादको मानते हैं। वे जातिवादमें विश्वास नहीं रखते। इस प्रकार सांख्य और योगदर्शन जो एक ही दर्शनकी धाराएं है, जैनदर्शनके बहुत निकट है।

प्रसिद्ध चार्वाक ऋषि भी महावीरके पूर्ववर्ती थे जो आत्माकी सत्ता ही नहीं मानते थे। उनके मतानुसर भौतिक शरीरके साथ ही तथाकथित आत्माका भी नाश जाता है। वे पाप-पुण्य धम-अधर्मको नहीं मानते। इसलिए इनके परिणामस्वरूप मिलने वाले स्वर्ग-नरकको भी वह केवल कल्पना ही मानते थे। वह केवल प्रत्यक्षको ही प्रमाण मानते थे।

किन्तु, जैन आत्माको मानते हैं। उसकी संज्ञा उनके निकट जीव है। जीव लोकव्यापी है। वह लोकव्यापी होते हुए भी हरएकमें एक नहीं है, अलग-अलग है। जब कर्मका आवरण उससे हट जाता है, तब वह अपनी लोकव्यापी शान्तिमें रमता है। यही उनके यहां निर्वाण है।

जैनमत नास्तिक नहीं है। नास्तिक वह होता है जो पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक तथा कर्म-फलको नहीं मानता। ईश्वर सृष्टिकर्ता है ऐसा जैन नहीं मानते। उनके विचारसे यह सृष्टि अनन्त है, अनादि है। यह किसीकी बनाई हुई नहीं है। अतः इसे न कोई बिगाड़ ही सकता है। जैन-परम्परा जगत्को अनादि-कालसे अनवरत और गतिशील मानती है। जगत्का अपकर्ष-उत्कर्षमय कालचक्र सतत क्रमसे चलता आ रहा है। जिसका आदि है न अन्त है। जैन लोगोंके यहां अनीश्वरवादी होनेके निम्न कारण बताए जाते हैं :—

(१) यदि ईश्वरने करुणावश सृष्टि-रचना की तो संसारमें कोई भी प्राणी दुखी नहीं होना चाहिए।

(२) यदि ईश्वर इच्छासे परे है तो वह सृष्टि रचनाकी इच्छा ही क्यों करेगा?

(३) वह दूसरोंके लिए सृष्टिकी रचना क्यों करेगा? जबकि उसके लिए कोई दूसरा है ही नहीं।

स्याद्वाद—जैन-दर्शनमें स्याद्वादका बहुत महत्व है। इस वादके अनुसार किसी भी वस्तु को पूर्ण सत्य कहना ठीक नहीं। जैनदर्शनने स्यादवादके द्वारा स्वयं अपने विषयमें भी स्वीकार कर लिया है कि वह जो कह रहे हैं, वही केवल एकमात्र सत्य है—ऐसा कोई दावा नहीं है। यह वाद धार्मिक उदारता एवं जागरूक व्यावहारिकताका एक अनुपम उदाहरण है।

कर्मका उच्छेद—कर्मसे ही आत्माका आवरण होता है। गीताने निष्काम कर्मकी प्रतिष्ठा की है। जैन मतानुसार जहां वस्तुसे सुख प्राप्त करनेकी इच्छा आरम्भ हुई, वहींसे बन्धनकी भी शुरूआत हुई। इसलिए जैन निष्क्रिय हो जाना ही श्रेयस्कर समझते हैं।

जैनमतको वैदिक धर्मका ही एक संशोधित रूप समझा जाता है। यह सभी मानते हैं कि तत्कालीन वैदिक यज्ञ-पद्धति एवं कतिपय जटिल कर्मकाण्डोंका ही विरोध महावीर स्वामीने किया था, सम्पूर्ण धर्मका नहीं।

जैनोंका अध्यात्मवाद सनातनियोंने तथा सनातनियोंका कर्मकाण्ड जैनियोंने इतना अपना लिया है कि बाह्य अन्तर भी नहीं दिखाई पड़ता।

बैष्णव लोगोंके २४ विष्णु अवतारोंकी ही भांति जैनों और बौद्धोंके यहां भी २४ तीर्थङ्कर और २४ बुद्धोंका अस्तित्व है।

जैन परम्पराके श्वेताम्बर साहित्यमें महावीर स्वामीके जीवनके सम्बन्धमें अपेक्षाकृत अधिक सामग्री है, तथा अधिक प्रमाणित भी है। दिगम्बर परम्पराके अनुसार इनके कोई भाई-बहिन, पत्नी-पुत्री आदि नहीं थे। किन्तु श्वेताम्बरी परम्परा इन ऐतिहासिक तथ्योंको छिपाती नहीं है, बल्कि स्वीकार भी करती है। इनका कहना है कि पारिवारिक

स्थितिसे महावीरकी महानतामें कोई अन्तर नहीं पड़ता है।

महावीर स्वामीकी पारिवारिक स्थिति इस प्रकार है :—

पिता—वैशाली नरेश श्रेयांस सिद्धार्थ यशांस। जो काश्यप गोत्रीय नाग (ज्ञात) खापके इक्ष्वाकु कुलके सूर्यवंशी क्षत्रिय थे।

माता—महारानी प्रियकारिणी विदेहदत्ता त्रिशलादेवी। जो सूर्यवंशके वासिष्ठ गोत्रसे थी। (अपर नाम लिच्छवी कुल)।

पत्नी—कलिंगकी राजकुमारी यशोदा जो कौण्डिन्य गोत्रिया थी और महासामन्त समरवीरकी पुत्री थी।

पुत्री—अनवद्या प्रियदर्शना। जो राज-कुमार जामालीसे (कौशिक गोत्रीय क्षत्रिय युवराजसे) ब्याही गई थीं।

महावीर स्वामीकी एक ही दोहत (दौहित्री) का वर्णन आता है। जिसका नाम यशस्वती शेषवती था।

आपके जामाता जामाली आपके अनुयायी बने थे। किन्तु बादमें मतभेद होने पर वह न केवल आपका साथ ही छोड़ गए, बल्कि विरोधी भी बन गए थे।

इनके अतिरिक्त आपके अन्य कुटुम्बीजन भी थे, चाचा सुपार्श्व, बुआ यशोधरा, नाना (कुछके मतानुसार मामा) चेटक. जिनकी अन्य छह पुत्रियां (महावीर स्वामीकी मौसियां) अन्य प्रतिष्ठित राजघरानोंमें ब्याही गई थीं। ज्येष्ठ भ्राता नन्दिवर्धन, जो बादमें राजा बने। ज्येष्ठ भगिनी—सुदर्शना।

यों तो बाल्यकालसे ही आपका रुझान क्षत्रियोचितकर्मोंकी अपेक्षा वैराग्यकी ओर ही अधिक था, किन्तु माता-पिताके निधनके बाद भाई-भाभीके काफी रोकनेके बावजूद आपने अठाईसवें वर्षमें वैराग्य ले लिया तथा तीसवें वर्षमें गृह त्याग दिया।

आइए, अब हम इस महान् विभूतिकी जीवनी को ज्यौतिषशास्त्रानुसार देखें कि आपकी जन्मकुण्डलीके अनुसार आपका जीवन-वृत्त कैसा था।

जन्म—जैन पुराणोंमें उल्लेख है कि आप आषाढ़ शुक्ला ६ विक्रमपूर्व ५४१ (५९८ ई० पू०) को गर्भमें आए। माना जाता है कि पहले आप सुनन्दा नामक (एक अन्य मतानुसार देवानन्दा नामक) एक ब्राह्मणीके गर्भमें गए थे। किन्तु माता सुनन्दा एक अवतारी जीव का तेज सहन न कर सकी। इसलिए इन्द्रादि देवताओंने आपका गर्भ प्रत्यावर्तन एक क्षत्राणी, माता त्रिशला देवीकी कोखमें कर दिया। क्योंकि सभी अवतारी विभूतियां क्षत्राणियों की कोखसे ही जन्मती रही है।

ग्रीष्म (वसन्त) ऋतुके चैत्र मासके द्वितीय पक्षमें त्रयोदशीके दिन पूरे नौ महीने सात दिन एवं बारह घंटे पूर्ण होने पर, जबकि नक्षत्र अपनी उच्च स्थितियोंको प्राप्त थे, प्रथम चन्द्रयोगसे दिशाओंके समूह जब निर्मल थे, अन्धकारहीन और ज्योतिष विशुद्धकाल था, सारे शकुन शुभ थे, अनुकूल दक्षिण पवन भूमिको स्पर्श कर रहा था, भूमि धान्यसे परि-पूर्ण थी, जब सारे मनुष्य और प्राणी प्रमुदित तथा क्रीड़ालीन थे, उस समय उत्तराफाल्गुनी

नक्षत्रके चौथे चरण अर्धरात्रिमें कुण्डग्राम वैशालीमें इक्ष्वाकु-कुल-भूषण, रघुकुलनन्दन, सूर्यवंशमणि, ज्ञातवंश-दीपक, सिद्धार्थकुमार, प्रियकारिणीनन्दन, नन्दिवर्धनानुज, सुदर्शना-सहोदर, वैशाली-राजकुमारके रूपमें सन्मति वर्धमान महावीर माता त्रिशला देवीकी दक्षिण कुक्षिसे प्रसूत हुए।

उस समय सूर्यकी महादशा एवं शनिकी अन्तर्दशा तथा बुधका प्रत्यन्तर चल रहा था।

इनके जीवनकालमें उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का बड़ा महत्व है। आपका गर्भ-प्रवेश, गर्भ-प्रत्यावर्तन उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमें ही संघटित हुए थे।

जन्म, गृहत्याग तथा केवलज्ञान प्राप्ति नामक पञ्च-कल्याणक

इस जातकका जन्म क्योंकि शुक्लपक्षकी त्रयोदशीको हुआ था, इसलिए जातक गेहुंए रंगका होना चाहिए।



नवग्रहानुसार विवेचन :—

मंगल क्योंकि उच्चका तथा मकरराशिस्थ है, इसलिए जातक ख्यातिप्राप्त, पराक्रमी, नेता, ऐश्वर्यशाली एवं महत्वाकांक्षी होता है। साथ ही राजसी चिह्नों यथा प्रलम्ब बाहु, सुदृढ़ स्कन्ध द्वय, विशालवक्षस्थल, उन्नत ललाट तथा कान्तिवान् मुखमण्डलसे युक्त होता है।

बृहस्पति क्योंकि उच्च कर्क राशिका है, अतः जातक सदाचारी विद्वान् सत्यवक्ता, महायशस्वी, समदृष्टा, सुधारक, योगी, लोकमान्य तथा नेतृत्व करने वाला होता है। मुखमण्डल आभायुक्त, तेजोमय एवं प्रभावो-त्पादक होता है।

शुक्र क्योंकि स्वगृही और पंचम भावमें है तथा वृष राशिका है। अतः जातक सुन्दर, ऐश्वर्यशाली, दानी तथा सात्विक वृत्तिका होता है। साथ ही परोपकारी अनेक शास्त्रों का ज्ञाता, त्याग भावना वाला तथा संगीत प्रेमी और भाग्यवान् होता है। यह जातक स्वतंत्र प्रकृतिका विचारक होता है।

शनिः क्योंकि उच्च क्षेत्री होकर दशम गृहमें बैठा है। अतः यह जातक सुभाषी, नेतृत्व प्रदान करनेमें समर्थ, उन्नतिशील तथा यशस्वी होता है। ऐसा जातक राजपरिवारका सदस्य होता है।

राहुः क्योंकि कर्कराशिका है। अतः जातक उदार एवं इन्द्रियनिग्रही होता है। दाम्पत्य जीवनको अल्पकाल तक ही भोगता है।

केतु : क्योंकि मकर राशिका है, अतः जातक प्रवासी, परिश्रमी, पराक्रमवान्, तेजस्वी तथा मोक्षभागी होता है।

बुध : मेष राशिका बुध है। फलतः ऐसा जातक इकहरे किन्तु सुगठित अंगों वाला और सत्यवक्ता होता है। समृद्ध, सम्पन्न तथा ऐश्वर्य-शाली होता है।

चन्द्रमा : कन्या राशिका होकर नवम स्थानमें बैठा है। अतः यह जातक अल्प सन्तति वाला, दानी स्वभावका, गम्भीर प्रकृतिका तथा सुदृढ़ देहयष्टि वाला धार्मिक वृत्तिका होता है।

आइए, अब इस कुण्डलीके द्वादश भावों पर क्रमशः विचार करें

प्रथम गृह—मकर लग्नमें जन्म होनेके कारण जिसमें मंगल और केतु (जो शारीरिक रचनाके रूप-लावण्यसे सम्बद्ध हैं) के कारण इस जातकका रंग गेहुंआ होना चाहिए। केतुके प्रभावसे लम्बी और सुन्दर ग्रीवा वाला होना चाहिए। इसके साथ बड़ी-बड़ी प्रभावोत्पादक आंखें भी होती हैं।

मंगलके कारण गर्भकालमें किसी गड़बड़ी की सम्भावनासे इन्कार नहीं किया जा सकता। मंगल और केतुकी युतिके फलस्वरूप परोपकारी, मोक्षमार्ग प्रदर्शक होता है। मंगल उच्च राशिका है। इसलिए जातक रजोगुण नाशक तथा भ्रमणशील एवं ख्यातिप्राप्त नेता होता है। केतुके प्रभावसे विश्ववन्द्य, परम पूज्य, बुद्धि तथा भाग्यकी खान होता है। जिसके दर्शनार्थ लोग चलकर आएं ऐसा नामवर और बुलंद मरतबा होता है। जती-सती और एकान्तप्रिय होता है।

द्वितीय गृह—शनि तुला राशिका होकर दशम स्थान कार्यक्षेत्रमें जा बैठा है। फलतः राजकुलोत्पन्न होकर भी क्योंकि शनि उच्च का, तुला राशिका है, अतः राजयोग इस जातकका क्षीण पड़ रहा है। आशय यह है कि ऐसा जातक राजघरानेमें जन्म लेकर भी राजसत्ताका उपभोग नहीं कर सकता।

तृतीय गृह—बृहस्पति तीसरे स्थानका स्वामी होकर भी क्योंकि सप्तम स्थानमें उच्चक्षेत्री होकर बैठा है और अपने घरको पूर्ण दृष्टिसे देखता है। इसलिए इस जातकका मान-सम्मान अक्षुण्ण रहता है। यह व्यक्ति अपने क्षेत्रमें सूर्यके समान चमकता है। तीसरे स्थान का स्वामी गुरु उच्च राशिका होकर केन्द्रमें स्थित है। इसके अनुसार चार बहिन-भाइयों के योग बन रहे थे, किन्तु राहुका संयोग होनेसे एक बहिन तथा एक भाई ही होवे। बहिनका योग इसलिए बन रहा है कि चन्द्रमाकी तृतीय भाव पर पूर्ण दृष्टि है और ग्यारहवें स्थानका स्वामी मंगल लग्नमें बैठा है। ऐसी दशामें इस जातकके सहोदर या सहोदरा अग्रज ही हो सकते हैं, अनुज नहीं।

चतुर्थगृह—उच्चका सूर्य मेष राशिका है। साथ ही बुधका संयोग भी है तथा मंगल की पूर्ण दृष्टि है। ऐसा जातक स्वाभिमानी, महत्वाकांक्षी, उदारवृत्ति वाला, गम्भीर प्रकृति का तथा आत्मबली व्यक्ति होता है। सूर्य तथा बुधकी युतिके परिणामस्वरूप ऐसा जातक विचारवान्, संशोधक तथा सुभाषी विद्वान् होता है।

पंचमगृह—पंचम स्थानमें वृषराशिस्थ शुक्र के स्वगृही होनेके कारण इस ऐश्वर्यशाली, सुदर्शन, सात्विक वृत्तिक, सदाचारी जातककी बुद्धिमें वैराग्यभाव अबोधावस्था पार करते ही आ जाने चाहिए। इस जातकने स्वजनों के सांसारिक मोहपाशसे स्वयंको निस्पृह रखा

(शेष पृष्ठ ५६ पर)

यन्त्र विज्ञान पर एक दृष्टि (३)

[लेखक :—डा० रुद्रदेव त्रिपाठी--नई दिल्ली]

४. **मण्डल यन्त्र**—अनुष्ठान करते समय साधकोंके समूहको इस पद्धतिसे बिठाया जाता है कि उससे एक प्रकारके यन्त्रकी रचना हो जाए। इसे हम एक प्रकारकी व्यूह-रचना भी कह सकते हैं। जैसे युद्धमें हाथी, घोड़े और पैदल सैनिकोंको विभिन्न रूपोंमें व्यूह बनाकर खड़ा किया जाता है उसी प्रकार अनुष्ठानमें यह मण्डल बनाया जाता है। इसमें नौ व्यक्ति होते हैं। प्रधान साधक मध्यमें बैठकर इष्टमन्त्र का जप करता है तथा चार दिशाओं तथा चार विदिशाओंमें ऐसे आठ व्यक्ति अङ्गमन्त्र और उपाङ्ग मन्त्रोंका आम्नायानुसार जप करते हैं। इस पद्धतिसे की गई साधना शीघ्र फल प्रदान करती है।[1]

५. **पूजा यन्त्र**—जिस देवकी साधना की जाती है उसकी अधिदेव प्रत्यधिदेव, लोकपालादिके साथ स्थापना, आवाहनादि करनेके लिए यह यन्त्र बनाया जाता है। इस यन्त्रकी रचना कई प्रकारोंसे होती है—(क) देवताओं की स्थापनाके स्थानों पर अंक लिखे जाते हैं जिनके अनुसार पूजा करते समय उन-उन देवताओंकी नाम यन्त्रोंसे पूजा की जाती है। (ख) पूरे यन्त्रमें जिस स्थान पर जिस देवकी पूजा करनी हो उसका नाममन्त्र लिखा जाता है। दिशा-विदिशाओंमें वर्णमाला और दिक्पालों के नाम-मन्त्र रहते हैं। (ग) कुछ यन्त्र केवल मन्त्रोंको लिखकर ही बनाए जाते हैं। ऐसे यन्त्रोंमें कहीं पूरे मन्त्र, कहीं मन्त्रोंके केवल आरम्भाक्षरोंके प्रतीक, कहीं बीजमन्त्र आदि रहते हैं। (घ) कुछ यन्त्रोंमें इष्टदेव या इष्ट देवीके चित्र-रेखांकन दिए जाते हैं तो कोई इन यन्त्रोंको विविध रंगोंमें चित्र बनाकर भी अंकित करते हैं।

६. **छत्र-यन्त्र** पूर्वलिखित यन्त्रोंमेंसे किसी एक यन्त्रको विधिपूर्वक बैठनेके स्थान पर छत्र में अथवा छतमें चंदोवेके अन्दर जो यन्त्र लिखा जाता है वह 'छत्र-यन्त्र' कहलाता है। यही यन्त्र टोपी, पगड़ी या साफेमें भी रखा जाता है।

७. **दर्शन-यन्त्र**—इसी तरह कुछ यन्त्र **दर्शन-यन्त्र** भी होते हैं जिन्हें देखनेसे दर्शकका लाभ तो होता है, साथ ही जहां लगाया गया है उस स्थानका भी उत्तरोत्तर प्रभाव बढ़ता रहता है। भारतमें ऐसे अनेक स्थान हैं जहां सिद्ध यन्त्र बने हुए हैं और उनके प्रभावसे वे

---

१. 'आसन यन्त्रोंको पहले सवा लाखकी संख्यामें लिखकर सिद्ध किया जाता है और तदनन्तर उन्हें पुरश्चरण विधिसे पूर्णकर आसनमें रख लेते हैं। इससे प्रतिदिन की जाने वाली 'आसन-विधि' की आवश्यकता नहीं रहती।

इस प्रकार मण्डल-यन्त्रके रूपमें आराधनाका प्रकार अहमदाबादके निकट साबरमती गांवसे पूर्वकी ओर मोटेरा गांवके महादेव 'बलातिबला महाशक्तिपीठ' पर होती है। यह स्थान अतिरमणीय है। यहां अग्निकुण्डाकारमें 'श्रीयन्त्र' की स्थापना पूर्णकर कुण्डको केन्द्रित करके एक वृत्ताकार स्थण्डिल पर पद्धतिके अनुसार चौबीस आसन हैं। इनमें प्रथम गोलार्धमें आठ आसन आरसके पत्थरों पर विधिपूर्वक श्रीयन्त्र खुदवाकर प्रतिष्ठित किये गये हैं। इन यन्त्रमय पीठों पर दीक्षित साधक बैठकर आहुति प्रदान करते हैं।

स्थान नित्य प्रभावशाली बने हुए हैं। जगन्नाथ-पुरीमें 'भैरवी-यन्त्र' और श्रीनाथद्वारामें 'सुदर्शन-यन्त्र' इसके उदाहरण हैं।

इस प्रकार उपर्युक्त कर्मोंकी दृष्टिसे बनने वाले यन्त्रोंमें शास्त्रीय दृष्टिसे कुछ आलेख-भेद भी होते हैं—जिन्हें यहां विस्तारभयसे नहीं लिख रहे हैं।

वस्तुत: यन्त्रशास्त्र एक महत्त्वपूर्ण शास्त्र है। अति प्राचीन कालसे हमारे पूर्वाचार्योंने इस शास्त्रके विकासमें पूरा योगदान किया है। वर्षोंकी साधनाके पश्चात् लेखनके क्रम निश्चित किए हैं और उनके फलोंकी प्राप्तिके उपाय ढूंढ निकाले हैं।

इस विषय पर एक व्यवस्थित पद्धतिसे अनुसन्धान किया जाए तो ऐसे लाखों यन्त्रोंके स्वरूप हमें प्राप्त होंगे जिनमें तर-तमताके साथ अनेकरूपता भी परिलक्षित हो सकेगी।

वैसे तो विश्वके व्यवहारकी आधार-शिला कहे जाने वाले अक्षर तथा अंकोंकी महिमा प्रसिद्ध ही है। इन दोनोंका अर्थगर्भित संयोजन एक विशिष्ट प्रकारकी सामूहिक शक्तिका प्रकटीकरण करते हैं। जिस प्रकार मन्त्रमें मन्त्रबीज सहित अथवा रहित शब्दोंका—वर्णों का प्राधान्य है उसी प्रकार यन्त्रोंमें विविध-संख्या वाले अंकों और अक्षरों सहित बनी आकृतियोंका प्राधान्य है।

यन्त्रोंकी अनेक जातियां और प्रकार हैं। यन्त्र बनानेकी गणित-सम्बन्धी प्रक्रिया ऐसी है कि उससे लाखों यन्त्र बनाए जा सकते हैं। इसी प्रकार प्रयोगकी दृष्टिसे इनके लाखों रूप बनते हैं और प्रयोग-पद्धतियोंमें भी इसी दृष्टि से अनेक रूपता आ जाती हैं। कभी यन्त्रको लांघनेसे उसका फल होता है तो कभी उसके नीचेसे निकलने पर। कभी यन्त्रको धोकर पीनेसे फल होता है तो कभी यन्त्रको गाड़ देने से। स्तम्भन प्रयोगमें यन्त्रको एक शिलाखण्ड पर लिखकर उस पर दूसरी शिलाको रख दिया जाता है। ऐसे प्रयोगोंका कोई पार ही नहीं है। इसमें गुरु-परम्पराका ही सबसे अधिक महत्त्व है। जैसा प्रयोग करते हुए यन्त्रज्ञने फल प्राप्त किया हो उसी पद्धतिसे उत्तरोत्तर प्रयोग करते रहनेसे सिद्धि मिलती रहती है।

ऐसे अनेक दृष्टान्त-किंवदन्तियां परम्परासे सुननेको मिलती हैं कि अमुक यन्त्रका अमुक पद्धतिसे प्रयोग करके अमुक कार्य सिद्ध किया गया।

इन यन्त्रोंके दस अङ्ग होते हैं—

बीजं प्राणं च शक्ति च दृष्टि वश्यादिकं तथा।
मन्त्रं यन्त्राख्यगायत्री प्राणस्थापनमेव च॥

अर्थात्—१ बीज, २. प्राण, ३. शक्ति, ४. दृष्टि, ५. वश्यादि ६. मन्त्र, ७. यन्त्र-गायत्री, ८. प्राण-स्थापन ९. भूतबीज तथा १०. दिक्पाल बीज ये दस यन्त्रके अङ्ग हैं। इनका भी विचार यथा समय किया जाना चाहिये।

ऐतिहासिक कहानी

प्राणप्रतिष्ठा (२)

[लेखक :—डा० वेदप्रकाश शास्त्री]

(गताङ्कसे आगे)

कुछ समय पश्चात् एक दिन अवसर पाकर शिवाजीने एकान्तमें श्री तुकारामजी पोद्दारसे कहा—"पोद्दारजी ! मेरी हार्दिक इच्छा है कि कुलदेवी भवानी (जिनकी कृपासे मुझे प्रतिपद विजय एवं यह वैभव प्राप्त हुआ है) की सवामनकी स्वण प्रतिमा बनवाकर स्फटिक मन्दिरमें प्रतिष्ठित करूँ।

पोद्दारजीने शिवाजीके कथनका समर्थन करते हुए कहा—"यह तो बहुत ही उत्तम बात है महाराज ! इससे अच्छी बात और क्या होगी ?"

'यदि ऐसा ही अभिमत आपका है तो फिर विलम्ब क्यों ? बुलाइए उत्तमोत्तम शिल्पियोंको जो शास्त्र और कला दोनोंकी दृष्टियोंसे उपयुक्त प्रतिमा बना सकें।' शिवाजी ने कहा।

आज्ञानुसार पोद्दारजीने दो-चार दिनके भीतर श्रेष्ठ मूर्तिकारोंको शिवाजीकी सेवामें प्रस्तुत कर दिया। शिवाजीने सबसे अनेक प्रकारके प्रश्न पूछे और किसीसे भी सन्तुष्ट न होनेका भाव प्रगटाते हुए सबको विदा किया। सबके चले जानेके पश्चात् शिवाजीने तुकाराम जीसे कहा—'पोद्दारजी ! मेरी हार्दिक इच्छा यही है कि इस मूर्तिका निर्माण आप ही करें। भले ही कितना ही समय क्यों न लगे, यह कार्य आपके हाथों ही सम्पन्न हो, यही मेरी कामना है। सवा मन स्वर्ण, आवश्यक रत्न तथा अन्य जिस वस्तुकी आवश्यकता हो आप भण्डारघरसे प्राप्त कर लें, अथवा कहें मैं अभी आपके सामने प्रस्तुत करता हूँ।' यह कहते-कहते शिवाजीने ताली बजाई। सेवक अविलम्ब नतसिरकर सेवामें प्रस्तुत हुआ। शिवाजीने उसे आज्ञा दी कि शीघ्र ही जितने प्रकारका स्वर्ण कोषमें उपलब्ध हो उसके नमूने शीघ्र उनके सामने प्रस्तुत किये जाएं।

आज्ञानुसार सेवकने विठुर सोना, पासा सोना, गिन्नी सोना, कुन्दन आदि जितने भी प्रकारका सोना कोषमें था शिवाजीके सामने ला प्रस्तुत किया।

पोद्दारजीने कुन्दन स्वर्ण पसन्द किया। शिवाजीने उन्हें वही स्वर्ण सवामन मात्रामें देनेकी आज्ञा दी और साथ ही वे जितने रत्न जिस कोटिके माँगें वे तथा अन्य इच्छित वस्तुएँ देनेकी आज्ञा दी।

पोद्दारजी स्वर्ण, रत्न तथा अन्य अपेक्षित सामग्री लेकर आवास पर आए और मूर्ति-निर्माणमें जुट गए। कई वर्षकी अनवरत साधनाके पश्चात् मूर्ति तैयार हुई। कलाकी दृष्टिसे तो वह अनुपम थी ही, शास्त्रीय आज्ञानुसार निर्मित होनेके कारण चमत्कार युक्त

भी थी।

यथासमय पोद्दारजीने उसके पूर्ण होने की सूचना शिवाजीको दी। शिवाजी उसे देखने पधारे। मूर्तिको देखते ही हर्षातिरेकसे विह्वल हो गए। उन्होंने साधु! साधु! कहकर न केवल पोद्दारजीकी कलाका अभिनन्दन किया अपितु भाव विकल होकर उन्हें हृदयसे लगा लिया और अपने गलेमें धारण किया हुआ बहुमूल्य हीरक हार उनके गलेमें पहनाते हुए कहा—'आज आपकी नहीं मेरी बात मानी जाएगी पोद्दारजी! आपको मेरा उपहार स्वीकार करना ही होगा।'

पोद्दारजीने भी उनके आग्रहको स्वीकार करते हुए कहा—'जैसी महाराजकी इच्छा।'

इसके पश्चात् पोद्दारजीने महाराजसे अनुरोध किया कि 'इसके निर्माणमें पहले ही पर्याप्त विलम्ब हो चुका है अतः अब और अधिक विलम्ब न कर इसकी प्राणप्रतिष्ठा कराकर नव-निर्मित स्फटिक मन्दिरमें प्रतिष्ठित करनेका प्रयत्न करें।'

शिवाजीने पूछा—'प्राणप्रतिष्ठा किस प्रकार होगी?'

पोद्दारजीने बताया—'महाराज! शास्त्रज्ञ विद्वानोंको बुलाइए, वे शुभ मुहूर्त देखकर शास्त्रीय विधिसे वेदमन्त्रों द्वारा इसकी प्राणप्रतिष्ठा कर, इसे समारोह पूर्वक मन्दिरमें स्थापित कर देंगे और उसके पश्चात् ही इसकी पूजार्चना प्रतिदिन हुआ करेगी। प्राणप्रतिष्ठा होने पर ही मूर्ति चमत्कार दिखाने भक्तकी इच्छा पूरी करनेमें सफल होती है। आप भी अब इस कार्यमें विलम्ब न करें।'

शिवाजीने गम्भीरता पूर्वक पोद्दारजीके कथनको सुना तो अवश्य परन्तु उत्तर दिया अप्रत्याशित ही। उन्होंने कहा—'पोद्दारजी! मेरी इच्छा तो यह है कि इस जड़मूर्तिको अपने कौशलसे सजीवता प्रदान करने वाले आप ही इसकी प्राणप्रतिष्ठा भी करें।'

'महाराज! यह अधिकार ब्राह्मणोंका है, क्षत्रियका नहीं। कृपया शास्त्रीय मर्यादाके अनुसार ही कार्य कराइए। उसीमें दोनोंका भला है, अन्यथा विद्रोह होते देर न लगेगी।'

'पोद्दारजी! ब्राह्मणोंकी श्रेष्ठतासे तो मुझे इन्कार नहीं और न ही उनके अधिकार में हस्तक्षेप करनेका मेरा विचार है, परन्तु यह कार्य मैं आपके ही हाथों सम्पन्न कराना चाहता हूँ।'

पोद्दारजीने अनेक प्रकार समझा बुझाकर उन्हें हठसे विरत करना चाहा, परन्तु राजहठ अन्ततः राजहठ ही होता है। शिवाजीने उन्हें समझाया कि—'जब विश्वामित्र क्षत्रियसे ब्राह्मण हो सकते हैं, तब क्या सदाचार और धर्म पालन द्वारा ब्राह्मण धर्म का पालन करने वाले आप ब्राह्मण कर्ममात्रका सम्पादन क्या केवल इसलिए नहीं करा सकते कि आप जन्मना क्षत्रिय हैं? नहीं, मैं जानता हूं कि जो सिद्धि एक नैष्ठिक ब्राह्मण कठिन तपस्या के पश्चात् प्राप्त कर पाता है उसे आपने संसारमें रहते हुए ही प्राप्त कर लिया है। इस स्थितिमें मैं न तो यह माननेको तैयार हूँ कि इस स्वर्णिम प्रतिमाकी प्रतिष्ठा केवल ब्राह्मणों से कराई जाए और न यह ही कि ब्राह्मणोंके विद्रोहके भयसे मैं एक अधिक योग्य व्यक्तिकी

योग्यताका लाभ उठानेसे स्वयंको वंचित कर दूँ। आप संशय छोड़िए और इस कार्यको सम्पन्न करनेमें जुट जाइए।'

शिवाजीका हठ देखकर पोद्दारजीने कहा– 'जैसी महाराजकी आज्ञा।'

शिवाजीका पोद्दारजी पर इतना विश्वास देखकर सारे दरबारी तथा विशेषकर ब्राह्मण ईर्ष्यासे जल उठे और उन्हें नीचा दिखानेका षड्यन्त्र रचने लगे।

शिवाजीकी आज्ञानुसार पोद्दारजीने भगवतीकी प्राणप्रतिष्ठा कराई। प्राणप्रतिष्ठाके अवसर पर जब षोडषोपचार पूजन आरम्भ हुआ—ब्राह्मणोंने आवाजें कसनी शुरु कीं। अब तो मूर्तिमें प्राण आ चुके हैं। भारतके ब्राह्मणाधिक योग्य व्यक्तिने मूर्तिकी प्राण-प्रतिष्ठा कराई है अतः कोई चमत्कार देखने का ववसर हमें भी मिलना चाहिए। उचित तो यही होगा कि महाराज शिबाजी पोद्दारजी से स्वयं कहें कि वे इस प्राणवान् मूर्तिसे निवेदन करें कि जो जो वस्तु उसे समर्पित की जाए उसे यह प्रतिमा अपने हाथमें लेकर स्वयं धारण करे। यदि ऐसा हो सका तो हम मान लेगे कि वास्तवमें ही प्राण-प्रतिष्ठा हुई है और महाराजने प्रतिष्ठा विषयक जो निर्णय लिया था वह सचमुच सही था।'

शिवाजी तो यह सुनकर मौन रहे। परन्तु, पोद्दारजीने सहज भावसे उनके कथनको स्वीकार कर मौन भावसे अपना कार्य चालू रखा। स्नान, पंचामृत स्नान, शुद्धोदक स्नान के पश्चात् जब वस्त्र समर्पित किये गए पोद्दार जीसे भगवतीने उसे स्वयं धारण किया। भगवतीने सहज भावसे भक्तके कथनको स्वीकार कर वस्त्र धारण किये और तदनन्तर गन्ध, अक्षत, पुष्पहार, आभरण आदि षोडषोपचारके द्रव्योंको भक्तके हाथसे लेकर स्वयं धारण कर उपस्थित ब्राह्मण समुदायको चमत्कृत कर दिया। चारों ओर भक्त और भगवती का जय जयकार गूँजने लगा।

शिवाजीने स्वयं साधुवाद देते हुए कहा कि 'अब तक प्राणप्रतिष्ठा तो बहुतसी देखीं-सुनीं और कीं परन्तु वास्तविक प्राणप्रतिष्ठा देखनेका सौभाग्य आज ही मिला।'

प्रतिष्ठाकार्यके अनन्तर हवन, ब्राह्मण भोजन आदि कार्य यथाविधि सम्पन्न किये गए। सब कार्योंसे निवृत्त होकर जब शिवाजीने हवनके लिए तैयार किया गया गड्ढा बन्द कराना चाहा तो पोद्दारजीने उन्हें ऐसा करनेसे रोक दिया और कहा कि 'इसे ऐसे ही रहने दो क्योंकि यह एक पुनीतकार्यमें काम आएगा।'

शिवाजीने उसे यथावत् रहने दिया। कालान्तरमें शिवाजीसे विरक्त होकर पोद्दारजी भवानीकी सेवामें तुलजापुर रहने लगे। जब उनका अन्तिम समय निकट आया वे शिवाजी के पास पहुँचे और बोले—'महाराज ! अब उस गड्ढे के उपयोगका समय आ गया है। माँ भवानीकी आज्ञा है कि मैं जीवित समाधि लूं। कृपया उस खड्डेको भली भांति लिपवा दीजिए।' शिवाजीने उनकी आज्ञाकी पूर्ति की। शुभ मुहूर्तमें पोद्दारजीने भगवती मन्दिरके पार्श्वमें हवन पूत कुण्ड स्थलीय गड्ढे में जीवित

समाधि ली।

पोद्दारजीके संसारत्यागसे शिवाजीको काफी धक्का लगा और वे रुग्ण रहने लगे।

एक बार भगवती मन्दिरमें जब वे पूजारत थे, भगवतीने उन्हें प्रत्यक्ष दर्शन देकर कहा कि अब मेरा वह भक्त जो मुझे रिझाना जानता था नहीं रहा, अतः मैं भी अब यहांसे जाना चाहती हूं।' शिवाजीने उनसे उनके जीवनकाल पर्यन्त वहीं बनी रहनेका अनुरोध किया। भगवतीने उसे स्वीकार कर लिया।

शिवाजीका निधन होते ही भगवतीकी वह स्वर्ण प्रतिमा भू-गर्भमें विलीन हो गई और उसके २-४ दिन पश्चात् ही भूकम्पसे वह मन्दिर भी धराशायी हो गया।

महाराष्ट्रमें इस प्राणवान् प्राणप्रतिष्ठाके करने-कराने वाले पोद्दारजी तथा शिवाजी महाराज आज भी सश्रद्ध स्मरण किये जाते हैं।

भारत दर्शन

श्रीशैलम् मन्दिर

शास्त्रोंमें द्वादश ज्योतिर्लिङ्गोंके प्रसंगमें इस मन्दिरका उल्लेख करते हुए कहा गया है—"श्रीशैलेमल्लिकार्जुनः।" आन्ध्रके कर्नूल मण्डलमें विद्यमान, यह मन्दिर अतीव मनमोहक प्राकृतिक वातावरणके मध्य कृष्णा नदी के तट पर चिरन्तनकालसे श्रद्धालुओंकी आकर्षण भूमिके रूपमें उपस्थित है। यह समुद्रीय तलसे ४५७ मीटर ऊपर स्थित है। हैदराबादसे २३२ किलोमीटर एवं कर्नूलसे १७६ किलोमीटर दूर स्थित इस ज्योतिर्लिङ्ग के दर्शनार्थ रेल अथवा बस द्वारा पहुंचा जा सकता है। आन्ध्र प्रदेशीय तीर्थ स्थलोंमें इसका प्रमुख स्थान है। यहां विराजमान मल्लिकार्जुन स्वामीका द्वादश ज्योतिर्लिङ्गोंमें दूसरा स्थान है। यह १८ शक्ति पीठोंमें भी प्रमुख स्थान माना जाता है। कहा जाता है कि यह भ्रमराम्बा देवीका पीठ है। एक विख्यात कविके अनुसार मैनाक, मन्दर, मेरु, श्रीशैलम् तथा गन्धमादन पर्वतोंका स्मरण करने वाला व्यक्ति तत्काल पाप-मुक्त हो जाता है। शास्त्रोंमें कहा गया है कि जो इस लिंगराज मल्लिकार्जुनके मन्दिरके शिखरका दर्शन कर लेता है, उसे फिर से संसारमें जन्म नहीं लेना पड़ता—"**श्रीशैलं शिखरं दृष्ट्वा पुनर्जन्म न विद्यते।**" इस कथनमें आस्था रखनेके कारण यात्री बड़ी उतावलीके साथ इस दिव्य मन्दिरके शिखरेश्वरके दर्शन के लिए तेजीसे बढ़ते हुए प्रायः दृग्गोचर होते रहते हैं।

विश्वास किया जाता है कि इस पर्वत शिखर पर तीन करोड़ पचास लाख तीर्थों, असंख्य शिवलिंगों एवं चौरासी हजार ऋषियों की विद्यमानता रहती है और कोई भी साधक तपस्या द्वारा दिव्य दृष्टि पाकर इस बातको प्रत्यक्ष अनुभव कर सकता है। यहां यह भी विश्वास प्रचलित है कि तेतीस करोड़ देवता यहां सतत भगवान् शंकरके दर्शनका सौभाग्य

पाने एवं उन्हें अपनी सेवा द्वारा रिझानेके लिए सदैव यहीं निवास करते रहते हैं।

इस पर्वत शिखर पर अनेक दिव्य औषधियां, लताएं और वृक्ष उपलब्ध होते हैं और इन सबकी प्रचुरतासे यहां इतना सुन्दर प्राकृतिक दृश्य प्रस्तुत होता है कि यात्री उसके आकर्षणमें बंधे स्वयं वहां खिंचे चले आते हैं। यह स्थिति किसी विशेष अवसर पर नहीं अपितु वर्ष भर समान रूपसे बनी रहती है। आदि शंकराचार्यने इस भव्य देवस्थलकी यात्रा की थी और भक्ति विभोर होकर यहां-'शिवानन्द लहरी' भ्रमराम्बा अष्टक, एवं द्वादश लिंग स्तोत्रम्—नामक अपनी तीन सुप्रसिद्ध रचनाओंका प्रणयन किया था।

फाहियान तथा ह्वेन-सांग नामके चीनी यात्रियोंने अपने यात्रावृत्तोंमें अतीव आदर पूर्वक इस स्थानका उल्लेख किया है।

प्रसिद्ध रसज्ञ आचार्य नागार्जुनकी साधना स्थली यही है। यहीं रहकर उन्होंने ईसाकी पहली शतीमें भगवान् शंकरकी आराधना कर अमृतोपम औषधियाँ बनानेमें, रससिद्धि प्राप्त करनेमें सफलता प्राप्त की थी और उदघोषित किया—

"रससिद्धे करिष्यामि निर्दारिद्रचमिदं जगत्।"

श्रीशैलम्‌की कृष्णा नदीको 'पाताल गंगा' कहा जाता है। शिवरात्रि एवं 'युगादि' ये दो पर्व यहां विशेष हर्षोल्लासके साथ मनाये जाते हैं। इस समय यहां एक हाइड्रो-एलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट निर्माणाधीन है, जिसके बन जाने पर आन्ध्र प्रदेशको पर्याप्त लाभ पहुंचेगा।

सुना जा रहा है कि एक और योजना भी विचाराधीन है जिसके अनुसार गंगाका जल यहां लाकर कृष्णामें मिलाया जायेगा और इससे जहां बिहार आदि प्रदेशोंको बाढ़ का संकट टलेगा वहां सुदूर दक्षिणमें रहने वाले उन भारतीयोंको घर बैठे गंगाके उस पावन स्नानका लाभ भी अनायास प्राप्त हो सकेगा जिसकी साध प्रत्येक भारतीयके मनमें सदैव विद्यमान रहती है।

श्रीशैलम्‌की यात्राका कोई विशेष समय निर्धारित नहीं है। वर्ष भरमें जब इच्छा हो यहां पहुंचा जा सकता है। क्योंकि यहांका वातावरण समशीतोष्ण है, अतः केवल सूती वस्त्रोंसे ही यहां काम चल जाता है। ऊनी वस्त्रों का भार ढोनेकी स्थिति यहां कभी नहीं आती।

श्रीशैलम्‌का देवालय आन्ध्रके धर्मस्व विभागके आधीन है और पूरी व्यवस्था सुचारु रूपसे चलानेके लिए वही उत्तरदायी है।

यहां भी तिरुपतिकी भाँति दर्शन, अभिषेक आदिके लिए टिकट लेना अनिवार्य है। वस्तुतः दक्षिणके देवालयोंकी व्यवस्थामें टिकट प्रणालीका महत्वपूर्ण योगदान है और इसीके सहयोगसे वे आज भी अपनी, दिव्यता, भव्यता, उत्कृष्टता और परम्परा बनाये हुए हैं, अन्यथा उत्तरके अनेक मन्दिरोंकी भांति इनमेंसे अनेक का अस्तित्व अब तक विलुप्त हो गया होता।

श्रीशैलम्‌का ज्योतिर्लिंग और नदी दोनों ही दर्शनीय हैं। स्थापत्यकी छाप मन्दिर और नदी पर स्पष्ट परिलक्षित की जा सकती है। शृंगार किए जाने पर ज्योतिर्लिङ्ग वस्तुतः ज्योतिर्लिङ्ग ही प्रतिभासित होने लगता है और एक अनिर्वचनीय सुख दर्शकोंको भाव विह्वल बना देता है।

—डॉ० वेद प्रकाश शास्त्री
२१-१-१६८, गाँधी बाजार,
हैदराबाद—२ (आं०प्र०)

द्वादश भावस्थ भौम फल

[श्री मदन मोहन जैन "पवि" ज्योतिष मनीषी]

मंगल क्रूर ग्रह है । शूरत्वका सूचक है। रक्तपित्त दोषसे सम्बन्धित है। चर ग्रह है। सूर्य चन्द्रकी अपेक्षा स्थिर है। यह पराक्रम व सैनिक नौकरीसे सम्बन्धित है।

(१) लग्नमें मंगल—मंगल लग्नमें हो तो मानव क्रोधी, तेजस्वभावी सैनिक अधिकारी, पित्तवृद्धि, श्वसुरालसे धन प्राप्तिमें सहायक, समर्थ, जल एवं विदेश यात्रा भी करवाता है। धनाढच, एवं बवासीर रोग युक्त होता है । क्रूर साहसी प्रवासी, ताम्रवर्ण, चपल, रोगी, शूरवीर होता है। दीर्घायु क्षेत्रादि युक्त २०-२२ वें वर्ष में भाग्योदय होता है । दो पत्नी युक्त वा व्यभिचारी होता है।

(२) दूसरे मंगल—मधुर भाषी, विकार युक्त, मान वाला, अल्पाध्यात्मिक, व्ययाधिक, पत्नी तेज स्वभावी, तीर्थयात्री, हरिस्मरण करते हुये यंत्र वा अग्नि आघातसे मरण होता है। ३६-३७ वेमें भाग्योदय होता है।

(३) तीसरे मंगल—२० व ३५-३६ में भाग्योदय, वैरिक्षयकर्त्ता, अर्थसम्बन्ध, नौकर-चाकर युक्त, आध्यात्मिक एवं क्रोधी पत्नी वाला होता है। मित्र सहयोग अल्प, जमीनमें विघ्न, गान प्रिय, जन सेवी होता है।

(४) चौथे मंगल—रक्तपित्त कोपाधिक्य, राज्यपक्ष बली एवं संघर्ष, पत्नी रक्त विकार युक्त, श्वसुर वायु पीड़ासे पीड़ित, जमीन संघर्ष, घोड़ा रखना हानिप्रद होता है । कृश देह, सुन्दर वर्ण, मूंगा पहननेसे लाभ होता है।

(५) पांचवें मंगल शूरवीर, सेनाधिकारी, राज्यसेवी, आध्यात्मिक श्वसुर, तीर्थाटन कर्त्ता, मायावी, २७-२८ में पूर्ण भाग्योदय होता है। पत्नी वायु बवासीर युक्त, क्षमाशील, सन्मित्र युक्त, सन्मति, वाहन-भवनपति, मित्र वर्गोंके सहयोगसे भूस्वामित्व होता है ।

(६) छठे मंगल—चेहरा चेचकसे विरूप, शिक्षिता पत्नीयुक्त, ईश्वरोपासक श्वसुर, तेज स्वभावी उच्च पदासीन, एवं २४-२५ वर्षकी उम्रमें भाग्योदय होता है। महापराक्रमशाली, ज्येष्ठ भ्राताका अभाव, पत्नी तेजस्वभावी, हनुमान या दुर्गा उपासनासे सर्वसिद्धि मिलेगी।

(७) सातवें मंगल—धनाढच, परिवार पोषक, अध्यात्म प्रवृत्ति वाला, प्रवासी, पत्नी प्रेमाधिक्य, तीर्थ स्थलमें रक्तदोष शस्त्राघात वा अग्नि आघातसे मृत्युको प्राप्त होता है। ३०-३२ में पूर्ण भाग्योदय होता है। वृहद्-परिवार युक्त, ब्रह्मभोजमें श्रद्धावान्, विद्वान् रसिक होता है।

(८) आठवें मंगल—दो पत्नी या परनारी भोगका योग बनता है। ताम्र वर्ण, तेजस्वी, इर्ष्यालु, सुशीला पत्नीयुक्त, वैरिहंता, क्रान्तिकारी लोकोपकारी दंभी होता है। २२वें या २४वेंमें भाग्योदय पाता है।

(९) नौवें मंगल—क्रोधी एवं आध्यात्मिक होता है। २१-२२वें वर्षमें भाग्योदयी

होता है जलभय होता है। बिदेशमें मृत्यु होती है। पत्नी सुन्दर व चेचक चिह्न युक्ता होती है। संतान उत्तम होती है।

(१०) दसवें मंगल—भव्य भवन, सेनापति, या क्रान्तिकारी दलनायक, दंभी आदमी होता है। वाहनपति, भवनपति होनेका प्रबल योग बनता है। सन्मित्र, अर्थशास्त्री, नौकर-चाकर युक्त होता है। ३० व ३२ में भाग्योद होता है।

(११) ग्यारहवें मंगल—राज्याधिकारी, राज्यक्रान्तिसे लाभ उठाने वाला, व्यापारमें समृद्धि पाने वाला, २३ या २५वें वर्षमें भाग्योदय होता है। कमजोर नेत्रवाला, उदर रोगी, उग्रस्वभावी पत्नी युक्त, महापराक्रमी, निडर, संयत, सुशिष्ट भाषी, गंभीर, मक्कार, कब्ज-रोगी होता है।

(१२) बारहवें मंगल—भाग्यशाली, आध्यात्मिक, २६ से २८ तक भाग्योदय होता है। तीर्थाटनी, विशाल परिवारपोषक होता है। ओहदा प्राप्त राज्यकर्मचारी, विलक्षण दानी श्वसुर वाला, पत्नी मध्यमवर्ण होती है।

मंगलका लग्नमें अन्य ग्रहोंसे सम्बन्ध:—

मं. सू :—विज्ञ संतान, नेत्र विकारी, स्त्री तेज, लम्बे हाथ पैर युक्त होता है। मं. चं. भ्राता भगिनीमें श्रद्धालु, पराक्रमी, सौम्य पत्नी वाला, भवन मित्रोंसे युक्त होता है। मं. बु. पराक्रमी, रिपुहन्ता, परिवार प्रेमी, श्रीसम्पन्न होता है। मं. वृ. प्रिय वक्ता, भाग्यशाली, सुन्दर स्त्री युक्त, अर्थ सम्पन्न, परनारी भोगी होता है। मं. शु. सुन्दर पत्नी युक्त, धन सम्पन्न स्त्री-पुत्र-युक्त, भाग्यवृद्धि पाता है। मं. शनि-उत्तम राज्य योग वाला, पदाधिकारियोंसे मेल रखने वाला, नौकर, दास दासी, वाहन युक्त, तेज स्वभाव लाला होता है।

शकुन ज्ञानका वर्णन

[लेखक :—श्री प० कालीचरण शर्मा शास्त्री, सनावद म०प्र०]

सर्वप्रथम अथर्ववेद संहिताके प्रथमकाण्ड पंचम सूक्तके प्रथम मंत्रके भावमें सायणाचार्य लिखते हैं—

दुःशकुन दर्शने काकमैथुनादि विरुद्ध दर्शने अद्‍भुतादि दर्शने च एतत् सूक्तं जपेत् ।

दुःशकुनोंके दीखने पर, काक मैथुनादि विरुद्ध दर्शन होनेपर और अद्‍भुतादि दर्शन होने पर भी इस सूक्तको जपे । इस प्रकार और भी कई मंत्रोंके विधानमें शकुनोंका वर्णन है ।

मुहूर्त्त-चिन्तामणि पीयूषधारा व प्रमिताक्षरा टीकामें विवाह-प्रकरण एवं वस्तुखनन वास्तु निःक्षेप प्रकरणमें शकुनोंका उल्लेख है। विवाहवृन्दावनके विवाह-प्रकरणमें शकुन चर्चा है । वास्तुराज-बल्लभमें पर्याप्त रूपसे शकुन वर्णन मिलता है। एवं 'प्रासादमण्डन' में भी शकुन ज्ञानका उल्लेख है। 'प्रश्न मार्ग' में शकुन ज्ञानका बहुत ही सूक्ष्म रूपसे शकुनवर्णन है । महाभारत—वाल्मीकीय रामायणमें शकुन संकेत उपलब्ध है ।

अद्‍भुत सागरमें अनेक आवर्त सर्वशकुनाद्‍भुतसे आरंभ होकर १५ आवर्तोंमें शकुन वर्णन है ।

वराहमिहिराचार्यकृत 'वाराही संहिता'में ११ अध्यायोंमें शकुन वर्णन है । वराहमिहिराचार्य स्वयं लिखते हैं ये शकुन केवल अर्थयात्रा के उपयोगी शकुन हैं, यद्यपि सांकेतिक शकुन दूसरे भी हैं। इस ग्रंथ पर भटोत्पलकी टीका विशेष अर्थको परिस्फुट करती है । शकुन ज्ञानके जिज्ञासु जनोंके ज्ञानवर्धनमें बहुत उपयोगी है ।

'शकुन-वसन्तराज'में १९ प्रकरण हैं। इस ग्रंथसे द्विपद चतुष्पद षट्पद अष्टपद बहुपद अपद शकुनोंका पर्याप्त वर्णन है । जिस प्रकार जन्मकुण्डलीके १२ भावोंसे अनेक बातोंका ज्ञान होता है उसी प्रकार इस ग्रन्थसे निःशेष बातोंके ज्ञानका वर्णन है । इस ग्रन्थकी प्रस्तावनामें छपा है—यह शास्त्र देवऋषि प्रणीत हैं। भगवान् श्रीशङ्कर जब अन्धकासुरके वधके लिए उद्यत हुए तब शकुन शिवजीने देखे । तारकासुरका वध करनेके लिए उद्यत हुए तब स्वामी कार्तिकेयको शिवजीने शकुनोंका उपदेश दिया। तत्पश्चात् जम्भासुरके वधार्थ इन्द्र तय्यार हुआ, तब इन्द्रको स्वामी कार्तिकेयने शकुन बतलाये । तत्पश्चात् इन्द्रने कश्यपजीको शकुन ज्ञान दिया । कश्यपजीने अमृत हरण करनेको चले जब गरुड़जीको शकुन बतलाये, इस प्रकार शकुन ज्ञान प्राचीन ज्ञान है। शकुन यह भी बतलाता है कि यह कार्य निरुपाय सिद्ध होगा किम्वा सोपाय सिद्ध होगा ।

सोपायमितनिरुपायमेतत्प्रयोजनं भक्ति ममेति बुद्धया ॥ असंशयं शाकुनशास्त्र विज्ञो जहृति चोपक्रमते मनुष्यः ॥ लोकोमुना शाकुन संज्ञकेन ज्ञानेन विज्ञात समस्तकार्यः । नापायकेपतति प्रसवञ्च शास्त्रं हि दिव्या दृगतीन्द्रियेषु ॥

शकुन शास्त्रका प्रयोजन ही यह है यह कार्य कष्टरहित होगा या कष्ट सहित होगा, इसको समझकर संदेह रहित होकर कष्टयुक्त कार्यका त्याग करें, कष्ट रहित कार्यके लिए उद्योग करे। शकुनशास्त्रज्ञाता जन शकुन शास्त्रके ज्ञानसे समस्त घटनाचक्रको समझकर कष्टयुक्त कार्यरूप कूपमें नहीं पड़ते हैं।

जो कार्य ज्ञानेन्द्रियोंसे नहीं देखनेमें आता व सुननेमें नहीं आता ऐसे कार्योंकी सिद्धि असिद्धि जाननेमें शास्त्र ही दिव्य दृष्टि बताता है जैसे दिव्य दृष्टिसे देवता सम्पूर्ण विश्वका भविष्य जानते हैं, उसी प्रकार मनुष्य जान सकता है।

शकुन शास्त्र घोषणा करता है—

नक्षत्रवारैस्तिथिभिः सुलग्नैः कार्यं न किञ्चिच्छकुनेविरुद्धे। दोषोऽपि तेषां शकुनेऽनुकूले सदैव सिद्ध्यन्ति समीहितानि।

नक्षत्रवार तिथि नन्दादिके शुभ होनेपर सुलभ शुभ स्वामी युक्त दृष्ट होनेपर भी शकुन विरुद्ध होनेपर कुछ कोई भी कार्य न करे। और नक्षत्र वार तिथि और लग्नके भी अशुभ होनेपर यदि शकुन अनुकूल हो तो वांछित कार्य सिद्ध होते हैं।

तेन दुःखदमतिप्रयोजनं सत्वरं परिहरेद्ध्रुवागतम् बुद्धिमान्छकुनकोविदोजनः समिपत्य सुखदं समाश्रयेत्।

इसलिए यदि दुःशकुन हो जावें तो दुःखद कार्यको त्याज्य करें और बुद्धिमान् सुखदकार्य को सम्यक् समझकर सुखद कार्यका आश्रय लें।

वैराग्यकष्टाश्रयेण तादृक् त्रैकालबोधाय भवेन्नयोगयदृच्छया भोगभुजां सुखेन यादृङ्गराणी शकुनाभियोग अभ्यूह्य सर्वशकुनं विपश्चित्तदन्वयाच्चे व्यतिरेकतश्च अतीन्द्रियो पारिनिश्चिनोति स स्वर्ण पुष्पां विचनोति यः पृथिवीम्।

वैराग्य धारण कर बारबार कष्टपाय करके भी भूत भविष्य वर्तमान कालका पूर्ण ज्ञान नहीं होता है। यदृच्छया भोग भोगयोग करते हुए मनुष्योंको शकुन शास्त्रसे त्रैकालिक ज्ञान होता है।

शकुनशास्त्रके भेदानुभेद शान्त-दीप्त-दीप्तशान्त शामदीप्तादि भेदोंको गुरुमुखसे समझ कर दिव्यचक्षु होकर सभी तरहके प्रश्नोंके उत्तर देनेमे समर्थ होकर शकुनप्रभावसे स्वर्ण-पुष्पा भूमिको ढूंढ लेता है।

नरपतिजयचर्या ग्रन्थमें लिखा है—

"स्वरज्ञः शकुनज्ञश्च दैवज्ञो मंत्रपारगः।
केरलीवित्तथा राज्ञा कीर्तिते प्रश्न पञ्चकम्॥

स्वरज्ञाता, शकुनशास्त्रज्ञ, दैवज्ञ, मंत्रशास्त्र पारंगत केरलीय ज्योतिषशास्त्रवेत्ता इन पांचों की रत्न संज्ञा देकर (**जातौजातौ यदुत्कृष्टं तद्रत्नमभिधीयते**) राजाओंके लिए ऐसे तत्वज्ञों की आवश्यकता बतलाई है।

स्वचक्राणि चक्राणि भूबलानि बलानि च।
ज्योतिषं शकुनं चैव षडंगानि वदाम्यहम्॥

८ नामजस्वर, ८ कालजस्वर, ८४ सर्वतोभद्रादि चक्र एवं भूबलाध्याय मंत्रबलाध्याय—ज्योतिष और शकुनाध्याय इन ६ अध्यायोंको षडंग बतलाया है।

वर्तमानमें - लीथोकी छपी 'नरपतिजयचर्या' श्रीवेंकटेश्वरसे छपी नरपतिजयचर्या **जयलक्ष्मी-टीका** पं० नरहरिकृत टीका जयपुरसे लिखित रामविजय संस्कृत टीका है। इनमें पहली दो टीकासे जयपुरवाली हस्तलिखित टीका यथार्थ अर्थको प्रकटित करती हैं। नूतनसंस्कृत टीका हिन्दी टीका बनारसमें छपी हुईके लेखक पं० गणेशदत्त पाठक ज्योतिषाचार्य हैं।

इस ग्रन्थकी श्लोक संख्या **अनुष्टुप् छन्दसां श्लोकैः सार्द्ध पंचसहस्त्रकम्** ५५०० होते हुए भी आजतककी सभी पुस्तकोंमें शास्त्रसंग्रहाध्याय, पंचस्वराध्याय, चतुरशीति चक्राध्याय भूबलाध्याय और मंत्रबलाध्याय छपे हैं। ज्योतिष अध्यायमें लोकोपयोगी अच्छा संग्रह है। एवं 'शकुनाध्याय' भी अप्रकाशित है।

प्रस्तुत विषय शकुन वर्णनके सम्बधमें शकुनाध्यायके आरम्भमें लिखा है।

ज्ञानं गोतमं गर्ग शाकुनमतं व्यासवसिष्ठ मयं माण्डव्यं जमदग्निजं जाबालिज यावनम् ।। मार्कण्डेय पराशरं गुरु भवं मन्वत्रिभृग्वंगिरौ ये चान्ये च वसन्तराज सदृशा ग्रन्था मया बीक्षिता ।। १ ।। एतच्छास्त्रगणान्महोदधिमते सर्वप्रधानं य तु। नानाभेद विचार सार सहितं व्यक्तं फलं निश्चितम्। तस्माद्व्यस्त समुच्चयं क्रमगतं संगृह्य सर्वं ततो वक्ष्ये शाकुनराज पंचकमहे सत्यं सुबोधं जने ।। २ ।। होरा केरलका स्वरोदयमतं चूड़ामणिं ज्यौतिषं दुर्विज्ञेयमिदं महागणनया मोहान्धकारोपमं, व्यक्तं दृष्टि शुभाशुभकरे ज्ञानं महाश्चर्यदं, वोध्यं पण्डित पामरादिकजनैः सत्यंमतं शाकुनम् ।।

गौतम, ज्ञान, गर्ग, व्यास, वसिष्ठ, मय, माण्डव्य जमदग्नि, जाबाली, यवनाचार्य, मार्कण्डेय, पराशर, बृहस्पति, भव (शिव) मनु, अत्रि, भृगु, अंगिरा और बसन्तराज भट्टने शकुनमहोदधि आदि ग्रन्थोंका अध्ययन करके नाना भेद विचार सार सहित निश्चित व्यक्त फलबोधक बातोंका संग्रह करके शकुनरत्नपंचक (पोदकी काको यक्ष शिवोक्तमेव च। **पंचरत्नमिदं वक्ष्ये षष्ठे शाकुनजे मते**) पोदकी-पिंगला काक यक्ष शिवाके शकुनोंका पंचरत्न माना है। ज्योतिषमें गणितविषय बहुत कठिन, पाटीगणित बीज गणित ज्यामिति क्षेत्रमिति आदि विषयके कठिन होकर फलित ज्योतिष नक्षत्र चूड़ामणि जैसे ग्रन्थ भी निर्मम निर्णय देनेमें सभ्रम है। क्योंकि फलित ज्योतिषमें सापवाद प्रकरण बहुत है। किन्तु शकुन शास्त्रज्ञ प्रश्नोंका उत्तर हमेशा सत्य ही देगा। शकुन ७ प्रकारके माने गये हैं। १ आदेशक, २ जंघिक, ३ यांत्रिक, ४ प्रावेशिक, ५ आकस्मिक, ६ याचित, ७-नैमित्तिक इनके लक्षण बतलाये है। पोदकी पिंगला काक दक्ष शिव इन पांचों पर पांच ही देवताओंकी प्रधानता मानी है। पोदकीकी ब्राह्मी प्रधिष्ठात्री, पिंगलाकी चण्डी काकका गरुड़ श्वानका यक्ष शृगालीकी अधिष्ठात्री शिवा है। पोदकीकी गति प्रधान है। स्वर-चेष्टा पिंगलाकी प्रधान है। काकका स्थान खनककी चेष्टा शिवा का किस दिशामें सुख शब्द प्रधान है।

(क्रमशः)

सप्ताह पारायण विधि

[लेखक :—श्री पं० चन्द्रदत्त जोशी शास्त्री, सोलन हि०-प्र०]

वर्तमान समयमें श्रीमद्भागवत सप्ताह पारायणकी विधि लोगोंने अपनी इच्छानुसार आरम्भ कर दी है। शास्त्रीय विधि श्रीमद्भागवतके माहात्म्य ६ अध्यायमें श्री शुकदेवजीने मुहूर्ततसे लेकर श्रीव्यास-पूजन वरण, ब्राह्मण-वरण आसनादिकी क्रमसे विधि लिखी है। परन्तु आधुनिक कुछ तथाकथित कथावाचक शास्त्र विधिका उल्लंघन करके अपनी सुविधानुसार पाठ एवं अर्थ या कथा करते हैं। श्लोक सं० १ से ४ तक सामग्री एवं ५ से ११ तक निमन्त्रण देनेकी विधि वर्णन की है। व्यासके दिव्यासनका वर्णन करते हुये लिखा है कि व्यास विरक्त, वैष्णव, वेदशास्त्रका ज्ञाता दृष्टांत कुशल, धैर्य वाला और निस्पृह होना चाहिए। यदि—

"अनेक धर्म विभ्रान्ताः स्त्रैणाः पाखण्डवादिनः ।
शुकशास्त्र कथोच्चारे त्याज्यास्ते यदि पण्डिताः ।"

अनेक धर्मोंमें विभ्रान्त पाखण्डी व्यास हो तो उसे त्याग देना चाहिये। २२वें श्लोकमें—

वक्तुः पार्श्वे सहायार्थमन्यः स्थाप्यस्तथाविधः ।
पण्डितः संशयच्छेत्ता लोकबोधन तत्परः ॥

सहायक व्यासके पास सदैव बैठा रहे, सहायक पण्डित संशयको काटने वाला ज्ञानी पुरुष चाहिये। सप्ताह पारायणमें दैववशात् कदाचित् व्यास असमर्थ हो जाय तो सहायक पाठ और व्याख्या कर सके।

श्री शुकदेवजीने सहायकका वरण, ध्यान श्रीमद्भागवतमें नहीं किया, क्योंकि वह व्यासके होते स्थाप्य ही लिखा है, अर्थात् सावधानी पूर्वक श्रवण करें, तथा आपात् स्थितिमें व्यासका कार्य करें। पूजन, वरण, ध्यान व्यासका (शुकरूप प्रबोधज्ञ सर्वशास्त्र विशारद ! एतत् कथा प्रकाशेन मदज्ञानं विनाशय) इस प्रकार किया है, और पाठका क्रम भी व्यास मुखसे (आसूर्योदयमारभ्य) इत्यादि रूपसे किया है। ऐसे तो स्त्रियां भी शुकसागरका पाठ करके भागवत करतीं हैं, परन्तु वह अनुष्ठानकी शास्त्रीय विधि नहीं हैं। आधुनिक तथाकथित क्रमानुसार भागवतका अपमान एवं ह्रास हो जावेगा। श्रीमद्भागवतको (श्रीमद्भागवताख्योऽयं प्रत्यक्षः कृष्ण एव हि) प्रत्यक्ष कृष्ण रूप कहा है। अतः पुरातन शास्त्रीय विधि अनुसार ही भागवत सप्ताह पारायण शास्त्र सम्मत है।

जन्मकुण्डलीमें धनी और दरिद्री योग

[लेखक :—श्री होराम शर्मा ज्यो०]

आज संसारमें प्रत्येक प्राणी धनार्जनके संकल्पमें जुटा हुआ है। और किसी न किसी प्रकार धन संग्रह करनेके लिए लालायित रहता है। परन्तु जिनके भाग्यमें दारिद्रय योग होते हैं—उन्हें अपने प्रयासोंमें सफलता नहीं मिलती है। जन्म कुण्डलीके धनी और दारिद्रय योग पाठकोंके लाभार्थ प्रस्तुत कर रहा हूं।

धनी योग

१. भाग्येश—लाभेशका योग।
२. भाग्येश—चतुर्थेशका योग।
३. भाग्येश—लग्नेशका योग।
४. दशमेश—लाभेशका योग।
५. भाग्येश—दशमेशका योग।
६. भाग्येश—पंचमेशका योग।
७. भाग्येश—धनेशका योग।
८. दशमेश—चतुर्थेशका योग।
९. दशमेश—लग्नेशका योग।
१०. दशमेश—द्वितीयेशका योग।
११. लाभेश—चतुर्थेशका योग।
१२. लाभेश—पंचमेशका योग।
१३. लग्नेश—चतुर्थेशका योग।
१४. धनेश—चतुर्थेशका योग।
१५. चतुर्थेश—पंचमेशका योग।
१६. दशमेश—पंचमेशका योग।
१७. लाभेश—धनेशका योग।
१८. लाभेश—लग्नेशका योग।
१९. लग्नेश—धनेशका योग।
२०. लग्नेश—पंचमेशका योग।
२१. धनेश—पंचमेशका योग।

उपरोक्त २१ योग वाले ग्रह २-४-५-७ भावोंमें हों तो पूरा फल। ८-१२ भावोंमें हों तो आधा फल। छठेमें चतुर्थांश फल, अन्य स्थानोंमें निष्फल होते हैं।

दरिद्री योग

१. षष्ठेश—धनेशका योग।
२. षष्ठेश—लग्नेशका योग।
३. षष्ठेश—चतुर्थेशका योग।
४. व्ययेश—चतुर्थेशका योग।
५. व्ययेश—धनेशका योग।
६. व्ययेश—लग्नेशका योग।
७. षष्ठेश—दशमेशका योग।
८. व्ययेश—दशमेशका योग।
९. षष्ठेश—पंचमेशका योग।
१०. षष्ठेश—सप्तमेशका योग।
११. व्ययेश—पंचमेशका योग।
१२. व्ययेश—सप्तमेशका योग।
१३. षष्ठेश—भाग्येशका योग।
१४. व्ययेश—भाग्येशका योग।
१५. षष्ठेश—तृतीयेशका योग।
१६. व्ययेश—तृतीयेशका योग।
१७. षष्ठेश—लाभेशका योग।
१८. व्ययेश—लाभेशका योग।
१९. षष्ठेश—अष्टमेशका योग।
२०. व्ययेश—अष्टमेशका योग।
२१. षष्ठेश—व्ययेशका योग।

यह दारिद्रय योग धन स्थानमें पूर्ण फल, व्यय स्थानमें हो तो ¾ पादोन फल, अन्य स्थानोंमें आधा फल देते हैं।

उपर्युक्त धनी एवं दरिद्री योगोंका विचार करनेसे जितने जो-जो योग आवें उन्हें अलग-अलग लिखने चाहिए। यदि धनी योग कुण्डलीमें अधिक हों और दरिद्री योग कम हों तो जातक धनवान्। दरिद्री योग अधिक और धनी योग कम हो तो जातक दरिद्री या अल्प धनी होता है। इन योगोंमें रहस्यपूर्ण बात यह है कि बलवान् धनी योग कम हों और निर्बल दरिद्री योग अधिक हों तो जातक धनी, एवं दरिद्री योग बलवान हों और उसकी अपेक्षा निर्बल धनी योग अधिक हों तो जातक कुछ समयके लिए दरिद्री जैसा जीवनयापन करता है। धनी एवं दरिद्री योगोंका विचार करते समय देश, काल, जाति. का विचार अवश्य कर लेना चाहिए। क्योंकि धनी घरानेमें उत्पन्न जातकको कुण्डलीमें बलवान् धनी योग हो तो वह लक्षाधीश कोटयधीश होता है। यदि यही योग किसी सामान्य घरानेमें जन्मे व्यक्तिका हो तो स्थितिके अनुसार धनी होता है।

आगामी अङ्कोंमें वर्षकुण्डलीसे सम्बन्धित लेख पढ़िये।

श्रीविक्रमादित्य-नामावली-कोश

[श्री पं० चन्द्रकान्त वाली, शास्त्री]

भारतमें 'विक्रमादित्य' नाम अथवा विरुदधारी अनेक राजा हुए हैं। कुछ ऐसे राजा थे, जिनका विरुद 'विक्रमादित्य' था, परन्तु उनका मौलिक अभिधान कुछ और था, और कुछ ऐसे भी राजा थे, जिनका वास्तविक नाम 'विक्रमादित्य' था, विरुद-वगैरा कुछ भी न था। इस कोशमें सभीको स्थान मिल गया है। यहां विक्रम-विरुद्वन्त व्यक्तियोंका वास्तविक नाम लिखा है। अनुसन्धान-कार्यरत कोविद-समाज इस 'कोश' का सदुपयोग कर सकता है। नाम क्रमके अङ्कानुसार नीचे दस प्वाइण्टके छोटे टाइपमें टिप्पणी दी गई है। —लेखक

नाम	पिता	वंश	राजधानी	समय [ईसवी]
१. विक्रमादित्य[1]	?	?	?	४८६ ई० पू०
२. विक्रम चरित[2]	गन्धर्वसेन	गर्दभिल्लीय	उज्जयिनी	५८ ई० पू०
३. विक्रमादित्य[3]	शिलादित्य	,,	,,	३६ ई० पू०
४. शालिवाहन[4]	गन्धर्वसेन	शक	उज्जयिनी	३२ ईसवी
५. साहसांक[5]	महेन्द्रादित्य	शक	उज्जयिनी	६५-६० ईसवी
६. श्रीहर्ष[6]	शशाङ्क	,,	,,	२१४ ईसवी

१. इस विक्रमादित्यकी सूचना 'स्कन्दपुराण' की है। उस में लिखा है : "त्रिषु वर्ष सहस्रेषु (द्वि) विंशत्यधिकेषु च। भविष्यं विक्रमादित्यं राज्यं सोऽथ प्रलप्स्यते" इसमें सप्तर्षि-संवत् 3020 तदनुसार 486 ईसवीपूर्वका संकेत निर्दिष्ट है।

२. प्रसिद्ध 'विक्रम-संवत्' का स्थापक। जैनशास्त्रोंमें इसका नाम 'विक्रमचरित' लिखा है। इसकी विख्याति इतना जोर पकड़ गई है कि अब इसके मौलिक नाम तथा विरुद्में कोई अभिज्ञान शेष नहीं रह गया है। यह अपने वंशका तीसरा व्यक्ति है।

३. गर्दभिल्ल-वंशका यह पांचवां व्यक्ति है। पूरा वंश इस प्रकार है : गर्दभिल्ल-गन्धर्वसेन-विक्रमचरित-शिलादित्य-विक्रमादित्य-सारवाहन-नरवाहन, इस प्रकारके सात व्यक्तियोंने उज्जयिनी पर 126 वर्ष शासन किया।

४. महाराजा शालिवाहनने प्रतिष्ठानपुरसे उठकर 'नरवाहन' से उज्जयिनी छीन ली। इसके वंशधरोंने 380 वर्ष उज्जयिनी पर शासन किया। शालिवाहनका अपना एक संवत् है, जो 32 ईसवीसे परिगणित है।

५. साहसांकने करूरके प्रदेशमें [मुल्तानके समीप] कनिष्क द्वितीयको मारकर कीर्ति अर्जित की। इसको विरुद् मिला— 'श्रीविक्रमादित्य'। इसके दो शक संवत् चलते हैं—[क] 65 ईसवीसे : 'शकनृपकालातीत संवत्सर', [ख] 66 ईसवीसे : 'शकनृपअभिषेक संवत्सर' नामसे। धन्वन्तरि आदि नव-रत्न इसकी सभामें वर्तमान थे।

६. राजतरंगिणीमें इसका चरित्र लिखित है। इसके निर्देशसे मातृगुप्त काश्मीरका राजा बना। प्रथम-विक्रमादित्यसे इसका व्यवधान 700 वर्षोंमें बताया जाता है। यथा—486+214=700 वर्ष। 700 वर्षोंकी भूल भारतीय इतिहासमें बहुत पाई जाती है। प्रथम विक्रमका संकेत अल्बेरूनीने भी दिया है।

७	विक्रमादित्य[७]	गन्धर्वसेन	शक	उज्जयिनी	३३० ईसवी
८.	चन्द्रगुप्त[८]	समुद्रगुप्त	गुप्त	पटना	३६४ ,,
९.	विषमशील[९]	महेन्द्रादित्य	शक	उज्जयिनी	३८०-४१२ ई०
१०.	स्कन्दगुप्त[१०]	कुमारगुप्त	गुप्त	पटना	४४० ई०
११.	कुमारगुप्त[११]	नरसिंहगुप्त	,,	,,	५०५-५५० ई०
१२.	विक्रमादित्य[१२]	पुलकेशिन्	चालुक्य	वातापि	६२८-६६०
१३.	विक्रमादित्य	विजयादित्य	,,	,,	७१३-७२६
१४.	विक्रमादित्य[१४]	कलिविष्णुवर्धन	चालुक्य	पिष्टपुर	८०० (?)
१५.	विक्रमादित्य[१५]	भीम	,,	,,	८२७
१६.	विक्रमादित्य	तैलप	,,	कल्याण	८६०

७. इस विक्रमादित्यकी सूचना भविष्यपुराणसे मिलती है। इसने अपने भाई शंखको मारकर राज्य हस्तगत किया था। इसकी माँ वीरमती नामकी अप्सरा थी। वेताल-पंचविंशतिकी समस्त कथाओंका नायक है।

८. गुप्तवंशका प्रसिद्ध विक्रमादित्य। कालिदास इसीकी राज्यसभाका कवि था। हमने गुप्त संवत् 307 ईसवीसे माना है। सो 307+7+50=364 ईसवीमें यह मगध सिंहासन पर बैठा। इसकी मृत्यु 400 ईसवीमें हुई।

९. शक-वंशका अन्तिम नरेश। महाकवि कालिदास इसकी सभामें सांस्कृतिक दूत बनकर आया। इसका अपना संवत् चलता है, जो 412 ईसवीसे गिना जाता है। श्रीसिद्धसेन दिवाकरके प्रभावमें आकर विषमशील जैन-धर्ममें दीक्षित हुए।

१०. अपनी वंश-परम्पराके अनुसार हूणों पर विजय प्राप्तकर इसने 'विक्रमादित्य' का विरुद् धारण किया। यह 440–465 ईसवी तक सिंहासनासीन रहा।

११. इसे 'विक्रमादित्य' न जाने क्यों कहा गया [?] गुप्तवंश का समय हमने अपने अनुसन्धानके बलपर लिखा है। इसके बीस वर्ष बाद गुप्त-साम्राज्य अस्त हो गया। अर्थात् 570 ईसवीमें।

१२. महाराज पुलकेशिनने अपने समयका शिलालेख छोड़ा है, जो 'ऐहोले शिलालेख' नामसे प्रसिद्ध है। जिसमें 3735 संग्राम-संवत् तथा 556 शक-संवत् लिखा है।

वह नए अनुसन्धानके अनुसार 3735−3148=587 ईसवी, एतदनुसार 556+31=587 ईसवी सिद्ध होता है। उसके 40 वर्षोंके पश्चात् उसके पुत्र 'विक्रमादित्य' का राज्यपद ग्रहण करना उचित है। दूसरी बात हरिस्वामीने कलिसंवत् 3740 में 'शत-पथ ब्राह्मण' की टीका लिखी। उस समय अवन्ति [उज्जयिनी] विक्रमके अधिकारमें थी। कलिसंवत् 3740−3102=638 ईसवीमें विक्रमादित्य शासन कर रहा था।

१४. यह विक्रमादित्य केवल वंशक्रमको पूरा करने वाला युवराज ही रहा।

१५. इस विक्रमादित्यने अपने नामसे विक्रम-संवत् चलाया। जिसका संकेत निम्न सूत्रमें है। "श्रीनृपविक्रमार्क राज्य समयातीत संवत् 16 वर्षे शाके 1488 प्रवर्तमाने युवा नाम्नि संवत्सरे।" (प्राचीन लिपिमाला पृष्ठ 163) किसी पुराने शक संवत् का इसमें जिक्र है। सो 1488−645=843 ईसवी, तदनुसार 827+16=843 ईसवीका उक्त उल्लेख है। कालसूत्रसे ऐसा ज्ञात होता है कि विक्रमादित्यका समय 827 ईसवीमें समाप्त हो चुका था।

१७. विक्रमादित्य[१७]	अय्यन	चालुक्य	कल्याण	९००
१८. विक्रमादित्य	सत्याश्रय	चालुक्य	कल्याण	९४०
१९. विक्रमादित्य[१९]	सोमेश्वर	,,	,,	१०१७-१०८०
२०. हेमचन्द्र (हेमू)[२०]	?	बनिया	आगरा	१५५६ ई०

१७. हिन्दी-विश्वकोषके सम्पादक श्रीयुत नगेन्द्रनाथ वसुने चालुक्य विक्रमके प्रसंगमें लिखा है : छठे विक्रमसे 117 वर्ष तक चली हुई वंशकाल-गणना स्थगित होगई। छठे विक्रमका समय 1017—1080 ईसवी है। सो 1017—117=900 ईसवी अय्यनपुत्र विक्रमादित्यका समय यथार्थ है।

१९. विक्रमादित्यका एक राजकवि था—बिल्हण। उसने विक्रमादित्यके चरित्र पर प्रर्याप्त प्रकाश डाला है। कविकृत रचनाका नाम है—विक्रमाङ्कदेव चरित। ईसवी सन् 65 से 90 तक साहसांक-और-विक्रमांक दो भाई हुए, बिल्हणने दोनों महीपालोंकी विशेषताओंको अपने 'चरितनायक' में उतारनेका प्रयत्न किया है। विक्रम-संवत् 1075—58=1017 ईसवीमें विक्रमादित्य अभिषिक्त हुआ, शक संवत् 1048+32=1080 ईसवी पर्यन्त इसका शासन रहा।

२०. हेमचन्द्र 'विकमादित्य' की परम्परामें संभवतः अन्तिम कड़ी हैं। साधारण सैनिक रूपसे उभरकर शौर्यका वह कीर्तिमान स्थापित करनेका श्रेय हेमचन्द्र (हेमू बनिया) को है, जो कीर्तिमान मालव-विक्रम, साहसांक तथा चन्द्रगुप्त द्वितीय स्थापित कर चुके थे। अहमद यादगारका यह लिखना : "चू सितराये दौलत अकबरशाही दर तरक्की, दाश्त नागह तीर कज़ा बपेशनियां हेमू खुर्द"। अर्थात् हेमूकी मृत्यु मृत्यु नहीं है, बल्कि वह अकबरके भाग्योदयकी प्रतीक बन गयो है। दुरुस्त है।

टिप्पणी—यद्यपि इस 'कोश' के लिए अन्य नाम भी सूची पर हैं, परन्तु अनुसन्धानमें उनका योगदान शून्यके बराबर है, अतः उन्हें छोड़ दिया है।

"श्रीमंत्र"

(अनुभवसिद्ध)

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या,
जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति,
सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः॥

नोट :—तीन हजार जप पूर्व में ही कर लें।

इस श्लोकके द्वारा जलको या विभूतिको अभिमंत्रित करके पिला देनेसे भूतप्रेत बाधाका निवारण होता है। रोगीको देनेसे रोगनाश होता है। गौ-आदि पशु किसी रोगसे पीड़ित हो तो एक लोटा इस मंत्रसे जल अभिमंत्रित करके सानीके साथ मिलाकर या ऐसे ही पिला देनेसे पशु रोगमुक्त हो जाता है।

नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया।
शक्य एवं विधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा॥

इसके अनुष्ठानसे भगवान्की परम प्रसन्नता प्राप्त होती है। तीन हजार जप करनेके बाद अन्तमें समग्र गीताका पाठ व मध्यमें ११वें अध्यायके ११ पाठ ७ दिनों तक कर लेनेसे विशेष सिद्धि होती है।

विशेष :—गीताके पंद्रहवें अध्यायका भोजन करनेसे पूर्व पूरा पाठ कर लिया जाय, उसके बाद भोजन किया जाय तो दारिद्र्यका नाश व सर्वसमृद्धिका लाभ होता है।

—रमेशप्रकाश शर्मा (खाण्डल)
मु० पो० खणदेवत
जिला टोंक (राजस्थान)

श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदास विरचित

संकटमोचन हनुमानष्टकम्

जिस प्रकार अनेक रोगोंपर विभिन्न औषधियां काम करतीं हैं, तदनुसार विभिन्न कार्यों पर विशिष्ट-शक्ति-समन्वित देवताओं की आराधना की जाती है। रुद्रावतार श्री मारुतिनन्दन एक ऐसे ही उद्भट वीर (किन्तु भक्तपालक) देवता हैं जिनकी प्रशंसा स्वयं रामजीने भी की है। यह अष्टक एक साधुकी हस्तलिखित प्रतिसे प्राप्त हुआ है, वह जीर्ण-प्रति मेरे पास सुरक्षित है, जोकि संवत् १६३६ वि० में लिखी गयी थी। यह स्तोत्र उस समय का लिखा है जबकि गोस्वामीजी तत्कालीन मुगलसम्राट् (दिल्ली) के कैदखानेमें थे, वहांपर श्रीहनुमान्जीने जो चमत्कार दिखलाया तो बादशाहको वह किला छोड़ देना पड़ा। यह स्तोत्र सिद्ध तथा अन्यत्र अप्रकाशित है। यह अष्टक ज्योंका त्यों लिखा है। श्लोक संख्या नहीं दी। किन्तु यह रामबाणकी तरह भक्तोंकी सदा रक्षा करने वाला है।

ततः स तुलसीदासः सस्मार रघुनंदनम्।
हनूमंतं तत्पुरस्तात्, तुष्टाव भक्तरक्षणम्॥
धनुर्बाण धरोवीरः, सीतालक्ष्मण संयुतः।
रामचन्द्रस्सहायो मां, किं करिष्यत्ययं मम॥
ॐ हनुमानञ्जनीसूनो वायुपुत्रो महाबलः।
महालांगूल निक्षेपैर्निहताखिल राक्षसाः॥
श्रीराम हृदयानन्द विपत्तौ शरणं तव।
लक्ष्मणे निहते भूमौ नीत्वा द्रोणाचलंयुतम्॥
यया जीवितवानाद्य तां शक्तिं प्रकटी कुरु।
येन लंकेश्वरो वीरो निःशंकं विजितस्त्वया।
दुर्निरीक्ष्योऽपि देवानां तद्बलं दर्शयाधुना॥
यया लंकां प्रविश्य त्वं ज्ञातवान् जानकी स्वयम्।
रावणांतः पुरेऽत्युग्रे तां बुद्धि प्रकटी कुरु॥
रुद्रावतार भक्तार्तिविमोचन महाभुज!
कपिराज प्रसन्नस्त्वं शरणं तव रक्ष माम्॥
इत्यष्टकं हनुमतः यः पठेत् श्रद्धयान्वितः।
सर्वकष्टविनिर्मुक्तो, लभते वांछितं फलम्॥
ग्रह भूतार्दिते घोरे, रणे राजभयेऽथवा।
त्रिवारं पठनाच्छीघ्रं, नरो मुच्येत् संकटात्॥

इतिश्री गो० तुलसीदास विरचितं श्रीहनुमान् अष्टकं संपूर्णम्।

अथ यात्रा मुहूत

(योगिनीराहुदिक्शूलज्ञानयुक्त)

निम्न पद्य संभवतः वल्लभ कवि कृत पुरानी हस्तलिखित पुस्तकसे प्राप्त है। इस एक ही पद्यको यदि मनुष्य यादकर तदनुसार अपनी विशिष्ट यात्रा (पद्यांकित कुयोगोंको बरकाकर) करे तो उसका सभी कार्य सिद्ध हो और एक्सी-डेंट अपघात योगोंसे भी वचाव हो।

सोमशनि नवमीप्रतिपदा श्रवण ज्येष्ठामें—
पूरबके दिशाशूल ज्योतिषिन गाये हैं।
गुरु पांचे तेरस धनिष्ठासे पांच नखत—
दक्षिणको गये ते बहुरि गृह न आये हैं॥
रवि भृगु भौम छठ चौदस पुष्य रोहिणिनमें—
पश्चिमके पथिकते यमपुर छाये हैं।
रवि कुज बुध दूज दसें तीनों उत्तरानमें—
उत्तरको गये तिनके उत्तर न आये हैं॥

—प्रकाशचन्द्र शास्त्री, आलमपुर (म०प्र०)

धनुः तथा मीनस्थ शनिका जीवनमें योगदान

[लेखक :—श्री पशुपतिनाथप्रसाद गुप्त "ज्योतिषरुद्र"]

'सौर-मंडल' में प्लुटो (वेंकटेश्वर—यम), नेप्चून (वरुण) तथा हर्शल अथवा युरेनस (अरुणप्रजापति) के बिना सबसे सुदूर तथा प्रौढ़-ग्रह शनि (सौरि) है। शनि अपनी अत्यन्त मन्द-गतिके कारण ही 'मन्द' कहलाता है। ढाई वर्षोंमें एक राशिकी परिक्रमा शनि (सौरि मन्द) पूरी करता है। मकर तथा कुम्भ पर इसका प्रशासकीय अधिकार है। बृहस्पति (गुरु) की राशियों अर्थात् धनुः तथा मीनमें शनिका स्थित होना उच्च-कोटिका माना जाता है। शनि (दार्शनिक, अघोर-पन्थी, श्मशान घाटवासी तथा मृत्यु-शोक कारक ग्रह) का बृहस्पति (धर्म, मोक्ष, ज्ञान-विवेक) की धनुः तथा मीनमें रहना अत्यधिक अनुकूल समझा जाता है। धनुर्गत शनि तो कोदण्डशनि कहलाता है तथा इसका पूजन किया जाता है। धनुर्गत शनि जातकके कष्टोंका निवारण करता है। बृहस्पतिकी धनुः-राशिके बाद ही शनिकी मकर-राशिका क्रम आता है तथा शनि की कुम्भ-राशिके बाद ही बृहस्पतिकी मीन राशिका क्रम आता है। मकरसे इंगित कष्टों तथा संकटोंका शमन-दमन धनुः (कोदण्ड) से जहां होता है वहीं रिक्त-कुम्भसे तुलित अपूर्ण जीवन मीनके सजल रसमें पड़ जानेसे अन्ततः पूर्ण तथा सार्थक हो जाता है। धनुः (अग्नि-तत्व) मकर (पृथ्वी-तत्व), कुम्भ (वायु-तत्व) तथा मीन (जल-तत्व) का परस्पर मिलन हो जाता है। धनुः तथा मीनके मध्यगत मकर तथा कुम्भ है। धर्म, कला, विज्ञान, तर्क, रहस्य, मनोविज्ञान साहित्य तथा नीति एवं राजनीति का पारस्परिक सम्पर्क-सूत्र धनुःसे मीन तककी राशियोंके माध्यमसे ही क्रमानुगत रहता है।

प्रस्तुत लेखमें प्रज्वलन्त प्रमाणोंसे कोदण्ड (धनुः) तथा मीनमें स्थित शनिके महत्वपूर्ण योगदानको अभिव्यक्त करनेका मेरा प्रमुख-लक्ष्य है।

श्री आदि शंकराचार्यजीके कर्क-लग्नचक्र में शनिग्रह षष्ठ-भाव अर्थात् धनुः (कोदण्ड) में स्थित था, जिसके फलस्वरूप सभी धर्मों पर सनातन-धर्म (वैष्णव धर्म) का प्रभुत्व उन्होंने स्थापित किया। आज भी यह धर्म उनके ही कारण शाश्वतता धारण किए हुए हैं।

श्रीजिससक्राइस्ट (ईसा-मसीह)—कन्या-लग्नोत्पन्न जातकके सप्तम भावमें सचन्द्रगुरु यह शनि (मन्द) अवस्थित था। मीनस्थ शनि ने उन्हें ईसाई-धर्मको अपने प्राणोंका उत्सर्ग करके भी स्थाई बनानेमें पूर्ण योग-दान दिया।

श्रीरामानुजाचार्य (कर्कलग्नोत्पन्न जातक) के जन्म-पत्रमें धनुः में ही शनि स्थित था, जिसके फल-स्वरूप भक्तिवाद तथा सन्तवाद के आधार पर आदर्श हिन्दू-धर्मका प्रवर्तन उन्होंने किया।

श्रीस्वामी विद्यारण्य महाराज (धनुर्लग्नोत्पन्न जातक) के लग्न-भावमें ही अर्थात् धनुः (कोदण्ड) में स्वगृही-बृहस्पति है जिस पर मिथुनस्थ शनिकी पूर्ण-दृष्टि पड़ रही है, जिसके

फलस्वरूप अप्रत्यक्ष रूपमें श्रीआदिशंकराचार्य जीके धार्मिक सूत्रों पर अपने आदर्श तथा उदार हिन्दू-धर्मकी स्थापना उन्होंने की।

श्रीचैतन्य स्वामीजी (तुलालग्नोत्पन्न-जातक) के तृतीय भावमें धनुः (कोदण्ड) राशि में स्वगृही बृहस्पति है जो शनिसे अति निकट है। अति निकटस्थ शनिके प्रभावसे ही उन्होंने श्रीकृष्ण विष्णु का भक्तिवादी धर्म प्रतिपादित किया। शनि वास्तवमें भाव-कुण्डलीमें धनुः में होगा।

महारानी विक्टोरियाके वृष-लग्नमें मीनस्थ शनिने सारे संसार पर सार्वभौम-सत्ता प्रदान करनेमें पूरा योग दिया।

श्रीबंगलोर सूर्यनारायणराव (सुप्रख्यात ज्योतिर्विद्) के वृष-लग्नमें मिथुनस्थ शनिकी पूर्ण दृष्टि धनुः तथा तत्रस्थित अष्टम-भाव (गूढ-विद्या, रहस्यादि) पर पड़ रही है जिससे शनिका महत्वपूर्ण योग उनके जीवनमें अप्रत्यक्ष रूपसे मिला।

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी सुप्रसिद्ध ज्योतिषाचार्यके वृष लग्नसे लाभ स्थानमें मीनराशिके शनिने आपको जीवनमें सर्वतोमुखी प्रगतिकी ओर अग्रसर करके अखिल-भारतीयस्तरकी सामाजिक साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थाओंके महत्वपूर्ण सम्मानित प्रधानपद पर पहुंचाया।

श्रीबालगंगाधरतिलकजी (कर्क लग्नोत्पन्न जातक) के व्ययस्थ शनिकी पूर्ण दृष्टि मीन राशि तथा दशम भाव (राज्य तथा राजनीति) पर पड़ रही है जिससे अप्रत्यक्ष रूपमें शनिने महत्वपूर्ण रोल अदा की। उनके 'स्वराज्य' के 'मौलिक सिद्धान्त' को भला कौन नहीं जानता है।

शनिकी पूर्ण दृष्टि धनुः अथवा मीन पर पड़नेसे भी ऐसा फल प्राप्त होता है।

श्रीजार्जबर्नार्डशा (वृष-लग्नोत्पन्न जातक) के मिथुनस्थ शनि की पूर्ण दृष्टि मीन राशि पर पड़ी जिसके फलस्वरूप अप्रत्यक्ष रूपमें शनिका योग मिला तथा वे सुविख्यात साहित्यकार हुए।

श्रीस्वामी विवेकानन्दजी (धनुर्लग्नोत्पन्न जातक) के दशमस्थ शनि अर्थात् कन्यागत शनिकी पूर्ण दृष्टि उनके सुख-भाव (मीन राशि) पर पड़ी जिसके परिणामस्वरूप उनका स्थापित धर्म आज अन्तर्राष्ट्रीयस्तर पर प्रसारित हो चुका है।

श्रीहर्बर्टजार्जवेल्स (मकरलग्नोत्पन्न-जातक) के दशमस्थ (तुलागत) शनिकी पूर्ण दृष्टि धनुः (कोदण्ड) गत व्यय-भाव पर पड़ी जिसके फलस्वरूप अप्रत्यक्षरूपमें शनिने उनको एक प्रख्यात साहित्यकार तथा इतिहासकारके रूपमें संसारके समक्ष रखा।

श्रीचित्तरंजनदास (वृश्चिकलग्नोत्पन्न-जातक) के धन भाव (वाणी भाव) में धनुर्गत शनिने प्रख्यात अधिवक्ता तथा राजनीतिज्ञ एवं देश-सुधारक बनाया।

श्रीअरविन्दघोषजी (कर्कलग्नोत्पन्न जातक) के धनुर्गत शनिने उनको 'अरविन्द-आश्रम' की स्थापना करनेमें पूर्ण योग दिया। 'स्वतंत्रता-संग्राम' में उन्होंने सशक्त योगदान दिया।

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक श्री अलवर्ट आईन्स्टिन

(मिथुनलग्नोत्पन्न जातक) के दशम-भावमें मीनगत शनिने महत्वपूर्ण योग देकर "सापेक्ष-वादका सिद्धान्त" प्रतिपादित कराया। श्रीरमण महर्षिजी (तुला लग्नोत्पन्न जातक) के मीनस्थ शनिने महत्वपूर्ण योग दिया जिससे उन्होंने अपना आदर्श धर्म प्रतिपादित किया।

श्री डा० राजेन्द्रप्रसादजी (धनुर्लग्नोत्पन्न-जातक) के जीवनमें मिथुनस्थ शनिने धनु: पर पूर्ण दृष्टि डालकर अप्रत्यक्ष रूपमें भारतीय गणराज्यका प्रथम राष्ट्रपति बनाया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि धनुर्गत अथवा मीनगत शनि अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है। साथ ही धनु: अथवा मीन पर इसकी पूर्ण दृष्टि पड़नेसे भी ऐसा योग अप्रत्यक्ष रूपमें बन जाता है।

चांदी व तिलहनों के अचूक चांस (त्रैमासिक)

२० अक्टूबर चांदी व तिलहन तेज।

२१ अक्टूबर तिलहन तेज।

२४ अक्टूबर चांदो व सरसों मंदी अलसी एरंडा तेज।

२६ अक्टूबर तिलहन तेज।

१ नवम्बर तिलहन चांदी तेज।

२ और ३ नवम्बरमें भी चांदी तेज।

५ नवम्बर तिलहन मंदे।

६ नवम्बर तिलहन चांदी तेज।

६ नवम्बर तिलहन तेज, चांदी मंदी।

११ नवम्बर तिलहन तेज।

१५ नवम्बर चांदी मंदी तिलहन तेज।

१६ नवम्बर तिलहनोंकी मंदी फलेगी।

१६ नवम्बर से २१ तक चांदी पर जोर-दार मंदीका योग है।

२५ नवम्बर तिलहनोंकी तेजी फलेगी।

२ दिसम्बर तिलहनो पर तेजी आवेगी।

४ दिसम्बर तिलहन चांदी तेज।

८ से ६ दिसम्बर चांदी पर मंदीका प्रभाव रहेगा।

१३ व १४ दिसम्बरमें चांदी पर तेजोका प्रभाव रहेगा।

१" व १६ दिसम्बरमें चांदी व तिलहनों की तेजी फलेगी।

१७ व १८ दिसम्बर चांदी व तिलहन मंदे रहेंगे।

२३ दिसम्बरमें तिलहन तेज, चांदी मंदी।

२५ दिसम्बरमें तिलहन तेज होंगे।

२७ दिसम्वरमें तिलहन मंदे रहेंगे।

१ जनवरी चांदी तिलहन मंदे होंगे।

३ जनवरीमें चांदी पर मंदी आवेगी।

४ जनवरीमें चांदीकी मंदो फलेगी।

६ जनवरीकी शामसे ११ तकमें तिलहनों पर घटाबढ़ीसे थोड़ी तेजी आवेगी।

सूचना—ज्योतिष्मतीके ग्राहकोंको जवावी कार्ड पर ही नि.शुल्क उत्तर दिया जायगा।

पता—पं० नरोत्तमदेव दीक्षित, ज्योतिषी
मोहल्ला—दिल्ली बाला, हाथरस (उत्तर-प्रदेश)

देवयोनिके रहस्य

[लेखक :—श्री सम्पूर्णदत्त मिश्र एम.ए. (संस्कृत , एम.ए. (इंगलिश)]

देवयोनियां बहुत हैं। भूत-प्रेत उनमें सब से नीचे आते हैं। इनमें अनेक तो दुष्कर्मोंसे प्राप्त होती हैं और दुर्गतिकी सूचक हैं, पर अनेक सद्गति-सूचक हैं और बड़े पुण्योंसे प्राप्त होती हैं। इस विषयमें आश्चर्य उन्हीं लोगोंको होता है जो तपस्या और उसके अद्भुत परिणामोंसे परिचित नहीं हैं। सचाई यह है कि धरतीके लोग तपोबलसे स्वर्गके देवता बनते रहते हैं और वहांसे लौटते भी रहते हैं।

वैसे तो स्वर्गसे लौटनेका प्रसिद्ध कारण वहां भोगोंसे पुण्योंका क्षीण होना बताया जाता है, पर इसके अतिरिक्त भी कई कारण हो सकते हैं। जब भगवान् नारायण अवतार लेते हैं तो अनेक देवी देवोंको अपने स्टाफमें अपने साथ ले आते हैं। रामायण और भागवत इस के प्रमाण हैं। कई देव इच्छासे इधर आते हैं। कई शापके कारण धरती पर आते हैं। 'शिव-महिम्नःस्तोत्र' के भक्तकवि पुष्पदन्त गन्धर्वोंके राजा थे और भगवान् शिवके शापसे ब्राह्मण शरीरमें धरती पर जन्मे थे। भगवान्‌की इच्छा सबसे ऊपर है। वे चाहे जिसको इधरसे उधर और उधरसे इधर भेज सकते हैं।

ऐसी स्थितिमें यह स्वाभाविक है कि लोगोंको देवयोनिके रहस्योंको जाननेकी उत्सुकता हो। रवीन्द्रनाथ ठाकुरको भी यह उत्सुकता हुई थी ऐसा उन्होंने 'माई अर्ली लाइफ' (My Early Life) नामक आत्म-कथामें लिखा है। उनके परिवारका एक नौकर मर गया था। रवीन्द्रनाथके एक भाईने उसे Planchette पर बुला लिया और पूछा—'कहो, कैसे हो? वहांकी कुछ बातें बताओ।' उसने उत्तर दिया—'कुछ भी नहीं बताऊँगा। जो कुछ मैंने मरकर जाना है उसे आप जीकर ही जान लेना चाहते हो।' रवीन्द्रनाथके घर वालोंको यह जानकर बड़ा मनोरंजन हुआ कि प्रेतावस्थामें भी नौकरका स्वभाव बदला नहीं था। जीवितावस्थामें वह बड़ा हँसने हँसाने वाला था। पर इससे यह भी तो सिद्ध होता है कि भूत-प्रेतों तकको भगवान्‌ने वहांकी बातें बतानेसे मना कर रखा है। ठीक भी है। इससे मनुष्यजीवनमें अव्यवस्था फैल सकती है। जन्मान्तरकी विस्मृति भी भगवान्‌के इसी विधानका अंग दिखाई देती है। फिर भी भगवान्‌की इच्छासे कभी कुछ बातें प्रकट हो जाती हैं। सनातन-धर्म शास्त्रोंमें ऐसे अनेक रहस्य भरे पड़े हैं।

आज मैंने देवयोनिका एक ऐसा शास्त्र-सम्मत रहस्य प्रकट करनेके लिये यह निबन्ध लिखा है जिसकी पुष्टि अभी एक ब्रह्मराक्षससे हुई। पुण्य क्षीण होने पर देवता स्वर्गसे धरती पर लौटते क्यों हैं? वे अपने पुण्योंको वहीं तपस्या करके बढ़ा क्यों नहीं लेते जिससे वहीं टिके रहें? ये प्रश्न मेरे मनमें उठे। पर ये प्रश्न मेरे मनमें तब उठे जब इनका उत्तर मुझे मिल गया। मेरी ब्रह्मराक्षससे बात नहीं हुई, पर उसकी बात मुझ तक कैसे पहुंची यह बताता हूँ। घटना कुछ वर्ष पहलेकी है। एक ब्रह्म-

राक्षसने अपने किसी जीवित ब्राह्मण मित्रको अपना साथी बनाना चाहा । ब्राह्मण घबड़ा कर अपने एक सम्बन्धीके पास गया । वे मेरे भी पूजनीय थे और अब शरीर छोड़ चुके हैं। उन्होंने किसी तंत्रसे ब्रह्मराक्षसको रोक दिया और ब्राह्मणकी रक्षा हो गई । ये ब्राह्मण मेरे परिचित हैं और इन्होंने निर्भीक होकर मुझे वे सब बातें सुनाई जो ब्रह्मराक्षस उनसे किया करता था। उन बातोंमें ही ब्रह्मराक्षस उनसे एक ऐसी बात कह गया जो इस प्रश्नका गूढ़ उत्तर है कि स्वर्गके देवता पुण्य क्षीण होनेपर धरती पर क्यों लौटते हैं।

ब्राह्मण—'कहिए, आजकल आप कहां रहते हैं ?'

ब्रह्मराक्षस—'जंगलमें (एक दूर घनी वृक्षावली और छोटेसे मन्दिरकी ओर संकेत करके) वहां रहता हूं।'

ब्राह्मण—'आप तो बहुत मंत्र तंत्र जानते थे। जप करके अपना उद्धार कर लो न ? याद नहीं रहे क्या ?'

ब्रह्मराक्षस—'सब याद हैं, यहां कितना भी जप-तप करो, कुछ होता नहीं।'

बस, ब्रह्मराक्षसके इस उत्तरमें मेरे प्रश्न का उत्तर समाया हुआ है । भाग्यनिर्माणके लिये देवताओंको फिर धरती पर आना पड़ता है। इससे मेरी समझमें आया कि भूत-प्रेत भी अपने उद्धारके लिये मनुष्यों पर निर्भर रहते क्यों पाये जाते हैं । मैंने आगे सोचकर देखा । धरतीको कर्मभूमि बताया गया है। मनुष्य योनिमें वाणी आदि कर्मेन्द्रियोंसे स्तोत्र-पाठ, जप तप, पूजा, दान, सेवादि करनेसे पुण्य संचय होता है। मुखमें चुपचाप वाणीकी सहायतासे जप करो तो भी कर्म बनता है और मानस जप करो तो भी कर्म बनता है, क्योंकि मन ज्ञानेन्द्रिय होनेके साथ-साथ कर्मेन्द्रिय भी है। विष्णु महापुराणमें मुझे एक प्रमाण ऐसा मिला है जिससे यह प्रकट होता है कि स्वर्गसे लौटते देवता सदाचारी तपस्वी ब्राह्मण-कुलमें जन्म लेना अपना सौभाग्य समझते हैं। ऐसा होनेसे उनका भविष्य सुरक्षित हो जाता है। पुष्पदन्त और शिवमहिम्नः स्तोत्र भी इसका प्रमाण है । यदि ऐसा सदाचारी, तपस्वी ब्राह्मणकुल जन-सम्पन्न, विद्या-बुद्धि-सम्पन्न और धन-सम्पन्न भी हो तो और भी अच्छा, क्योंकि दरिद्रता एक अशक्ति है और इससे पतनका बहुत भय रहता है। तपस्या अनेक शक्तियोंको खींच कर लाती है जिनमें धनशक्ति भी एक है । धर्मके बिना कामिनी काञ्चन पातक होते हैं।

उल्लासश्रीभवनम् २४५—बी, गोपालगढ़,
भरतपुर (राजस्थान)।

कर्मफलदाता सूर्य (१)

[लेखक :—श्री विक्रमसिंहजी]

सृष्टिके प्रवर्तकके रूपमें तो हम सूर्यको जानते हैं क्योंकि पानीसे वाष्प वादलवर्षाके रूपमें फिर पानी बनने तक सूर्य ही कारण है।

सविता (सर्वोत्पादक) नामसे हम सूर्य को संबोधित करते हैं। क्योंकि समस्त प्राणी अण्डज, जरायुज, स्वेदज, उष्मज आदिकी उत्पत्तिमें मुख्य कारण उष्मा ही है। बिना सेये अण्डेसे बच्चा नहीं निकलता, गर्म होकर यायुके फैलने पर ही गर्भ बाहर आता है। जू खटमल मच्छर चींटीं आदि कृमि भी स्वेद व उष्मासे ही उत्पन्न होते हैं।

दिन रात मास ऋतु संवत्सरके द्वारा काल चक्रका निर्माण भी सूर्य ही करते हैं।

गीली भूमिमें पड़ा हुआ बीज सूर्यकी उष्मासे ही अंकुरित होकर ऋतु अनुसार पल्लवित पुष्पित और फलित होकर पुनः बीजके उत्पादनमें कारण होता है। समस्त वनस्पति और प्राणियोंमें चेतना देने वाले भी सूर्य हैं, क्योंकि उषःकालमें सूर्यके उदय होते ही पक्षी कलरव करने लगते हैं। मानवशिशु आंख खोल देते हैं। मन्द समीरसे वनस्पतियां हिलोरें लेने लगती हैं। सूयके उक्त गुण तो सर्वविदित हैं लेकिन वाल्मीकि रामायणके अन्तर्गत "आदित्य-हृदय" स्तोत्रके २४वें श्लोकमें सूर्यकी स्तुति कर्मफलदाताके रूपमें भी की गई है, मूल श्लोक निम्नांकित है :—

देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च।
यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वेषु परम प्रभुः॥

इसलिये प्रस्तुत लेखमें विचारणीय विषय यह है कि क्या सूर्य कर्मफल भी देते हैं। और यदि देते हैं तो उसकी युक्तियुक्त विधि क्या है?

कर्मवाद और पुनर्जन्मके सिद्धान्तको गोस्वामी तुलसीदासजीने एक चौपाईमें इस प्रकार प्रकट किया है :—

ईश्वर अंश जोव अविनाशी,
चेतन अमल सहज सुख राशी।
सो मायाबस भयउ गुसाईं,
बन्ध्यो कीर मरकट की नाईं॥

अर्थात् जीव जो ईश्वरीय अंश है स्वभावसे अविनाशी चेतन निर्मल सहज सुखी है, लेकिन मायाके वशसे (अर्थात् त्रिगुणात्मक कर्मोंके फलस्वरूप) बन्दर व तोतेकी तरह (अपने ही कृत्यसे) बन्धनमें पड़ा हुआ है।

सूर्यके कर्मफलदाता होनेके विवेचनमें कर्म और उसके फल संबन्धी पृष्ठ भूमिसे भी परिचित होना आवश्यक है। अतः इस लेख को ४ भागोंमें बांटा गया है :—

१. कर्मका वर्गीकरण और उसका स्वभाव।

२. सृष्टि विस्तार और योनियां।

३. कर्म और योनियोंका सम्बन्ध।

४. सूर्यका कर्मसे सम्बन्ध और सूर्यका अंशदान। मनुस्मृतिकारने काम क्रोध और लोभ से प्रेरित शरीर वाणी और मन द्वारा किये

गये कर्मोंको १० श्रेणियोंमें विभक्त किया है—

शुभाशुभफलं कर्म मनोवाक्देहसंभवम् ।
कर्मणा गतयो नृणामुत्तमाधममध्यमाः ॥ ३ ॥

तस्येह त्रिविधस्यापि त्र्यधिष्ठानस्य देहिनः ।
दश लक्षण युक्तस्य मनो विद्यात्प्रवर्तकम् ॥ ४ ॥

परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्ट चिन्तनम् ।
वितथाभिनिवेशश्च त्रिविधं कर्म मानसम् ॥ ५ ॥

पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्य चापि सर्वशः ।
असंबद्ध प्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम् ॥६ ।

अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानतः ।
परदारोपसेवा च शारीरं त्रिविधं स्मृतम् ॥ ७ ॥

मानसं मानसैवायमुपभुङ्क्ते शुभाशुभम् ।
वाचावाचाकृतं कर्म कायेनैव च कायिकम् ॥८॥

त्रिविधं च शरीरेण वाचा चैव चतुर्विधम् ।
मनसा त्रिविधं कर्म दश धर्मपथस्त्यजेत् ॥ ९ ॥

शरीरजैः कर्म दोषैर्याति स्थावरतां नरः ।
वाचिकैर्पक्षिमृगतां मानसैरन्त्यजातिताम् ॥ १० ॥

शुभैः प्रयोगैर्देवत्वं व्यामिश्रैर्मानुषो भवेत् ।
अशुभैः केवलैश्चैव तिर्यग्योनिषु जायते ॥ ११ ॥

(मनुस्मृति १२।३ से ११)

अर्थात् तीन प्रकारके कर्म मानस हैं—पराये धनमें चित्त देना, अनिष्ट चिन्तन, देहमें आत्मबुद्धि । चार प्रकारके वाणीके हैं—कठोर कटु वचन, झूठ, चुगली और असंबद्ध प्रलाप । तीन प्रकारके कर्म शरीरके हैं—चोरी हिंसा व परस्त्री गमन ।

शरीर कृत दोषसे स्थावरताको, वाणी कृत दोषसे तिर्यक् योनिको और मानसिक दोषसे अंत्यजातित्व प्राप्त होता है । शुभ कर्मोंसे देवत्व, मिश्रितसे मानव जन्म और अशुभ कर्मोंसे तिर्यग् योनियां प्राप्त होती हैं । श्रीमद्भगवद्गीताके १४ वें अध्यायमें कर्मको तीन गुणोंके आधार पर विभक्त किया है :—

सत्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसंभवाः ।
निबध्नन्ति महाबाहो ! देहे देहिनमव्ययम् ॥५ ॥

तत्र सत्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम् ।
सुख संगेन बध्नाति ज्ञान सङ्गेन चानघ ! ॥६॥

रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णा संग समुद्भवम् ।
तन्निबध्नाति कौन्तेय ! कर्म संगेन देहिनाम् ॥७॥

तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्व देहिनाम् ।
प्रमादालस्य निद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत ॥८॥

सत्वं सुखे संजयति रजः कर्मणि भारत !
ज्ञानमावृत्य तु तमः प्रमादे संजयत्युत ॥ ९ ॥

रजस्तमश्चाभिभूय सत्वं भवति भारत !
रजः सत्वं तमश्चैव तमः सत्वं रजस्तथा ॥ १० ॥

(गीता १४।५ से १०)

अर्थात् प्रकृतिसे उत्पन्न गुण सत्व रज और तम ही जीवात्माको शरीर बन्धनमें डालते हैं । क्योंकि सत्वगुण निर्मल होनेसे सुख और ज्ञानकी आसक्तिसे अर्थात् अभिमान द्वारा बांधता है । रजोगुण राग रूप होनेसे कर्म और उनके फलोंसे बांधता है और अज्ञानसे उत्पन्न हुआ तमोगुण प्रमाद आलस्य और निद्राके द्वारा बांधता है । इस प्रकार सत्व गुण सुखमें, रजोगुण कर्ममें और तमोगुण प्रमादमें लगाकर मूढ़ अवस्था पैदा करते हैं ।

यह बात विशेष ध्यान देनेकी है कि इन गुणोंकी स्वतंत्र सत्ता नहीं है, तीनों गुण साथ

रहते हैं, इसलिये अन्य दो को दबाकर तीसरा प्रधान हो जाता है । दसवें श्लोकका यही अर्थ है कि रजोगुण तमोगुणको दबाकर सत्वगुण होता है और रजोगुण सत्वगुणको दबाकर तमोगुण तथा सत्वको दबाकर रजोगुण बढ़ता है इस प्रकार शारीरिक (३) वाचिक (४) मानसिक त्रिगुणात्वक (३) मिलकर ३×४×३×३×१०८ प्रकार होते हैं।

सृष्टि विस्तार और योनियां

योनियोंकी संख्या चौरासी लाख बताई जाती हैं, लेकिन श्रीमद्भागवतकारने (स्कन्ध ३ अध्याय १० में) सृष्टिका विस्तार दस प्रकार का बताया है । मूल उद्धरण प्रमाणके लिये प्रस्तुत किया जाता है, लेकिन हिन्दी पाठकको उसमें रुचि न होनेसे और लेखकी कलेवर वृद्धिके भयसे उसकी आवश्यकता न समझकर तथ्यमात्र प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१) सर्वप्रथम अनेक होनेके ईश्वरीय संकल्पसे महत् तत्व रूप मूल प्रकृतिकी उत्पत्ति हुई उसमें। (२) अस्तित्वके चिह्न प्रकट होने पर चैतन्य जीवात्माका प्रादुर्भाव हुआ। (३) इसके बाद पंच तन्मात्रायें शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध और इनके आधार पंच महाभूत आकाश वायु अग्नि जल पृथ्वीका प्रादुर्भाव हुआ। (४) इसके बाद इन भूतोंका ज्ञान कराने वाली पांच ज्ञानेन्द्रियों (आंख नाक कान जिह्वा त्वचा) व पांच कर्मेन्द्रियों (हाथ पांव वाक् लिंग गुदा) का प्रादुर्भाव होता है। (५) इसके बाद इन्द्रियोंके अधिष्ठातृ देव मनका जन्म होता है। (६) मनके बाद पंचवृत्तियों अज्ञान अस्मिता रागद्वेष और अभिनिवेशका जन्म होता है। (७) सातवीं वैकृत सृष्टि वनस्पति की है, जिसकी वनस्पति औषधि लता त्वक्सार वीरूध और द्रुमके रूपमें छः मुख्य श्रेणियां हैं।

१. वनस्पति श्रेणीमें ऐसे वृक्ष आते हैं जिनमें मौर (पुष्प) नहीं आता जैसे गूलर बड़ पीपल आदि।

२. औषधिमें वह वर्ग सम्मिलित हैं जो फल देकर नष्ट हो जाता है, वह पुष्प फलान्वित होता है जैसे अन्न व वर्षाकालीन क्षुपादि।

३. लतावर्गमें ऐसी बेलें आती हैं जो वृक्षोंके आश्रयसे बढ़ती हैं, इनके भी गुच्छ गुल्म प्रतान एकमूला तन्तुवाहा आदि अनेक भेद हैं। गिलोय मल्लिका गुडूची आदि समझनी चाहिये।

४. त्वक्सारमें ऐसी वनस्पति सम्मिलित है जिनके छिलकेमें ही सार है जैसे बांस बेंत सरकंडा गन्ना आदि।

५. वीरूध वर्गकी लतायें जमीन पर ही फैलकर भारी फल देती हैं जैसे तरबूज खरबूजा कूष्माण्ड आदि।

६. द्रुमोंमें वे सब पेड़ शामिल हैं जो फूलके बाद फल देते हैं जैसे आम जामुन आदि।

स्थावर वर्गकी यह विशेषता है कि वह अपना आहार जमीनसे ग्रहण करके ऊपर भेजता है। अकुर भी जमीन फोड़कर ऊपर ही उठता है। ऊर्ध्वगामी है और प्रत्येक वनस्पति अपना एक विशिष्ट गुण भी रखती है जिसके कारण इसका उपयोग रोगके उपचार में किया जाता है। यह मूढ़ योनि मानी गई है।

७. मणि मुक्ता हीरा आदि रत्न और गन्धक अभ्रक पारद शीशा आदि उपधातुएं भी इसी स्थावर वर्गमें गिनी जानी चाहिये।

८. आठवीं सृष्टि तिर्यक् योनि की है जिसमें समस्त प्राणी पशु पक्षी कीट पतंगे आदि शामिल हैं। इस योनिमें आहारकी गति तिर्यक् अर्थात् तिरछी या आड़ी होती है। इस योनिमें घ्राण शक्ति प्रबल होती है, सूंघकर ही वे आहारका ज्ञान प्राप्त करते हैं। यह तमोगुण प्रधान योनि आहार निद्रा भय मैथुन परायण अदूरदर्शी और काल ज्ञान विहीन होती है। इन्द्रियोंके आकर्षण पर संयमका अभाव होता है। इनका स्थूल वर्गीकरण निम्न है—

(क) दो खुर वाले पशु ९ प्रकारके हैं—
१ गौ, २ बकरी, ३ भैंस, ४ कृष्ण मृग, ५ सूअर, ६ नील गाय, ७ रूभ, ८ भेड़, और ९ ऊंट।

(ख) एक सुम बाले ६ प्रकारके हैं :—
१ गधा, २ घोड़ा, ३ खच्चर, ४ गौर मृग, ५ शरभ, ६ चमरी गाय।

(ग) पांच नख वाले १३ प्रकारके हैं :—
१ कुत्ता, २ गीदड़, ३ भेड़िया, ४ बाघ, ५ बिलाव, ६ खरगोश, ७ साही, ८ सिंह, ९ बन्दर, १० हाथी, ११ कछुआ, १२ गोह, १३ मगरमच्छ।

(घ) पक्षी १२ प्रकारके गिनाये गए हैं :—
१ बगुला, २ गिद्ध, ३ बटेर, ४ बाज, ५ भास, ६ भलूक, ७ मोर, ८ हंस, ९ सरस, १० चकवा, ११ कौआ, १२ उल्लू।

समस्त अण्डज इसीमें वर्गीकृत किये जाने चाहिये।

९ नवीं सृष्टि मानवकी है। यह है तो एक ही प्रकारकी लेकिन बुद्धि जीवि, श्रमजीवि, शिल्पी आदि भेदसे सामाजिक स्तर भिन्न-भिन्न हैं। इसके आहारकी गति ऊपरसे नीचेकी ओर अधोगामी है। अतः कर्मप्रधान रजोगुणी हैं, विषयरूप दुःखमूलक कर्मोंमें सुख मानने वाला है।

१० दसवीं सृष्टि दैव वर्गकी है जिसमें आठ योनियां मानी गई हैं।

(१) द्युतिमान् अर्थात् दिव्यगुण ३३ देवता। (२) पितर। (३) गन्धर्व और अप्सरायें। (४) असुर। (५) यक्ष राक्षस (६) सिद्ध चारण विद्याधरादि (७) भूत-प्रेत पिशाच किन्नर किंपुरुष। (८) अश्वमुख।

इन्हें अन्तरिक्षस्थ वायु-शरीरी भोग-योनियां ही समझनी चाहिये, जिनका अस्तित्व तो उनके त्रिगुणात्मक संस्कारोंके कारण है, लेकिन दृष्टिगोचर नहीं होती। (क्रमशः)

अनुभव सिद्ध मंत्र-यंत्र

स्वप्न द्वारा लाभ उठानेका मंत्र

ॐ नमो मणिभद्राय चेटकाय सर्वार्थसिद्धि कार्याय मम स्वप्न दर्शनाय कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—लाल पुष्प कनेरके १०८ लेवें। प्रत्येक पुष्प पर मंत्र पढ़ फूंक मारे। प्रथम १० माला जपे, फिर इन मंत्रित पुष्पोंको सिरहाने रखकर बिना बोले मौनसे सो जावे तो मंत्र का अधिष्ठातृ देव स्वप्नमें साधकको इच्छित कार्यका उत्तर देता है। ३ या ७ दिन करे। अनेक बारका परीक्षित मंत्र है।

मन इच्छा पूरी करनेका विधान

"ॐ ह्रीं हंसः।"

इस मंत्रकी ११ माला ७ रविवार तक नित्य करे। यंत्र अनारकी कलमसे हल्दीसे लिखे। क्रमसे १ से ८ व ८ से १५ तक। यंत्रके नीचे अपना मनोरथ लिखे। केवल इतवारको ही जाप दीप धूप पुष्प नैवेद्यसे करे। जाप पूरा होने पर इस यंत्रको उसी दीपकमें जला देवें फिर दूसरे इतवारको भी ऐसा ही करे। ब्रह्मचर्यसे रहे, जमीन पर सोवे। केवल इतवारको एक समय भोजन अलूणा करें। अन्य दिनोंमें नियम से दोनों समय भोजन करे तो इच्छित काम निःसन्देह पूरा होता है। मेरा तथा हजारों पाठकोंका अनेक बारका परीक्षित विधान है चाहे नवग्रहोंका महान् कष्ट हो अथवा पूर्व संचित पाप कर्मका उदय हो इस विधानसे सभीको धन नौकरी व्यापारसे लाभ होता देखा गया है।

[लेखकने यहां यंत्रको स्पष्ट नहीं किया कि कौनसा यंत्र लिखना। आगामी अंकमें स्पष्टीकरण करें तो पाठक लाभ उठा सकेंगे। —सम्पादक]

जो मानव सब प्रकारसे दुखी हों स्वप्नमें भी सुखका सांस नहीं आये उनको इस मंत्रसे आश्चर्यकारक सुख शांति तथा धन लाभ होता देखा गया है।

मंत्र—"ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं जयसिद्धा विजय सिद्धा फते सिद्धा सिद्धि सिद्धा मम दिसंतु।

विधि—इस मंत्रका ४१ दिन तक २१ माला रोजाना दीप धूपसे मनको एकाग्र करके जप करना। पूर्ण ब्रह्मचर्यका पालन करे। अभक्ष्य वस्तुको नहीं खावे तो ४१ दिनके भीतर ही चाहे जैसा ग्रहादि दोष अथवा पाप कर्मोंका उदय क्यों न हो सोने पर सुहागेका काम देता है। शोकको सुख शांति धन लाभमें अनायास बदलता देखा है। परन्तु विधिपूर्वक शांत चित्त से भजन करना चाहिये।

—मोतीलाल जैन ज्योतिषी
पालम, नई दिल्ली—४५

लेखकों से निवेदन

आगामी अङ्कके लिए जो लेख स्पष्ट सुवाच्य अक्षरोंमें लिखे हुए दि. १५ नवम्बर १९७८ तक सम्पादकके पास पहुंच जायेंगे वे ही प्रकाशित हो सकेंगे। लेखक समयका ध्यान रखें। —सम्पादक

अनुभूत मंत्र यंत्र प्रयोग

जिस प्रकार तनकी स्वच्छताके लिये मन की स्वच्छता एक अनिवार्य शर्त है, ठीक उसी प्रकार प्रयोगारम्भके पूर्व विश्वास होना परमावश्यक है, जैसे कहा है :—

मन्त्रे तीर्थे द्विजे देवे दैवज्ञे भैषजे गुरौ।
यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी।।

अर्थात्—मन्त्र, तीर्थ, ब्राह्मण, देवता, ज्योतिषी, औषध तथा गुरुमें जिसकी जैसी भावना होती है उसे वैसे ही सिद्धि प्राप्त होती है। "जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति तिन देखी तैसी।"

और साथ-साथ हरि स्मरण कर प्रयोग पर सच्चा प्रेम भी होना आवश्यक है जैसा कहा है—

जेहि के जेहि पर सत्य सनेहू।
सो तेहि मिलई न कछु सन्देहू।।
—मानसान्तर्गत

तो मैं इष्टदेवके समक्ष लिखता हूं कि :—
'होय हि ईश्वर करई सहाई'

अर्थात् ईश्वर सहायता करेंगे व कार्य हो जावेगा। हरि आराधन पूर्वक यम नियमोंका पालन करते हुये कार्य करेंगे तो अवश्य सफलता मिलेगी क्योंकि गीतामें ही गीता-गायक भगवान्श्रीके वचन है कि—

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्हयम्
—गीता ४—११

अर्थात् —जो मुझे जिस प्रकार भजता है मैं भी उसे उसी प्रकार भजता हूँ, यानी फल देता हूं।

और यदि "कर्म विवस दुख-सुख छाति लाहू" के अनुसार कार्य नहीं हा तो निराश नहीं होना चाहिये और चिन्ता न करके ईश्वर आराधना करनी ही अत्युत्तम है। यदि चिन्ता युक्त एवं निराश हुये तो यह होगा कि :—

चिन्ता चिता समान है केवल अन्तर येह।
चिता जरावत मृतक तन चिंता जीवित देह।।

इस वास्ते तो भरतजीने भी कहा है कि—
'एहि कुरोग पर औषध नाहीं। और—

"निरुत्साहस्य दीनस्य शोकपर्याकुलात्मनः।
सर्वार्थान्यवसीदन्ति व्यसनं चाधिगच्छति।।
—वा० रामायणान्तर्गत

अर्थात् —जो पुरुष निरुत्साह दीन व शोकाकुल रहता है उसके सब काम बिगड़ जाते हैं और वह बहुत बड़ी विपत्तिमें पड़ जाता है। हां, ऐसी स्थितिमें अवश्य ही सफलता भी विफलतामें परिणत हो जावेगी और प्रयोगको असत्य मानकर नाना प्रकारके व्यंग रच दिये जावेंगे। हां, अब मैं उन्हें युक्ति-संगत समझकर लिखना उचितमान लिख रहा हूँ।

विद्या प्राप्तिके लिये सिद्ध हयग्रीव मन्त्रके साथ गुड़ूच्यादि प्रयोग

गुरुची (गिलोय), अपामार्ग, बिडंग, (वायविडंग) शंखिनी (शंखावली), ब्राह्मी,

वच, सोंठ, शतावरी, इन सब आठोंको बराबर बराबर भाग लेकर इनका चूर्ण करें, तदनन्तर गौ घृतमें मिलाकर उसकी आठ-आठ आने भरकी ४४ दिन वास्ते ४४ गोलियां बना लें और इस हयग्रीव मन्त्र (ॐ ऐं ह्रीं ह्रौं हयग्रीवाय नमो मां विद्यां देहिदेहि बुद्धिं वर्द्धय वर्द्धय हुं फट स्वाहा) को प्रतिदिन कमसे कम १०८ बार ब्रह्मचर्यादि सभी यम नियमोंका पालन करते हुये जपे । (जप अधिक इच्छासे कितना भी किया जा सकता है क्योंकि अधिकस्याधिकं फलम्) और मनमें विद्या बुद्धिकी प्राप्ति और वृद्धिका विश्वास करके एक गोली खा लेवें। इस प्रयोगकी ऐसी उक्ति है :-"गुरुची अपामार्ग, विडंग, शंखिनी, ब्राह्मी, वचा, सुंठी, शतावरी समा। धृतेन लीढा प्रकारोति मानवान् त्रिभिर्दिनैश्लोक सहस्र धारणा ।।" हां, उक्त कथनानुसार तीन दिनमें १ हजार श्लोक याद होनेकी मैं नहीं कह सकता मगर उक्त प्रयोगसे विद्या बुद्धिकी वृद्धि तुरन्त होने लगेगी और विद्वान् होगा।

एकान्तरानाशक यन्त्र

प्रत्येक मानवको एकान्तरा आने पर काफी परेशानी रहती है और इन्जेक्शनसे दूर हो जाता है। मगर स्त्रियोंके गर्भ समयमें परेशानी हो जाती है। यहां मैं करीबन ५०० दफा परीक्षित यह यन्त्र लिख रहा हूं जो कि सभी को लाभदायक है, चाहे स्त्री हो बालक हो या पुरुष ही।

३६	सु.	३६
	देवदत्त अजा	बुक २	लं.
३६	गी	३६

विधि :—इस यन्त्रको वर्षा समयमें अच्छे अमृतादि योगमें कागज पर १०८ बार लिखकर नदीमें प्रवाहित कर दे और इष्ट स्मरण कर प्रयोगमें लावें।

एक सूतकी पूर्ण कूकड़ी लेकर पैरके अगूठे से जंघा तक लम्बाई तक तारके ७ आंटे लेकर उससे मल लें (बट लेवें) और उक्त यन्त्र लिखकर डोरेमें बांध करके अपनी यथाशक्ति अनाज लेकर उस पर यन्त्रका डोरा रख देवें सामने घृतकी धूप देकर धूप पर ७ आंटे फेरकर अपने इष्टका स्मरण कर उसे रोगीके गलेमें बांध देवें और अनाज कबूतरोंको डाल देवें तथा फिर देखें एकान्तरा जाता है या नहीं? इस विधिसे मैंने कई दफा एकान्तरा लोगोंका नाश किया है।

—मुकुट बिहारी शर्मा
मु० पो० सेवा (जयपुर राजस्थान)

हर वस्तुके चांस

राजकीय सफलता और ज्योतिषशास्त्र

[लेखक :—श्री पंडित रामप्रसाद उपाध्याय, नवजीवन रोड, कलोल -- (उ० गुजरात)]

जब कोई नेता यह पूछे कि मैं राजनीतिमें प्रविष्ट हो सकूंगा ? सत्ता, स्थान प्राप्ति होगी ? नेता प्रधान बन सकूंगा ? चुनाव जीत सकूंगा ? तब ज्योतिषशास्त्रके द्वारा किस तरह, किन-किन सूत्रोंकी सहायतासे फलित कहना चाहिये, उसके बारेमें कुछ अनुभूत सिद्धांतोंको उदाहरण जन्मकुण्डलियोंके साथ प्रस्तुत कर रहा हूँ।

जातककी राजकीय सफलताके बारेमें मुख्यतः सूर्य-चन्द्रका विचार किया जाता है। ग्रहमण्डलमें सूर्य राजा, और चंद्रको रानीका स्थान दिया गया है। उसके साथ सूर्य आत्माका कारक है। "आत्मा ही परमात्मा है।" और परमात्मासे बड़ा सर्वोपरि कोई नहीं है। परमात्मा राजाओंका भी राजा है। सूर्य यश, सफलता, सत्ता का कारक है। "चन्द्रमा मनसो जातः" इस वैदिक सूत्रके अनुसार चन्द्र मनका कारक है। मनको आसानीसे जीता नहीं जाता, जो मनको जीत लेता है वही जितेन्द्रीय, या महात्माके नामसे पहचाना जाता है। चन्द्र जनताका कारक भी है। जो राजा जनताके दिलको नहीं जीत लेता वह ज्यादा समय तक अपना सिंहासन (स्थान, कुर्सी) संभाल नहीं पाता, रशियाका ज़ार, फ्रांसका लुई, और भारतमें श्रीमती इंदिरा गांधी इसके प्रत्यक्ष उदाहरण है।

जन्मकुण्डलीमें मुख्यतः दशम स्थानसे मान सत्ता, स्थानकी प्राप्तिका विचार किया जाता है। त्रिकोण स्थानोंमें पंचम स्थानसे मंत्रित्वका विचार किया जाता है। चतुर्थ स्थानसे जनताका विचार किया जाता है। इसके साथ जन्मपत्रिकामें (१) पर्वतयोग (२) गजकेशरी योग (३) अधियोग (४) राजयोग (५) अखण्ड सौराज्य योग (६) पंचमहापुरुष योग (७) महाभाग्य योग आदि शास्त्रीय योगोंका विचार भी करना चाहिये।

राज्यसत्ता संबन्धि कुछ निर्देशकोंके विचारके पश्चात् कुछ अनुभूत योगोंको प्रस्तुत करता हूं।

(१) सूर्य केंद्र या त्रिकोणमें अथवा योग कर्ता ग्रहोंके साथ युतिमें होना चाहिये।

(२) कर्मेश केंद्र अथवा त्रिकोणमें होना चाहिये।

(३) भाग्य, कर्मके अधिपतियों अथवा केंद्र त्रिकोणके स्वामियोंमें परस्पर दृष्टियोग या युति होनी चाहिये, या परिवर्तन योगमें होना चाहिये।

(४) योगकारक ग्रह बलिष्ठ होने चाहिये।

(५) दो या उससे अधिक ग्रह उच्च राशिके होने चहिये।

नोट—पाराशरीय योगकारक ग्रह ही उच्च होने चाहिये।

(६) दशम स्थानमें योग कारक ग्रह होना चाहिये।

(७) केंद्र त्रिकोण स्थानोंके स्वामियोंका परस्पर संबंध होना चाहिये।

(८) भाग्य या कर्मके अधिपति पर गुरुकी दृष्टि होनी चाहिये।

(९) कुण्डलीमें बलिष्ठ शनि हो और वह उच्चस्थ या स्वराशिमें स्थित होकर केंद्रमें, दशमस्थानमें होना चाहिये, अन्यथा दशमस्थ शनि उत्थानके बाद पतनका योग करता है।

(१०) सूर्य या शनि आत्मकारक होना चाहिये।

राज्यसत्ता भंग (पतन) के योग :—

(१) दशमेश और नवमेश दुःस्थानोंमें (६-८-१२) या दुःस्थानोंके अधिपति भाग्य, कर्मस्थानोंसे सम्बन्धित हो।

(२) सूर्य शनिका सम्बन्ध अचानक पतन करता है।

(३) शकट योग "अप्स एण्ड डाऊन" योग करता है।

(४) दशमस्थ शमि उत्थानके बाद पतन करता है।

कुण्डली नं. (१) श्रीशेख मुजीबुर् रहमान।

बंगला देशके स्व० मुख्यमंत्री श्रीशेख मुजीबुर रहमानकी कुण्डलीमें प्रथम प्रस्तुत किये गये कई योग हो रहे हैं। लग्नेश व्ययमें होनेसे कई बार राजकीय कारणोंसे कारागार गमन हुआ है। दशमस्थ शनिके कारण उनकी हत्या राजकीय कारणोंसे की गयी थी।

कुण्डली नं० (२) श्री निक्सन भू०पू० अमेरीकन राष्ट्रपति।

श्री निक्सनकी जन्मकुण्डलीमें प्रायः सभी राजकीय सफलताके योग बने हैं। सिंह लग्नके परम उपयोगी मारक ग्रह शनि दशम स्थानमें होनेसे "वाटरगेट कांड" की वजहसे राष्ट्रपति पदसे त्यागपत्र देना पड़ा था।

इस छोटेसे लेखमें अन्य कुण्डलियोंका विस्तृत विवेचन असंभव है अतः यहां आगे केवल कुण्डलियां लिख दी हैं। आशा है कि विद्वान् पाठक बंधु देखनेका कष्ट करेंगे कि कौन-कोनसे योग किन-किन कुण्डलियोंमें बन रहे हैं। विद्वान् पाठक इस लेखके सिद्धांतों को हृदयंगम करनेके पश्चात् किसी भी जन्म-कुण्डलीको देखकर जातककी राजकीय सफलताके बारेमें सही भविष्यवाणी कर सकेंगे।

उदाहरणार्थ जन्मकुडलियां

	नाम	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
(१)	शेख मुजीबुर रहमान	८	१२	१०	७	१२	४	११	५	७	१
(२)	श्री निक्सन	५	९	१०	९	९	९	११	२	१२	६
(३)	श्री डॉ० राधा कृष्णन्	६	५	५	८	६	८	६	४	४	१०
(४)	श्री टी. टी. कृष्णमाचारी	५	८	५	८	८	८	८	९	८	२

नाम	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
(५) श्री राजाजी (राजगोपालाचार्य)	८	८	२	७	९	१०	८	१२	१०	४
(६) श्री सरदार पटेल	१	५	८	१०	७	७	७	१०	१२	६
(७) श्री महात्मा गांधीजी	७	६	५	७	७	१	७	८	४	१०
(८) श्री मोहनलाल सुखाड़िया	९	४	६	६	४	१	३	३	१०	४
(९) श्री आईझन हावर	१२	७	७	९	६	१०	८	५	२	८
(१०) श्री कार्टर	७	६	७	११	५	८	५	७	४	१०
(११) श्री मोरारजी देसाई	३	११	५	१०	१०	४	१०	७	११	५
(१२) श्री जगजीवन राम	१२	१२	२	२	११	४	१२	२	३	९
(१३) श्री छत्रपति शिवाजी	९	११	६	२	११	१०	१२	६	२	८
(१४) श्री हिटलर	७	१	९	१	१	९	१	४	३	९

ग्राहकों और लेखकोंको लाभदायक सूचना

'ज्योतिष्मती' के वर्तमान २२वें वर्षके इस पहले अङ्क तक कुल ८५ अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इन अंकोंमें ज्योतिष, आयुर्वेद, सामुद्रिक, रमल और मंत्र-तंत्र-यंत्र सम्बन्धी अनेक महत्व-पूर्ण उपयोगी लेख छपे हैं, जो अन्यत्र उपलब्ध होना असम्भव है। दुर्लभ सामग्रीके कारण इन अंकोंमेंसे ३० अङ्क अब उपलब्ध नहीं है। शेष ५५ अंकोंकी भी थोड़ी प्रतियां बची हैं। गत ५ वर्षोंसे कई महत्त्वपूर्ण उपयोगी लम्बे लेख क्रमशः दो तीन अङ्कोंमें प्रकाशित हुए हैं, अतः वर्षभरकी पूरी फायलके चारों अङ्क जिन पाठकोंके पास होंगे वे ही पूरा लाभ उठा सकते हैं। प्रत्येक गत अंकका मूल्य ३) तीन रुपये हैं।

'ज्योतिष्मती' का वार्षिक मूल्य १२·०० रुपये हैं। पंचवर्षीय ५०·०० है। आजीवन सदस्य शुल्क १२५·०० है। आजीवन सदस्योंको 'ज्योतिष्मती' के गत १२ अङ्क ३६) रु० मूल्यके निःशुल्क भेजे जावेंगे। जो सज्जन 'ज्योतिष्मती' के दो नये ग्राहक बनाकर २४) रु० वार्षिक मूल्य मनीआर्डर से भिजवा देंगे—उन्हें 'ज्योतिष्मती' के ३ गतांक नौ रु० मूल्यके उपहारमें बिना मूल्य भेजे जावेंगे। नये ग्राहकोंका पूरा नाम पता ओर मनीआर्डर रसीदका नम्बर लिखना होगा।

आगामी अङ्कके लिए जो लख १५ नवम्बर १९७८ तक सम्पादकके पास पहुंच जावेंगे वे ही छप सकेंगे। लेखक उक्त अवधिका ध्यान रक्खें, अन्यथा उनका परिश्रम व्यर्थ जायेगा।

व्यवस्थापक—ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हिमाचल प्रदेश)–१७३२१२

'ज्योतिषशास्त्र और हजरत मोहम्मदसाहब' कुछ प्रतिक्रियाएं

[इन प्रतिक्रियाओंसे यह स्पष्ट हो जाता है कि 'ज्योतिष्मती' का समस्त भारतमें प्रचार है और सभी सम्प्रदायके लोग ध्यानसे पढ़ते हैं। केवल ज्योतिषमें ही नहीं अपितु साहित्यक्षेत्रमें भी 'ज्योतिष्मती' का प्रमुख स्थान है, यह बात भी इन प्रतिक्रियाओंसे स्पष्ट है। —सम्पादक]

'ज्योतिष्मती'के सं० २०३५ वि० के वैशाख मासके अंकमें मेरा उपरोक्त शीर्षकका लेख छपा था। इस पर जैसा कि स्वाभाविक था, अनेकों पत्र प्राप्त हुए हैं।

जब मैं यह लेख तैयार कर रहा था, उस समय कई मित्रोंने मुझे सावधान किया था कि यह बहुत नाजुक विषय है। इस पर बहुत समझ-बूझ कर काम करना। ज्योतिष इतिहासमें यह पहला प्रयास है और हमेशा के लिए एक रेफरेन्स (सन्दर्भ) बन जायगा। एक मित्रने कहा—'हजरत मुहम्मदके विषयमें यह बात याद रखना कि अन्य धार्मिक महापुरुषों तथा इनमें एक मूलभूत अन्तर है कि इनके ऊपर अभी तक केवल मुसलमानोंका ही एकाधिकार माना जाता है। अन्य किसी भी मुसलमानेतर व्यक्तिका इन पर कलम चलाना इनके अनुयायियोंमें असन्तोषका कारण भी बन सकता है।"

मैं सुनता रहा और काम पर लगा रहा। किन्तु ऐसी बातें सुनते-सुनते मैंने किसी मुस्लिम विद्वान्से सलाह करना ठीक समझा। ताकि अधिकसे अधिक यह लेख तथ्यपरक हो, ज्योतिश्शास्त्रके हिसाबसे भी और मुस्लिम मान्यताओंके लिहाजसे भी। दरगाह चार-कुतुब शरीफ हांसी उत्तर भारतकी प्रसिद्ध मुस्लिम दरगाहोंमेंसे एक है। यहांके वर्तमान पीरजी हकीम फजलुलरहमान साहब जमाली एक अच्छे विद्वान् हैं। अरबी भाषा, ज्यौतिष-शास्त्र, तंत्र-मंत्र एवं आयुर्विज्ञान विषयक ज्ञान आपका काफी है। मैंने उनसे मिलकर अपना मंतव्य कह सुनाया, तथा इस विषयमें उनसे मदद और रहनुमाई चाही।

हकीमजीने इस विषयमें मेरे मन पर छाए भ्रांतियोंके बादलोंको दूर किया और कहा, "मुसलमानोंको जितना धर्मान्ध और कट्टर बताया जाता है, वैसे ये लोग हैं नहीं। आप देखेंगे कि इस प्रयासका मुसलमान लोग दिल खोलकर स्वागत करेंगे।" उन्होंने मुझे एक दो मुस्लिम नजूमियत (ज्यौतिष) पर पुस्तकें पढ़नेके लिए दीं तथा समय-समय पर अपेक्षित जानकारी देनेका आश्वासन दिया। लेखकी तैयारीमें मुझे सभी वर्गके विद्वानोंका भरपूर सहयोग मिला।

क्योंकि यह लेख बहुत मेहनतसे तैयार किया गया था और भविष्यमें इसका एक विशेष स्थान बनना है, इसलिए मैं इसका प्रकाशन किसी उच्चस्तरकी पत्रिकामें करवाना चाहता था। साहस करके 'ज्योतिष्मती'

को भेजा। आदरणीय त्रिवेदीजीने विशेष कृपा करते हुए सर्वथा नवीन विषय पर इस अकिंचनको स्थान दिया, और अपनी विद्वत्ता-पूर्ण टिप्पणी देकर लेखको वास्तवमें महत्व-पूर्ण बना दिया।

लेखके प्रकाशित होनेके बाद आशासे अधिक ही इसकी चर्चा हुई। जो इस लेखकी लोकप्रियताका एक प्रमाण है। क्योंकि लेखके अन्तमें मेरा पता दिया हुआ था, सो, अनेकों पत्र सीधे मुझे ही मिलने लगे। पत्र लिखने वाले मुस्लिम तथा अमुस्लिम दोनों ही वर्गों के लोग थे। कुछ पत्रोंमें इस अभिनव प्रयास की सराहना थी, कुछमें इस बातकी तरफ ध्यान दिलाया गया था कि लेखमें ज्यौतिष-शास्त्रके कई निष्कर्ष धार्मिक विनम्रता पर हावी नहीं हो सके। इसके लिए उन लोगों ने विशेषरूपसे पंचम, सप्तम एवं अष्टम भावों के वर्णनका उल्लेख किया है। कुछ सज्जन लिखते हैं कि—"आपने अनेकों हिन्दू अवतारी पुरुषोंके होते हुए भी एक अहिन्दूको नायक बनाकर लिखा है। अब हिन्दू महापुरुषों पर भी लिखना चाहिए।" आदि-आदि अनेकों बातें पढ़नेमें आईं।

इस लेखके विरोधमें किसी भी मुस्लिम भाईने कुछ नहीं लिखा। वरन् सभीने शाबाशी ही दी। आर्कियोलॉजिकल सर्वे आफ इण्डियाके डाइरेक्टर आफ एपीग्राफी (अरेबिक एण्ड पर्शियन इंस्क्रिप्शन डिपार्टमेंट) के सुप्रसिद्ध मुस्लिम डा० जेड० ए० देसाई साहबने सरा-हना करते हुए लिखा है·········I do find that the article breaks a new ground. It is for such scholars who are will versed buseh in religious science as well as in the science of astrology to eietermine its correct worth.

अजमेरके श्री मजीद हुसेन चौहानने लिखा है "भाई साहब! बहुत पहले ही यह काम करना तो हम लोगोंको चाहिए था लेकिन करना आपको पड़ा है और आपने इसे इस खूबीसे किया है कि मुस्लिम तथा ज्योतिष जगत् आपका सदा ऋणी रहेगा।" आपने एक बातकी तरफ ध्यान दिलाया है कि आँ हजरत सल्लल्लाहु अलैहीव सल्लमके अन्तःपुर में ११ पत्नियां थीं आपने १० का उल्लेख किया है। यह भूल कैसे लगी।

चौधरी मोहम्मद अहमदखां 'नागौरी' कलकत्तेसे लिखते हैं "शाबाश मेरे अज़ीज़! लगे रहो। खुदा तुम्हें तौफ़ीक़ दे। क़ौमी यकज़हतीके लिए आपके दोनों लेख (दूसरा लेख 'हज़रत मोहम्मद: हिन्दूकिंवदन्तियोंमें' जो रामपुरसे प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका 'मार्गदीप' के अक्तूबर १९७७ के अंक में छपा है) आज शायद उतनी क़द्र न पा सकें, लेकिन बिला शुबह आने वाले कलमें इनकी एक मख़सूस जगह होगी।" आपने यह भी पूछा है कि लेखमें नबीकरीमकी उम्रका परिणाम शम्सी साल हैं या क़मरी? (चौधरी जी की सेवामें निवेदन है कि हमने उक्त लेख में शम्सी—सौर वर्ष—का प्रयोग किया है क़मरी चान्द्र वर्षका नहीं —लेखक)।

श्री अबनी बोरा एम०ए० ज्योतिषरत्न, गौहाटीने भी लेखकी प्रशंसामें एक पत्र भेजा है।

सबसे लम्बा पत्र उत्तरीभारतके प्रमुख प्रकाशक श्री एम०एल० पांडेय प्रोप्राइटर शैलेन्द्र-प्रकाशन, मधुप, तिलिस्मी जासूस ऐण्ड एलाइड पब्लिकेशन्स एवं प्रभात-प्रकाशन इलाहाबादने लिखा है। आपने 'रसूल अल्ला' पुस्तककी स्वयं रचना की है, तथा शियाधर्मावलम्बियोंकी प्रसिद्ध पुस्तक मीर अनीसके मर्सियोंका सर्वप्रथम हिन्दी अनुवाद (पद्यबद्ध) किया है। आपका पत्र इसलिए काबिले ज़िक्र है कि आपने प्रत्येक धर्मका तुलनात्मक अध्ययन किया है। "स्वयं हजूर सल्लमका भक्त हूँ, रोज़ दरूद शरीफ पढ़ता हूं। कुरान भी पढ़ता हूं। नमाज़ें हर तरहकी आती हैं, तहज्जुद भी इश्राक़ भी और चाश्त भी। सारी हदीसें व फतवे याद हैं।"

आप लिखते हैं "इस लेखको पढ़नेके बाद मेरा रोम-रोम तरंगित हो उठा। इसलिए नहीं कि लेख एक महान् विभूति पर लिखा गया है, बल्कि इस बात पर कि लेखक एक हिन्दू है। लेखको समाप्त करते हुए अन्तिम शब्द 'आमीन' आपके आदरभावको प्रकट करता है।" दो बातोंकी तरफ पाण्डेयजीने ध्यान आकर्षित किया है। "१ अमीनाकी बजाए शब्द आमना होना चाहिए था और दूसरी बात ग्रहोंके उल्लेखकी शैलीमें बजाए यह लिखनेके कि 'ऐसा होना चाहिए' की बजाए दावेसे यह लिखना चाहिए था कि "अमुक ग्रह के प्रभावसे ऐसा ही होना चाहिए।"

पाण्डेयजीके पहले ऐतराज़के विषयमें निवेदन है कि हिन्दीमें जिस प्रकार मूल अरबी शब्द मुहम्मदके साथ-साथ मोहम्मद तथा मैराजके साथ-साथ मिराज़ भी प्रचलित हैं उसी प्रकार आमनाके लिए अमीना भी चलता है। दूसरी बात दावेपूर्वक कहनेकी है तो इस विषयमें मैंने उक्त लेखकी भूमिकामें ही स्पष्ट कर दिया था कि ज्योतिषशास्त्रकी असीम संभावनाओंके बीच हमारे ही निष्कर्षोंको ही १००% सही माननेका आग्रह हम नहीं करना चाहते। अन्तमें पाण्डेयजीने लिखा है कि आपका प्रयास बहुत सफल रहा। यह सत्य है।

स्वामी ज्ञानानन्द भारती काशीसे पूछते हैं कि मोहम्मद साहबके विवाह, वैराग्य आदि के समय ग्रहों वगैरहकी क्या स्थिति थी? (मकर लग्नमें जन्म होनेके कारण परिणयवयः २१वें वर्षके पश्चात्की बनती है। सप्तम स्थान पर कर्क राशिके होनेसे इनकी पत्नियोंके सुन्दर होनेके योग हैं। एकादश गृहमें बृहस्पति एवं शनिका जो संधी योग पड़ रहा इससे ३६वें वर्षमें परिवारसे विरक्त होके वैराग्योन्मुखी होना निश्चित है।)

सरदार श्री हरमन्दरसिंहजी हरमन्दिरनगरी अमृतसरसे लिखते हैं "बीबा भूपसिंह! अफसोस कि आप हम हिन्दुओंके बीच पैदा हुए हो, अगर कहीं मुस्लिम घरमें उत्पन्न हुए होते तो आपका दर्जा कहीं ज्यादा बुलन्द होता।" (खैर सरदारजी! हम इस हालमें भी खुश हैं। मुसलमान होने पर स्यात् वह बात नहीं बनती जो हिन्दू होनेसे है।)

वयोवृद्ध विद्वान् श्री चन्द्रकान्त बाली शास्त्रीजीने इस लेखको अद्वितीय लेख बताते हुए 'ज्योतिष्मती' वर्ष २१ के चौथे अंकमें एक भूलकी तरफ इशारा किया है कि—"वैक्रमाब्द

ईसवी सनोंमें अन्तर ५७ वर्षका नहीं ५८ वर्ष का होता है और इस एक वर्षके अन्तरसे कुण्डलीमें कितना परिवर्तन सम्भव है ?" (उपरोक्त दोनों सनों में ५७ वर्षका अन्तर ही मान्य है । ५८ वाला सिद्धान्त हमारे देखनेमें नहीं आया है । वैसे भी हमने अपनी गणनाका आधार विक्रम सम्वत्को बनाया है। जिसे शास्त्रीजीने ठीक बताया है, अतः कुण्डलीमें फर्कका सवाल ही पैदा नहीं होता।)

मैं सभी विद्वान् पाठकोंका आभारी हूँ कि आप लोगोंने इतने मनोयोगसे लेखावलोकन किया तथा विशेष कृपा करते हुए अपने भावों से मुझे अवगत कराया। मुझे भविष्यके लिए आपकी ओरसे यह सत्प्रेरणा है। धन्यवाद।

(डा०) भूपसिंह राजपूत, लाल सड़क,
हांसी (हरयाणा)

हमारे पूर्वज एवं उनके चमत्कारिक अनुभूत मन्त्र-तन्त्रादि

[ले०—श्री गो० सूर्यप्रकाश शास्त्री वैद, २/६ गीता कालोनी दिल्ली—३१]

श्रद्धेय ज्योतिर्विद् श्रीयुत पं० हरदेव जी शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्यकी परदुःख निवारण सात्विक मनोवृत्ति एवं हार्दिक स्नेहानुरोधसे 'ज्योतिष्मती' के माध्यमसे मानव मात्रके कष्टनिवारणार्थ अपने महातान्त्रिक पूर्वजोंके संक्षिप्त परिचय पूर्वक सौ-दो सौ वर्ष पूर्व उन्हींके श्रीहस्त-लिखित कतिपय मंत्र, तन्त्र, यन्त्र और औषधोपचारोंको जनता-जनार्दनकी सेवामें प्रस्तुत करनेका प्रथम प्रयास कर रहा हूं। आशा है अनेक मानवोंको अद्भुत एवं सुखद लाभ होगा । लाभान्वित सज्जनों की पुनः सत्प्रेरणा एवं स्मरणसे प्रोत्साहित होकर सन्तानहीनोंको सन्ततिदायक, काक-वन्ध्या, मृतवत्साओंके दोषनिवारक मन्त्र-यन्त्रादिका अहेतुक लाभ पहुँचानेके साथ विविध असाध्य रोगोंसे छुटकारा पाने और भूत-प्रेतादिके चंगुलसे छूटनेके अद्वितीय चमत्कारप्रद अनुभव सिद्ध तान्त्रिक प्रयोग यथा-समय पाठकोंको मिलते रहें इसमें मैं प्रयत्न-शील रहूंगा।

मेरे प्रपितामह गोस्वामी श्रीतुलसीदास जी मिश्र 'वेद' महातान्त्रिक एव भूत-प्रेतके उच्चाटन, निष्कासन और विध्वंसनमें अद्वितीय सिद्धहस्त थे। पितृचरणानुकूल कथित विद्यामें सुकुशल आपके सुपुत्र गोस्वामी श्री जेसुलाल जी मिश्र 'वेद' लेखकके पितामहश्री भी अपने समयमें प्रख्यात एवं यशस्वी सुसिद्ध तान्त्रिक थे। ज़ि० डेरा इसमाईलखान एवं ज़ि० बन्नू सीमाप्रान्त और भक्खर ज़ि० मियांवाली पश्चिमी पंजाब (अब समस्त प्रदेश पाकिस्तान) में उनको तान्त्रिक सुकीर्ति सुदूर तक विख्यात

थी। भूत-प्रेताक्रान्त व्यक्ति जब उनके सामने आते थे, त्राहि-त्राहि करते हुए चरणोंमें आर्त-क्रन्दन पूर्वक लोट-पोट हो जाते थे। सहृदय-हृदय एवं परदु:खकातर गोस्वामीजीकी दृष्टि-पातसे भूताविष्ट रोगी हँसते हुए आनन्दविभोर होकर आपकी गुण-गरिमाकी श्लाघा करते हुए अघाते नहीं थे। भूत-प्रेत, चोर, डाकू भी आपके सम्मुख जब आनेका दु:साहस अथवा दुराग्रह करते थे—तभी उनके शरीरमें प्रदीप्त एवं प्रदाहिका आग सी लगती प्रतीत होती थी। क्षमाप्रार्थी होकर भविष्यमें सन्निकट आनेकी धृष्टता न करनेकी प्रतिज्ञा करके गोस्वामीजी से अभयदान प्राप्त करके सुदूर भाग जाते थे। असंख्य असाध्य रोगियोंके आपने समूल रोग निवारण किये, विपन्न व्यक्तियोंको सम्पन्न, नि:सन्तानोंको सुपुत्रवान् बनाकर आप अपने जीवनमें लोकोपकार जन्य पुण्यकीर्ति समर्जित करके भगवच्चरणोंको प्राप्त हुए। सुगोप्य एवं परोपकारिणी रहस्यमयी तान्त्रिक विद्या-को भावी पीढ़ीके हितार्थ निज सुलेखनी द्वारा लिपिबद्ध करके अमूल्य दिव्यनिधिके रूपमें हमारे लिये छोड़ गये थे। साथ ही भगवच्चरणा-रविन्दका दृढ़ाश्रय एवं भगवत्सेवा-स्मरणमें जीवनकी मुख्योपयोगिताका विशिष्ट आदेश, भावी सन्ततिके लिये आशीर्वादके रूपमें और उपरोक्त विद्याको मात्र परोपकारार्थ गौण रूप में उपयोगी बनानेका निर्देश दे गये थे। पूज्य पूर्वजोंके आदेश एवं शुभाशीर्वादसे मेरे पूज्य पितृचरण गो० रायज़ादा श्री क्षेमचन्द्रजी मशहूर-आलम ज्योतिषी, श्रीवल्लभसंप्रदायी वैष्णवी दीक्षाके कारण तान्त्रिक रुचि न रख कर श्रीकृष्णचरणशरणका दृढ सम्बल प्राप्त कर पूर्वजोंकी तान्त्रिक साहित्यनिधिको मात्र पूर्वजदिव्यनिधिको धरोहरके रूपमें चिर-स्मरणार्थ सुरक्षित रखते थे। लगभग १० वर्ष की मेरी न्यूनतम आयुमें ही आपका हमें चिर-वियोग हो गया। पूर्वजोंकी गुप्त विद्याओंका प्रचुर साहित्य कतिपय परोत्कर्ष असहिष्णु मात्सर्यग्रस्त बन्धु-बान्धोंने छिन्न-भिन्न एवं नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। पुन: कालानन्तर भारत-विभाजनसे अवशिष्ट हस्तलिखित पूर्वज साहित्य भी हमारे दौर्भाग्यसे म्लेच्छ भू-भाग (पाकिस्तान) में रह गया। सौभाग्यसे मेरे पूज्य स्व० पितामहचरणलिखित सं० १९४२ की एक अमूल्य साहित्यकी तान्त्रिक प्रतिलिपि स्मृति रूपमें अद्यावधि सुरक्षित रह सकी है, जिसके आधारसे मैं सिरपीड़ा (अर्धशिरोवेदना) और नेत्र पीड़ा (आंखों का आ जाना) पर मंत्र तन्त्र और यन्त्र प्रकाशनार्थ श्री सम्पादक महोदय 'ज्योतिष्मती' की सेवामें सादर प्रेषित कर रहा हूँ। यदि कुछ भी जनोपयोगी सुखप्रद उपयोगमें ये आ सकें तो मैं अपनेको परम सौभाग्यशाली समझूंगा।

कष्ट निवारक अनुभवसिद्ध मंत्र-तन्त्र-यंत्रादि

मंत्र सिर पीड़ा नाशक—

"काली देवी किलकां मारे धौलीदेवी हसे, भरमादेवी चीकां मारे ऊधविरता गीधी नसे।"

विधि :—१०८ बार पढ़े, एक हज़ार जप करे सिद्ध हो।

तन्त्र सिर पीड़ा :—

१—सूंठ (सोंठ) मिरच (काली) माष (उड़द) पीसकर माथे पर लेप लगायें।

२—चावल, सेंधा नमक पीसके लेप करे।
३—बादाम, बनक्शा, मूंग पीसकर लेप करे।
४—दूध पर आई मलाई का लेप करे।

यन्त्र सिर पिड़ानाशक १—(गलेमें बान्धे)

१६	७	३२
२१	२५	४६
१६	६३	२४

यन्त्र शिरपीड़ानाशक २—(गलेमें बांधे)

१६	७	५६
३१	१५	५६
५८	४३	२४

मन्त्र नेत्र पीड़ा नाशक :—

"ॐ नमो आ काली-काली करबटी न आवे आंख न बन्धे पटी न दुःखे न पीड़ा करे। शुक्रजतीकी वाचा फुरे।"

विधि :—१०८ बार जल (पानी) में मंत्र पढ़ कर नेत्रों पर छिड़के।

यन्त्र नेत्र पीड़ा नाशक—

ॐ ह्रीं श्रीं नमः।

८	१	६
३	५	७
४	९	२

गलेमें बान्धे अथवा पानीमें घोलकर पान करे।

तन्त्र (औषधोपचार)

तेल मीठा मंत्र कर रखे, बोहड़ (वट) के पत्ते गर्म करके आंखों पर बाँधे फिर पीपलके पत्र बान्धे, हरनोली (एरंड) के पत्र बांधे अथवा सेंधा नमक गर्म करके बांधे। अथवा अर्क (आक) के पत्ते गर्म करके बांधे।

लेप :—सुंढ (सौंठ) चोकमुंढी गोमूत्र से पीसकर गर्म करके नेत्रों पर लगाये।

(पृष्ठ १६ का शेष)

होगा। यह जातक आचार्यपदको प्राप्त करने वाला होता है। वृष राशिके होनेसे इसके उत्कर्षकालका आरम्भ अठाईसवें वर्षसे होता है। पांचवें घरमें क्योंकि शुक्र अपने घरका स्वामी बना बैठा है। अतः इस जातकके सन्तान के नाम पर केवल पुत्री ही होती है। ऐसा जातक पुत्र-सुखसे विहीन होता है। (लोमश-संहिता)।

षष्ठ गृह—बुधग्रह क्योंकि नपुंसक है। अतः इस जातकमें कामक्रीड़ाओं, रति क्रियाओं या प्रणय व्यापरके प्रति विशेष लगाव नहीं होता, कामदेवकी अपेक्षा महादेव इसका आदर्श होता है। जातकका शत्रुपक्ष निर्बल होता है। इसका विरोध नगण्य होता है। किम्बहुना, जातक अजात शत्रु होता है।

सप्तम गृह—राहु और वृहस्पति कर्क राशिमें स्थित हैं। इसलिए इनकी परिणय-वय किशोरकाल ठहरती है। इस इन्द्रियनिग्रही जातकके सातवें घरमें राहुकी स्थिति है तथा

शनिकी पूर्ण दृष्टि है । इसलिए पत्नी त्याग का अवसर भी शीघ्र ही उद्दाम यौवनावस्था में आन उपस्थित होता है । उच्च राशिका बृहस्पति तथा राहुकी युति होनेके कारण जातक तमोगुण-नाशक शिक्षादाता, तामसीवृत्ति तथा इन्द्रिय सुखोंका परित्याग करने और कराने वाला होता है ।

अष्टम गृह—अष्टमेश सूर्य उच्च राशिका होकर चौथे घरमें बैठा है । अतः ऐसा जातक पर्याप्त आयु भोगी होता है । अर्थात् पूरी आयु भोगकर स्वाभाविक मृत्युको प्राप्त होता है ।

नवम गृह - कन्या राशिका स्वामी बुध चौथे स्थानमें चला गया है । जिसके कारण जातककी धार्मिक प्रवृत्तियोंको बढ़ावा मिल रहा है । साथ ही चन्द्रमाके क्षेत्रमें राहुके बैठनेसे परम्परासे चली आ रही धार्मिक विचारधाराका विरोधी बननेके पूरे आसार हैं । गुरु उच्चका होनेसे यह राजकुलोत्पन्न जातक अलंकारप्रिय होता है । चन्द्रमा धर्म-स्थानमें है, अतः नीर-तीरे इनके जीवनकी महान् घटना (केवल्यज्ञान-प्राप्ति) के योग हैं ।

दशम गृह—शनि उच्चका होकर राज-स्थानमें विद्यमान है, तथा सूर्य और बुध उसे पूर्णदृष्टिसे देखते हैं । इसलिए जहां एक तरफ राजयोग बन रहा है, वहीं तुला राशिका स्वामी शुक्र जो कर्म क्षेत्रका स्वामी भी है, पंचम स्थान पर (जो बुद्धिका क्षेत्र है) चला गया है । फलतः राजयोगसे वैपरीत्य होना अवश्य-म्भावी है । जिसके परिणामस्वरूप ऐसा राज-कुमार एक वीतराग संन्यासी होता है । ऐसे राजघरानेके बालकका लालन-पालन धायों द्वारा होना बिलकुल स्वाभाविक है ।

एकादश गृह—आय स्थानका स्वामी मंगल लग्नमें केतुके साथ उच्च क्षेत्री होकर बैठा है । यह सम्पन्न जातक आयको परमार्थ में लगाने वाला होता है । एकादश भाव पर उच्च क्षेत्री गुरु एवं स्वक्षेत्री शुक्रकी पूर्ण दृष्टि है । इस जातकके इकबालकी बुलन्दी जवानी से ही शुरु होती है । यह जातक एक नामवर हस्ती होता है । बहुत ही कमालको पहुंचा हुआ एक ऐसा व्यक्ति होता है जिसको समाज का पूज्यवर्ग (ब्राह्मण) तक भी मान-सम्मान दें ।

द्वादश गृह—व्यय स्थानमें धनुः राशि होनेसे तथा स्वामी बृहस्पति उच्चका होनेसे इस जातक द्वारा धार्मिक, परोपकारी, एवं मांगलिक कार्योंमें ही व्ययके योग हैं ।

निर्वाण—जब शनिकी महादशामें बृह-स्पतिका अन्तर हो और आयु बहत्तरवें वर्षमें चल रही हो तब मारकेश लगता है । उन दिनों नाभि-विस्थापनजन्य किसी रोग (धरन डिगनेके कारण अतिसार) या रक्ताल्पताके कारण इस जातकका शरीरपात होता है ।

जिस दिन महावीर स्वामीने निर्वाण-लाभ किया, उस दिन कार्तिककी अमावस्या की रातमें स्वाति नक्षत्र चल रहा था । आपके जीवनका बहत्तरवां वर्ष गुजर रहा था । यह मेढ़िय ग्राम (पावापुरी) की भूमि थी । चार सौ बयालीस विक्रम पूर्व (५२७ ई० पू०) में दीवालीकी जगमगाती रातमें पृथ्वीकी जाज्वल्य-मान ज्योति ब्रह्माण्डकी परम ज्योतिका एक अभिन्न अंग बन गई । इस प्रकार सन्मति

सोना चांदी व्यापारका त्रैमासिक भविष्य

[लेखक :—ज्योतिर्विद् श्री निर्विकार गुप्त, ३६०/१० सुन्दर विलास, अजमेर]

अक्टूबर १९७८ ई०

त. १७ आज बाजारमें दोनों चांस मिलेंगे।
१८ मंदीका झटका ला सकता है।
२२ मंदीमें खरीदिये। अच्छा चांस मिलेगा।
२३ तेजीका रुख।
२५ आज डबल खरीदनेका योग है।
२८ मंदीसे तेजीकारक।
२९ सामान्य रुख, खरीदनेका अवसर है।
३० बाजार तेजीकी ओर।
३१ दीपावली तेजीकारक है।

नवम्बर १९७८ ई०

ता. १ सोना-चांदी मंदीसे तेजीकारक।
३ तेज खुले तो मंदा बन्द हो।
४ दोनों धातुओंमें तेजीकारक।
६ तेजीका उछाला।
७ घटबढ़ कारक।
१४ विपरीत फलदाता।
१६ घटाबढ़ी।
१७ अचानक कोई समाचार प्राप्त हो।
२१ सोना-चांदी मंदे।
२३ दोनों धातुओंमें घटबढ़।
२६ कल व आज सावधानी वरतें।
२९ तेजींका रुख।

दिसम्बर १९७८ ई०

ता. ३ सोना-चांदीमें तेजीकारक।
५ आज बाजार मंदा चले तो कल तेज।
८ घटबढ़।
९ मंदा खुलकर तेजीकी ओर।
१३ घटबढ़।
१५ तेजीकारक।
१८ सोना-चांदी दोनोंमें घटबढ़से मंदीका रुख. खरीदें आगे लाभ हो।
२१ तेजी चले, कल मंदीका योग है डबल खरीदें।
२४ तेजी अच्छी है।
२५ तेजी मंदी दोनोंके चांस मिलेंगे।
२८ सोना-चांदी तेजी कारक।
३०-३१ सावधानी वरतनेका समय है।

जनवरी १९७९ ई०

ता. ३ कल की तेजी आज भी रहे।
५ बाजार सामान्य हो जाय।
११ सोना-चांदी दोनों तेज हैं। तिथि मंदीकारक योग देता है।
१ दोनों धातु तेज हों।

सद्गतिको प्राप्त हुए।

इस लेखकी तैयारीमें मुझे अग्रलिखित विद्वानोंका बहुत सहयोग मिला। श्रीदिगम्बर जैन मन्दिर हांसीके पंडित श्यामलालजी, स्वामी दयानन्दजी भारती हांसी, श्री व्रजकिशोरजी शर्मा चिड़ावा वाले, ए०एस०एम०-हांसी, बाबू दीपचन्दजी शर्मा एडवोकेट हांसी, तथा विशेष रूपसे जैन श्वेताम्बर शाखाके तेरा पन्थी साधु समाजके मुनि श्री छत्रमलजी। मैं इन सभीका आभारी हूँ।

(पृष्ठ ८ का शेष)

सुहृद्वर महांत श्री मुरलीमनोहरशरणजी एव उनके सहयोगियोंको है। ज्योतिष्मती-परिवार विद्याविनय-सम्पन्न श्रद्धेय श्रीमहान्तजी महाराजको इस पुनीत कार्यके शुभारम्भ पर हार्दिक बधाई देता है।

वैसे तो यह सर्वविदित है कि श्रीमुरली मनोहरशरणजी राजस्थानके धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक क्षेत्रमें अग्रणी रहते आये हैं। आयुर्वेदके प्रति आपकी सेवाओं को कौन भुला सकता है। अब संस्कृतके प्रति उनके उत्कट प्रेम एवं क्रियाशील व्यक्तित्वने संस्कृत जगत्को यह अनुपम भेंट प्रदान की है। हमारा यह अभिमत है कि 'मैकाले-ब्राण्ड' शिक्षाने इस देशका बेड़ा गर्क कर दिया। शिक्षा पर राजाका नियंत्रण कभी भी सुखदायी नहीं हो सकता। किन्तु, समाजकी उदासीनता भी कम नहीं रही है। हमारे यहां बहुत बड़े बड़े मठ मंदिर एवं धार्मिक संस्थाएं हैं, वे यदि शिक्षाके क्षेत्रमें अपना योगदान करें तो देशकी बहुत बड़ी समस्याका हल सहज हो जाय।

प्रश्न हिन्दीका

जब-जब तामिलनाडुके नेताओंकी पकड़ वहांकी जनता पर ढीली होने लगती है तब-तब एक चिर परिचित नारा 'हिन्दी-हटाओ' लगने लगता है। अब तामिलनाडूके मुख्यमंत्री ने दक्षिण राज्योंके मुख्यमंत्रियोंको लेकर षड्-यंत्रकी एक बड़ी योजना बनाई है और सिनेमा-गृहोंमें हिन्दीके विरुद्ध स्लाईडें चलाई हैं। "इंगलिश-एवर हिन्दी-नेवर" जैसे आत्मघाती नारे लगाये जाने लगे हैं। यही नारे यदि "तामिल एवर" के लगते तो किसीको आपत्ति नहीं होती। राष्ट्रकी एकताके लिए हिन्दी भाषी बड़ेसे बड़े बलिदानके लिए तत्पर हैं और इसीलिए इस सारे वितण्डावाद पर मौन हैं, पर इस मौन या धैर्यकी परीक्षा न ली जाय यही हमारा निवेदन है।

खण्ड प्रलय

अभी-अभी गत दो तीन मासमें देशके अधिकांश भागको भीषण बाढ़का सामना करना पड़ा। जनधन पशु धन एवं फसलोंकी जो हानि हुई है वह मात्र आंकड़ोंमें दर्शायी नहीं जा सकती। प्रकृतिके इस भीषण प्रकोपका सामना केन्द्र राज्य एवं स्वयंसेवी संस्थाओंने यथा-सम्भव किया भी, सेनाके जवानोंके प्रति हम कृतज्ञता ज्ञापन करना भी कैसे भूल सकते हैं।

इन सबके पश्चात् प्रश्न उठता है कि बाढ़के प्रकोपका स्थायी हल हमारी सरकार क्यों नहीं ढूंढ़ती, जबकि बाढ़से विनाश अब प्रतिवर्ष होने लगा है। ज्योतिर्विज्ञानके आधार पर एक वर्ष पूर्व यह भविष्यवाणी कर दी गई थी कि "इस वर्ष प्रकृतिप्रकोप बाढ़ भूकम्प समुद्री तूफान और यान दुर्घटनाओंसे अधिक हानि होगी।" जुलाईमें सिंह राशिमें चतुर्ग्रही योगके फलमें लिखा था। 'प्लावयन्ति महींसर्वां रुधिरेण जलेन वा।' (देखिये सं० २०३५ का 'श्रीविश्व विजयपंचाग' पृष्ठ १८ और ४८)

फिर भी हमारे नेता समय रहते कदम क्यों नहीं उठाते? क्या हुआ 'विश्वेश्वरैया योजना' का? क्यों नहीं देशकी सभी नदियोंके पानीके विकासकी उचित योजना बनाते? देशके जन-जीवनसे कब तक हमारी नौकर-शाही खिलवाड़ करती रहेगी? ऐसे अनेकों प्रश्न बाढ़से भुक्त-भोगी लोग हवाई जहाज एवं हेलिकोप्टरोंसे बाढ़का निरीक्षण करने वालोंसे कर रहे हैं। देशकी धर्मप्राण जनतासे हमारा अनुरोध है कि वे कमसे कम एक दिनकी आय इन पीड़ित भाइयोंको समर्पित करके मानव-धर्मका पालन करें।

त्रैमासिक व्यापार-दिग्दर्शन

[लेखक :—ज्योतिषरत्न श्री राजाराम जैन पर्जन्य एवं अर्घकाण्ड-वाचस्पति मैंनपुरी (उ०प्र०)

कार्तिक मास

१७ अक्टूबरको १२।३७ बजे शनिसे संदृष्ट श्री सूर्यदेव (शुक्र+मंगल+बुधसे युक्त होकर) मंगलवारको तुला राशिस्थ होंगे, फलतः बायु वेग होकर गुड़ खांडमें चमत्कारिक अच्छी तेजी (तुलार्क काले मेषे चन्द्र) तिलहन दलहन भी विशेष तेज होंगे किन्तु चावलमें मन्दा होगा। आज सूर्य-चन्द्र पर कुण्डल जहां कहीं भी देखने सुननेमें आवे तो तेजीका पक्का चान्स बनेगा, किन्तु तुलांशे गुरु-सूर्य ता० १९ तक मन्दीका झटका भी देंगे। कृष्णा २ मंगलवार संयोगी गांवमें बिजली कनैक्शनकी खराबीसे जगह-जगह अग्निकाण्ड भी सुनाई देंगे। ता० १८ को शनि दृष्ट राश्यन्त पर तुला राशिमें वक्री शुक्रसे बादल वर्षा वायुवेग अथवा शीत-वृद्धि, रुई पाट रेशम सूत कपड़ा कागज़ काली-मिर्च ऊन सोना-चांदी सर्वधातु तिलहन-दलहन मक्का गेहूँमें तेजीका दौर, किन्तु आज बुध-गुरु केन्द्र विदेशी खबरों पर चांदीको मंदा करेगा। शेयर्स भी मन्दे होंगे। ता० २० को पश्चिमोदयी बुधसे वादल-चाल वायुवेग शीत-वृद्धि, यहांसे चली लाइन ता० २३ को सभी वस्तुओंके रुखको एक-दम बड़े जोर-शोरसे बदल देगी। रातसे बृश्चिकांशे गुरु-सूर्य ता० २३ तक सोना चांदी सर्वधातु गुड़ खांड दलहन तेज, तिलहन मन्दे भी हो सकेंगे। ता० २१ चांदी शेयर्स तेज, कृष्णा ५ आर्द्रा रविवारी संयोगीसे कहीं-कहीं उत्पात हड़ताल-आन्दोलन, देशी घी गेहूँमें घोर तेजी, शीतकाल में कहीं-कहीं अतिवृष्टि-अनावृष्टि, आज मंगल शुक्रयुतिसे शेयर्स और चांदीमें मन्दा होगा। ता० २३ को सभी वस्तुयें मन्दी, ता० २४ को स्वात्यां रविसे हल्दी कालीमिर्च सुपारी रुई पाट रेशम सूत ऊन कपड़ा कागज़ तिल तेल सींगदाना (मूंगफली) कपासिया (बिनौला) अलसी एरण्डा सरसों तेज। कृष्णा ८ मंगलवारी पुष्य संयोगीसे सभी वस्तुयें तेज, आज ही गुरुसे संदृष्ट बृश्चिके भौमसे (**शनि भौमके राश्यात्मक केन्द्रसे ४ दिसम्बर तक महोत्पात ससदमें खलबलो**) कहीं बादल चाल तो कहीं वर्षा भी होगी। काली व लालमिर्च गुड़ खांड लौंग दालचीनी कत्था सोना चांदी तांबा जस्ता पीतल स्टेनलैस स्टीलमें तेजी या भयानक चाल, चांदीमें अस्थायी मन्दा भी सम्भव, शेयर्समें अच्छी चाल, तिलहन-दलहन में मन्दा भी सम्भव है। उड़द मूंग मोठ रमास (लोबिया) मार्केटमें आते ही खरीदें। ता० २५ को शेयर्स चांदी विदेशी खबरों पर तेज होंगे। ता० २७ को २ बजेसे मकरांशे राहु-सूर्यसे ता० ३० तक चांदी तेज, रुईके साथकी वस्तुयें, तिलहन मन्दे करेंगे। ता० २८ चन्द्र-शुक्र त्रिरेकादशसे चना बिनौला तेज खुलकर मन्दे, रातको शी० अनुभे भौमसे तिलहन-दलहन लालमिर्च चावल रुई पाट रेशम ऊन गेहूंमें मन्दीका झटका आवेगा। ता० २९ कृष्णा १३ रविवारीसे जौ गेहूं आगे तेज, रात को बृश्चिके बुध होकर गुरु दृष्ट मंगल+बुध

योग साथ ही शनि दृष्ट शुक्र+सूर्ययोगसे १३ नवम्बर ७८ तक वायुवेग तिलहन-दलहन गुड़ खांड दिनोंदिन तेज होते रहेंगे। ता० ३० को शेयर्स चांदीके साथ सभी वायदे तेज, ता० ३१ संक्रान्ति और अमावस मंगलवारी होनेसे चांदी अन्न तिलहन-दलहन एकदम विशेष तेज, किन्तु मंगलवारी दिवाली होनेसे संवत् १९९४।२००८। २०११।२०१४ की भांति आगे फाल्गुन मासमें भयानकतम ऐतिहासिक मन्दा होनेकी आशंका है, अतः भड़साली व्यापारी सावधान रहें। कहा भी है :—

"मंगलवारी पै दिवारी।
हँसे किसान रोय व्यापारी॥

सोनाको खरीद कर व्यापारियोंका साहस बढ़ा है, यह मध्यलोककी कौन्सिलका जजमेण्ट था, किन्तु मंगलवारी दिवाली तो आकाशी कौन्सिलके जजमेण्टके आगे तो सभीको सर झुकाना पड़ता है। गताङ्कमें हमारी लेखनी की सत्यता बादल-वर्षा जल प्रलयका चमत्कार सन् १९४९ की भांति देखा होगा। शुक्ला १ बुधवारी १ नवम्बर ७८ से रुई पाट रेशम बारदाना सोना चांदी सर्वधातु गेहूँ ज्वार, बाजरा, मक्का दाल अन्न कठोल सुबादाणा तिल तेल अलसी (तीसी) एरन्डा सरसों सींग-दाणा रमतिल्ली तोरिया सुपारी कालीमिर्च आदि आगे मार्गशीर्ष मासमें मन्दे, यह योग संवत् २००८।११।१४।१५ के पश्चात् पुनः बना है, बड़े दिनसे तेजी होकर माघ शुक्लासे पुनः मन्दा चलकर होलीसे तेजी चलनेकी आशा है। शुक्ला १ बुधवारीसे चांदी मन्दी सम्भव, गेहूँ तेज, आज ही १ नवम्बरको प्रतिपदा तिथि स्वाति नक्षत्रके दिन शुक्रदेव तुला राशि विशाखा नक्षत्रमें लोप (अस्त) होंगे, अतः विश्वके अथवा देशके किसी महान् नेताका पतन वा अवसान। उपर्युक्त सभी वस्तुओंमें तेजी लाने वाला कुयोग है शुक्ला १ बुधवारीके साथ शुक्ला ५ भी समर्थक है, रुई पाट विशेष तेज होंगे। १४ नवम्बरको उदय होकर यहांसे चली लाइनको एकदम बदल भी देगा। मासारम्भसे राहुका राश्यन्त भी भयानक चाल देगा। २ नवम्बरको सवेरे सायन धनुषि भौम भी तेजी का समर्थक है, आज ही सायं गुरुवारा उत्तर श्रृङ्गी चन्द्रोदयकालमें ता० ३० अक्टूबरको चली व्यापारिक चाल आजसे बदलेगी। शुक्ला ५ रविवारी (विक्रम संवतेश्वर) शनिसे दक्षिण भारत गुजरातमें महोत्पात अन्नादि तेज, ता० ५।१४ को पापवारोंमें योगोंका क्षय (२ योग क्षय) देशी घीको तेज करेगा। शुक्ला १३ रविवारीसे महोत्पात महान् दुष्काण्ड, गेहूं ज्वार बाजरा मक्का तेज करेगी। तिलहन दलहन भी तेज होंगे। कार्तिकी पूर्णिमा भरणी नक्षत्र और मंगलवार संयोगी शीत कालमें तिलहन, दलहन अन्नादिको एक बार विशेष तेज कर देगी, किन्तु आज ही कार्तिक शुक्ला १ को अस्त हुआ स्वाति नक्षत्र गत शुक्र, शनि दृष्ट होकर भरणी नक्षत्रके दिन उयय होगा, फलतः ३ मास तक दक्षिणी हिन्दमें कहीं-कहीं वर्षा नाश, तो कहीं बाँध फटने अथवा वर्षासे जलप्रलय शुक्लपक्षमें शुक्रका अस्तो-दय, अतः कहीं प्रजा विग्रह तो कहीं हड़ताल आन्दोलन गोली काण्ड तो कहीं सैन्य संघर्ष युद्धादि काण्ड भी करा सकेगा। १।२ नवम्बर से चली व्यापारिक वस्तुओंकी लाइन ता० १४।

१५ से बड़े ही जोर-शोरसे बदलेगी ।

मार्गशीर्ष मास

कृष्णा १ बुधवारीसे आलू, प्याज लहसुन, अदरख, सोंठ, हल्दी गुड़ खांड तिलहन-दलहन तेज, किन्तु आज ही बृश्चिकस्थ मंगल पश्चिमास्त (शुक्रोदय, पश्चात् भौमास्त) सभी खाद्य वस्तुओंमें भयानक मन्दी सम्भव, १६ नवम्बर को ज्येष्ठायां भौमसे तेजी भी सम्भव, किन्तु आज ही सूर्यदेव गत संक्रान्तिसे वारात् ३ नक्षत्रात् ४ (४५ मुहूर्ता) माहेन्द्र मण्डलके नक्षत्रमें अस्तमें भौम एवं बुधसे युक्त गुरुसे पञ्चमस्थ (दृष्ट) होकर बृश्चिक राशिस्थ होनेसे इस संक्रान्तिमें ता० ३० तक बार-बार सामयिक सुवृष्टि होनेसे सभी खाद्य वस्तुओंमें अच्छा मन्दा आनेकी आशा है ।

ता० १९ को भौम शनि केन्द्रसे महोत्पात, व्यापारमें भी तूफानी चाल होगी । कृष्ण ५ की वृद्धिसे तेजी, ता० २९ को गुरु बुध वक्री (शुक्र पहलेसे वक्री) तीन शुभ ग्रह वक्री बादल वर्षा वायुवेग शीत-वृद्धि । सोना चांदी तांबा जस्ता, पीतल रुईके साथकी वस्तुओंके साथ कालीमिर्चमें भी मन्दा आवे तो आश्चर्य नहीं । ता० २८ को सायं ९।४२ बजे शनि दृष्ट मार्गी शुक्रसे बादल वर्षा वायुवेग, शीत-वृद्धि, रुई सूत पाट ऊन रेशम घी, चावल चांदी जस्ता मन्दे होंगे । ता० ३० को बुधास्त पश्चिम से ता० २६ को हुये मौसमी परिवर्तनके साथ शीत प्रकोप मार्केटकी चलती लाइनको बदल देगा । शुभवारी अमावससे आगे सभी वस्तुयें मन्दी, किन्तु संक्रान्ति और अमावस गुरुवारी चांदीके साथ सभी वस्नुयें भी तेज कर सकेगी ।

ता० १ दिसम्बर शुक्ला १ को सायं शुक्रवारा चन्द्रोदयसे चांदी रुई पाट रेशम सूत ऊन कागज तेज, ता० ७ शुक्ला ३ के क्षयसे देशी घी मूंग उड़द मोठ रमास (लोविया) के साथ अन्य दलहन तिलहनमें तेजी होगी । सन् १३९९ हिजरीका प्रारम्भ शनिवारको होनेसे शनिवारा गुर्रा (शनि+राहुका संयोग) विक्रम संवत् भी शनिवारको ही प्रारम्भ होनेसे यवनों पर घोर संकट, यवन नेताओं पर आक्रमणादि से सर्वनाश, लूटमार चोरी डाका आदि पशु मशीनरी सामान साईकल स्कूटर, मोटरकार आदि तेज, आबादीमें फेरफार (स्थानान्तर) गेहूं मन्दा ज्वार बाजरा मक्का गुड़ (गोल) घी कपास सोना चांदी सर्वधातुमें तेजी लावेगा । ता० ८ को प्रातः मंगल राहु केन्द्रसे महोत्पात सभी वस्तुयें तेज, आज ही ९।४५ बजे शीघ्री धनुषि भौम होते ही (सूर्य+बुध योग) मन्दा सम्भव, अथवा मन्दा होकर आगे तेजी होगी । ता० ५ की रातको सूर्य-बुधकी अन्तर्युति १ सप्ताह पूर्वसे चली आने वाली मन्दीको समाप्त करके आज सभी वस्तुओंका रुख बदल देगी । २ मासमें गेहूँ अन्नादि तेज होंगे, ता० ६ को सूर्य शनिके अंशात्मक केन्द्रसे आज चांदी मन्दी, अन्य सभी वायदे तेज, ता० ७ को २।३८ बजे गुरु-शुक्र केन्द्रसे सभी वायदे तेज, ता० ८ को १२ बजेसे ता० ११ तक बादल वर्षा वायुवेग या शीत वृद्धि, चांदी तेज, ता० ९ को सायं बुध-गुरु त्रिकोण मन्दी से तेजी करेगा । ता० १० को सायं सूर्य नेपच्यून युतिसे वर्षा और मन्दीका प्रभाव होगा । ता० ११ को गुरु दृष्ट पूर्वोदयी बुध वस्तुओं की चलती लाइनमें भयानक परिवर्तन, यहां

तक जो वस्तुयें तेज हो चुकीं होंगी उनमें मन्दी तथा जो मंदी हो चुकी होंगी उनमें तेजी लावेंगे (तेजीकी आशा है)। इसका यही स्वाभाविक गुण है। किन्तु मार्गशीर्ष मासमें उदय हुआ बुध प्रायः तेजी लाता है। ता० १२ की रातको सायन मकरे भौम चनाके साथ अन्य दलहन भी मन्दे हो सकेंगे। ता० १४ को सायं सूर्य-राहु केन्द्रसे तिलहन चांदी वायदे तेज होंगे। मार्गशीर्ष पूर्णिमाको मृगशिरा नक्षत्र चांदीके साथ अन्य वायदे भी मन्दे करेगा।

पौष मास

इस मासमें ५ शुक्रवारसे अन्न सस्ता, प्रजा सुखी, १५ दिसम्बरको सायं या रातको गुरु दृष्ट मार्गी बुधसे ता० ११।१२ को रुई पाट रेशमके साथ सभी वस्तुओंमें मन्दी लावे आश्चर्य नहीं बाजारकी चाल देखिये। ता० १९ को श्रीसूर्यदेव गत संक्रान्तिसे बारात् २, नक्षत्रात् ३;१५ मुहूर्ता मंगलसे युक्त होकर शुक्रवार में चन्द्रमासे प्रतियोग करते हुये वारुण मण्डलमें धनु राशिस्थ होंगे, फलतः श्रेष्ठ मन्दा। भौम +सूर्य योगसे सोना चांदी सर्वधातु तेज होगी। कृष्णा ५ मंगलवारीसे यदि उपर्युक्त क्षेत्रोंमें वर्षा होवे तो उपजकी श्रेष्ठताके कारण तुरन्त मन्दा, तथा वैशाख मासमें भी अच्छा मन्दा लावेगी। ता० २० से वृश्चिकांशे गुरु-बुध ता० २४ को १ बजे बादल बर्षा, चांदी तेज होगी। कृष्णा ६ की वृद्धिसे तेजी, ता० ३० को शी० पूषायां भौम वर्षाकारक, अन्नादि मन्दे, सोना चांदी सर्वधातु शेयर्स चावल सींग-दाना तेज करेगा। ता० २५ को शनि वक्री (गुरु पहलेसे ही वक्री) बादल वर्षा वायुवेग, ओलापात हिमपात, शीत-वृद्धि, रुई पाट रेशम, सूत कपड़ा ऊन कालीमिर्च कागजमें अच्छा मन्दा, गुड़ खांड तिलहन-दलहन अन्नादि गेहूं ज्वार बाजरा मक्कामें खतरनाक लम्बी तेजी लाने वाला परीक्षित कुयोग है। सोना चांदी सर्वधातुमें भी भयानक चालसे तेजी निकलेगी, तम्बाकूकी खेतीका नाश, ता० २६ को शुक्र-हर्षल युतिसे चांदीके साथ सभी वायदे तेज, ता० २८ बुध-शनि केन्द्रसे वायदे मन्दे, कृष्णा १४ के क्षयसे मन्दीका झटका। कुहिया अमावस शुक्रवारी मूल संयोगीसे आगामी उपज महाश्रेष्ठ, विगत वर्षोंमें संवत् २०२१। २२।२४।२७ में मूल नक्षत्रके कारण आगे माघ शुक्लामें महोत्पात किसी महान् नेताका पतन वा अवसानके पश्चात् भयानक मन्दा ला चुकी है। यहां भी ऐसा ही कुछ होकर भयानक मन्दीसे व्यापारियों पर संकट आवेगा। शुक्ला १ शनिवारी शुक्ला १० रविवारी कालीमिर्च रुई पाट रेशम ऊन सूत कपड़ामें मन्दी, ता० ३१ बृश्चिकके शुक्र होते ही बुध+शुक्र (गुरु दृष्ट) ४ जनवरी तक गुड़ खांड गेहूं शेयर्स चांदीको साथ लेकर अच्छा मन्दा होगा। जनवरी सन् ७९ का प्रारम्भ रविवारको होने से राजकीय शासन सूत्र सुदृढ़ बनता जावेगा। शुक्ला ५ मंगलवारीमें चारों ओरकी वायु जहां भी चले तो आगे तिलहन-दलहन गुड़ खांडके भावोंमें भयानक तेजीका दौर चलेगा। शुक्ला ९ बुधवारीके क्षयसे रुई पाट रेशम सूत कपड़ा ऊन कालीमिर्च कागजमें भयानक सीधी चाल निकलेगी। ता० ४ को १।४० बजे धनुषि बुध होकर शीघ्री भौम+सूर्य+बुधयोग बना है। संवत् २०१८ में इसी कुयोगके अंशात्मक योगके फलस्वरूप ११ दिन (१५ दिसम्बर ६१ से ता० २६ तक) तेजी हुई

थी। तिलहन दलहन तेज, सोना मन्दा। सोना चांदी सर्वधातुसे तिलहन दलहन विपरीत दिशामें भी चल सकेंगे। ता० ८ से ता० १३ तक तुलांशे शनि-गुरुसे देशी घी उड़द तिलहन-दलहन तेज, किन्तु शुक्ला ८ में रेवतीका संयोग बादल सहित हो तो तिलहन-दलहनका स्टाक नहीं रखना चाहिए, किन्तु शी० भौम व्यापारकी सभी वस्तुओंमें तेजीका उछाला लावेगा। ता० ६ से ता० ११ तक मिथुनांशे केतु-बुधसे चांदी मन्दी, शुक्ला ११ को कृत्तिका नक्षत्रसे सोना होली तक तेज होता रहेगा। शुक्ला १३ की वृद्धिसे सभी खाद्य वस्तुयें देशी घीमें भी मन्दी, ता० १२ को सायं गुरु दृष्ट (प्रतियोग) शी० मकरे भौमसे बादल वर्षा वायुवेग तो कहीं शीत वृद्धि, तिलहन-दलहन घी रुई पाट रेशम ऊन सूत कपड़ा कागज कालीमिर्च ज्वार बाजरा चावल मन्दे, सोना चांदी सर्वधातुमें मन्दा सम्भव, खार द्रव्य सोडा किराना में भयानक चाल निकलेगी। लाभ-हानिका पूर्ण उत्तरदायित्व प्रयोक्ता महोदय अपने ही ऊपर जानकर बाजारकी स्थितिको भी देखते हुये अपनी शक्तिके ही अनुकूल कार्य करें।

त्रैमासिक व्यापार भविष्य

कार्तिकसे पौष तक

[लेखक :—श्री पं० ओंकारप्रसाद दैवज्ञभूषण, हापुड़ (उ०प्र०)

इन तीन महीनोंमें गागरमें सागर भरनेका हम प्रयत्न कर रहे हैं। लेख सूक्ष्म होगा पर व्यापारियोंको विशेष पथ प्रदर्शक होगा ऐसी हमें पूर्ण आशा है। कार्तिक सं० २०३५ में पांच मंगलवार साथ ही सुपीरियर लाइनका चलना तेजीका समर्थक है। अतः हम नीचे ३ माहकी तेजी मंदी लिख रहे हैं।

कार्तिक सं० २०३५ वि०

कार्तिक वदी पड़वाको मंगलवार होनेसे १० या १५ दिनमें ही चांदी सोना लोहा तांबा शेयर रुई कपासमें घटा वढी रहेगी। तथा धान्योंमें तेजी होगी। बदी चौथको बुधके उदय होनेसे जरूर ही १४ दिनमें सोना चांदी रुई सन नारियल जूट पाट बारदाना गुड़ खांड तिल तेल गूगलमें तेजी होगी। वदी ६ को सोमवार होनेसे १२ या १५ दिनमें चांदी सोना चावल रुई कपासमें तेजी होगी। वदी ८ को भौमवारके होनेसे १४ या २० दिनमें ही गेहूं चना चांदीमें भाव बढ़ जायेंगे। तथा गुड़ खांडमें मंदी होगी। वदी १२ शनिवारके होनेसे ८ दिनमें रुई कपास सूत सन सूती तथा ऊनी वस्त्रोंमें तेजी होगी, हल्दीमें मंदी होगी। दीपावली मंगलवारको होनेसे १५ या २० दिनमें गेहूं चना मटर तथा दालोंमें मंदी होगी। कार्तिक सुदीमें शुक्रास्तसे १४ या २० दिनमें ऊनी कपड़े सोना चांदी चावल गुड़ घी सूत तांबा तेल तिल तिलहन रुई कपास तेज होंगे। गूगल धान्योंमें मंदा। शुदी ४ को शनिवार होनेसे २० दिनमें अनाजों तथा दालोंमें तेजी होगी। चांदी रुई कपास तथा सफेद रंगकी

वस्तुओंमें मंदी होगी । सुदी ६ को चन्द्रवार होनेसे ८ या १० दिनमें ही रुई कपास सूत तथा सूती वस्त्रोंमें मंदी होगी । सुदी द्वादशीको शनिवार होनेसे सोना चांदी रुई कपास बिनौला में तेजी होगी । सुदी १२ को जेष्ठामें बुध होनेसे १ मासमें गेहूँ जौ चना मटर आदि खाद्य पदार्थोंमें भारी तेजी होगी । सोना चांदी रुई कपास तेल तिल सरसों तांबा ऊनी कपड़ों तथा चांदीमें तेजी होगी । धान चावल मंदा होगा । सुदी चौदसको चन्द्रवार होनेसे चावल सोना चांदी घी तेल तिल तिलहन अरण्डा सींगदाना गेहूँ जौ चनामें तेजी होगी । तथा नशीली वस्तुएं मंदी होगी । कार्तिककी पूर्णिमा गेहूं चना सोना व लाखमें आग लगा देगी ।

मार्गशीर्ष सं० २०३५

मार्गशीर्ष वदी दोयज संक्रान्ति गुरुवारको होनेसे १४ या २० दिनमें गेहूँ सोना जौ चना मटर उड़द मूंग मटरमें तेजी होगी । रुई चांदी कपास सूतमें मंदी होगी । इसलिए ज्येष्ठा भौम होनेसे तिल तेल अरण्डा सरसों अलसी तथा धान्योंमें तेजी होगी । वदी २ वक्री बुधके होनेसे ८ दिनमें ही गुड़ खांड चीनी चावल रस आदि तेज होंगे । वदी १२ को वक्री गुरु है इसलिए १४ या २० दिनमें सोना चांदी चावल सरसों तथा अफीम तेल तिल तिलहन अलसी सींगदाना शेयरमें मंदी होगी । वदी १४ को मार्गी शुक्र होनेसे १२ या १४ दिनमें सोना चांदी सरसों तेल तिलहन रुई कपास बिनौला जूट पाट बारदाना सन चावलमें मंदी होगी । सुदी ३ को ज्येष्ठा सूर्य होनेसे १८ दिन में धान्य चावल केशर चांदी कपास शेयर सूत बिनौला तथा सफेद वस्तुओंमें तेजी होगी । सुदी ५ मूलमें मंगलसे एक मासमें तिल तेल कपास गेहूं चना मक्का ज्वार बाजरा रुई कपासमें मंदी होगी । मार्ग.सुदी १२ बुधोदयसे ८ या १० दिनमें धान्योंमें तथा तेल तिल तथा कपासमें तेजी होगी । पंसारठकी वस्तुओंमें घटाबढ़ी रहेगी । अगर तेजी आगे तारीख पर न चली तो फिर मंदी जानें ।

पौष सं० २०३५ वि०

पौष वदी पड़वाको शुक्रवारसे ८ या १५ दिनमें । रुई कपास सूत सूती वस्त्रों, चांदी चावल तथा सफेद वस्तुओंमें मंदी होगी । वदी २ को धनु: संक्रांतिसे १० या १५ दिनमें कपास रुई धान कपड़ा चांदी सोना जूट पाट बारदाना में मंदी आयेगी । वदी ४ को विशाखा शुक्रके होनेसे १४ या २० दिनमें तिल तेल गुड़ हल्दी कपूर ऊनी वस्त्रों तथा चपड़ा सन पाट जूट व रदाना चांदी रुई कपास अफीम तेज होंगी । तथा गुड़ खांड मंदा होगा । सुदी ६ से ५ या १० दिनमें गुड़ खांड चना मटर तेज होगा । पौष वदीमें शनि वक्री होनेसे ८ दिनमें तिलहन अरण्डा सींगदानामें मंदा होगा । सुदी २ से १४ या २० दिनमें उड़द मूंग चावल रेशम गुड़ खांड कपास सूत तथा सूती वस्त्रोंमें तिल तेल अरन्डा सरसोंमें तेजी होगी । सुदी ६ से ३० दिनमें घी देशी वेजीटेबिल घी तेल तिलहन सरसों रुई कपास लालमिर्च लालचंदन तथा लाल वस्त्रोंमें तथा लाल वस्तुओंमें मंदी होगी । धान्यमें मंदा होगा । गुड़ खांडमें चटकी आयेगी, इस तिथिको दूसरे योगके कारण क्या १० दिन में ही चांदी सोना रुई शेयर रस गुड़ खांडमें तेजी होगी । धान्योंमें मंदी होगी । पौष सुदी पूर्णिमासी शनिवारी होनेसे चांदी सोना शेयर रुईमें घटाबढ़ी चलेगी । तथा पंसारठकी वस्तुओं में भाव सम रहेंगे । अनाजोंमें चटकी होगी । गुड़में तेजी होगी । मंदेमें लेकर तारुणी करना लाभदायक है ।

त्रैमासिक राशि भविष्य

(नवम्बर-दिसम्बर-१६७८, जनवरी १६७६)

[लेखक :—श्री ओंकारनाथ त्रिवेदी (उ०प्र०)—२२५००१.]

मेष

नवम्बर—यह मास सामान्य अच्छा है। व्यसनों-विलासों और आनन्द-विनोदमें समय बितानेकी ओर प्रवृत्ति रहेगी। नारी वर्गसे कलह-विवादके अवसर आ सकते हैं, सावधान रहना चाहिये। आलस्यमें समय बितानेका जी चाहेगा। श्रम उद्योग करनेमें मन न लगेगा। प्रयासोंमें सफलता और शत्रुओं बाधाओं पर विजय देने वाले योग विद्यमान हैं। एक निकट सम्बन्धी सहायता करेगा। लाभके लिये ७-८-१६-१७-२६-२७ ता० श्रेष्ठ हैं। प्राचीन धन या बकाया रकमकी प्राप्ति। दो छोटी रकमें हाथ आवेंगी, जिनमेंसे एक ३ ता० को मिल सकती है। विशेष व्ययके योग चलते रहेंगे, १०-११-१३ ता० में साव-धान रहें। पत्नीसे सुख भी मिलेगा और वैमनस्य भी होगा। दौड़धूप, चोट-चपेट सम्भाव्य। १-२-२६-३० ता० नेष्ट।

दिसम्बर—यह मास मध्यम फल वाला है। ऐसा प्रतीत होगा कि वातावरण आपके अनुकूल नहीं है। आशंकाएं आपको अशान्त रखेंगी। बहुत सम्भव है कि दुःस्वप्न भी दिखायी दें। श्रम और उद्योग करनेमें मन न लगेगा। थकानका अनुभव। नारीवर्गसे कलह-विवादके अवसर आ सकते हैं। एक-दो व्यक्ति सहयोग भी देगे। व्यापारमें उतार-चढ़ाव आवेंगे, योजनाओंमें कोई परिवर्तन करना पड़ सकता है। धन लाभके लिये १-५-६-१४-१६-२४-२८ तारीखें अच्छी हैं, १ और २८ ता० में प्राचीन धन या बकाया रकमकी प्राप्ति। उत्तरार्द्धमें अस्वाभाविक व्यय उठ खड़े होंगे। उत्सवों-दावतोंमें सम्मिलन। पत्नीसे सुख भी और विवाद भी। अप्रिय यात्रा। ८-१७ या १८-२७ ता० नेष्ट।

जनवरी—यह मास निश्चित रूपसे अच्छा है और सुधारोंकी सूचना देता है। कोई ठोस शुभ फल चाहे न मिले पर आपके चारों ओर का वातावरण अनुकूल हो जायगा। आत्म-विश्वास और कर्मशक्तिका उदय। शत्रुओं-पर विजय। प्रयासोंमें सफलता मिलने लगेगी। सहयोग देने वाले मित्र और परिजन मिल जायंगे। धन लाभके लिये १-२-३-६-१०-११-१२-१८-१६-२०-२१-२७-२८-२६-३० ता० श्रेष्ठ हैं, नवीन वस्त्र-वैभवकी प्राप्ति। अस्वा-भाविक व्यय होता रहेगा। व्यापारकी व्यवस्था में जमकर सुधार करेंगे। कार्यक्रमोंमें सम्मिलन, पत्नीसे सहयोग मिलेगा। दौड़धूप व्यस्तता में दिन बीतेंगे। ३-४-१४-२३ ता० नेष्ट।

वृषभ

नवम्बर—इस मासमें कोई भी ग्रह ऐसा नहीं है जिसके आधार पर विश्वासपूर्वक शुभ फलों की भविष्यवाणी की जा सके। प्रायः वैसी

ही परिस्थितियां रहेंगी, जैसी गत माससे चली आ रही है। आप एक द्विविधापूर्ण स्थितिमें रहेंगे। तुलनात्मक दृष्टिसे प्रथमार्द्ध कुछ अधिक अच्छा है। वातावरण संघर्षपूर्ण रहेगा। श्रम और उद्योग करनेमें मन न लगेगा। अन्तिम सप्ताहमें, उत्तार-चढ़ाव या परिवर्तन आवेंगे। सामान्य धन लाभ होगा, इस सम्बन्धमें १-२-३-१०-११-१२ १६-२०-२१-२९-३० ता० श्रेष्ठ हैं, असावधान रहने पर ऋण लेना पड़ सकता है। व्यापार सुधारनेका विचार करेंगे। पत्नीसे विवाद भी और सुख भी। दौड़धूप। उदर विकार। २७ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—यह मास संघर्षपूर्ण है। घर-बाहर कलह-विवादके योग आवेंगे। प्रयत्न करने पर उनसे बचा भी जा सकता है। सम्भव है कि अपने ही लिये कोई अहितकर काम कर बैठ। श्रम और उद्योग करनेके सुयोग कम मिलेंगे। उत्तरार्द्धमें कार्यकारी जीवनमें उतार-चढ़ाव आवेंगे। सामान्य धन लाभ, इस सम्बन्ध में १-७-८-९-१६-१७-१८-१९-२६-२७-२८ ता० अच्छी हैं, सम्भव है कि २ या ३-११-२१-३० भी अच्छी रहें। उत्तरार्द्धमें अपनी व्यापारिक योजनाओंमें कोई सुधार करेंगे। भ्रमण-मनोरंजन और खानपानके अवसर मिल जायंगे। दौड़धूप करनी ही पड़ेगी। उदर विकार। चोट-चपेट सम्भाव्य। २४ ता० नेष्ट।

जनवरी—शुभ फलोंसे युक्त होने पर भी इस मासको अच्छा नहीं कह सकते। वही संघर्षपूर्ण परिस्थितियां चलती रहेंगी जैसी गत माससे चलती जा रही है। यह शुभ सन्देश दिया जा सकता है कि अगला मास अच्छा है। कलह-विवादके अवसर आ सकते हैं। कार्यकारी जीवन अस्त-व्यस्त सा रहेगा। आलस्य का अनुभव। एक पुराना मित्र सहयोग देगा। सामान्य धन लाभ होगा, ५-१५-२४ ता० अच्छी हैं, आशा है कि ६-७-१६-१७-२५-२६ भी अच्छी रहेंगी, प्राचीन धन या बकाया रकमकी प्राप्ति। व्यापारिक योजनाओं में कोई परिवर्तन करनेका विचार करेंगे। पुलिस और टैक्स विभाग वालोंसे सावधानी अपेक्षित है। यात्रा और दौड़धूप अवश्य। २० या २१ ता० नेष्ट।

मिथुन

नवम्बर—यह मास पर्याप्त अच्छा है। उन्नति-प्रगतिकी योजनाओंको कार्यरूपमें परिणत करेंगे। सहयोग देने वाले व्यक्ति मिल जायंगे। विरोधी पराभूत होंगे। प्रयासोंमें सफलता प्राप्त होगी। भविष्यको सुव्यवस्थित करनेके लिये ग्रहस्थिति अनुकूल है। अन्तिम सप्ताहमें योजनाओंमें कुछ परिवर्तन करेंगे। सफलता पानेके लिये २-११-२०-३० ता० अनुकूल है। इस सम्बन्धमें २-३-४-५-११-१२-१३-१४-२०-२१-२२-२३-२४ ता० श्रेष्ठ हैं। आकस्मिक लाभ, नवीन वस्त्र-वैभव-सम्पदा। व्यापार बढ़ाने या किसी नयी योजनाके लिये नकद या मालके रूपमें ऋण लेंगे। उत्सवों दावतों-मंगलकार्योंमें सम्मिलन, हर्षदायक समाचार। कुटुम्बके सुख। प्रेम सम्बन्धमें सफलता। एकाध यात्रा। २५ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—यह मास अच्छा है। अपने महत्वपूर्ण काम इसी अवधिमें बना लेने

चाहिये। आपकी व्यक्तिगत समस्याएं सुलझ जायंगी। सहयोग देने वाले मित्र और महत्वपूर्ण व्यक्ति मिलेंगे। असुविधाके होते हुए भी उत्साहपूर्वक उद्योग करेंगे। प्रयासोंमें सफलता मिलेगी। कामनाएं पूर्ण होंगी। मित्रों सम्बन्धियोंसे कलह-विवाद सम्भाव्य। धन लाभके लिये १-२-३-६-१६-२०-२१-२८-२९-३० ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ७-८ १६-१७-१८-२६-२७ भी अच्छी रहेंगी, दो आकस्मिक लाभ सम्भाव्य। व्यापारको बढ़ानेके लिये बाहरी सहायता मिलेगी। समाजमें मान, उत्सवोंमें सम्मिलन। प्रेम-सम्बन्धमें सफलता। उदर विकार। २२ ता० नेष्ट।

जनवरी—यह मास शुभ फलोंसे युक्त है किन्तु उनका अनुभव आप शायद ही कर सकें। कारण है कि आपकी रुचि व्यसनों-विलासोंमें रहेगी और अकारण कलह-विवादमें उलझ जायंगे। समस्याओंको सुलझानेके स्थान पर इनसे दूर भागनेका विचार करेंगे। ६-१६-२५ ता० अनुकूल हैं। धन लाभके लिये ३-४-५-६-१३-१४-१५-१६-२२-२३-२४-२५-३१ तारीख श्रेष्ठ हैं, एक-दो आकस्मिक लाभ सम्भाव्य, उत्तरार्द्धमें प्राचीन धन या बकाया रकमकी प्राप्ति। कष्टप्रद व्ययसे बच न सकेंगे। व्यापार की स्थिति अच्छी होने पर भी कुछ उलझी हुई सी रहेगी। पुलिस और टैक्स-विभाग वालों से सावधान रहना चाहिये। ज्वर या चोट-चपेटसे कष्ट। १८ ता० नेष्ट।

कर्क

नवम्बर—यह मास सामान्य अच्छा है। बौद्धिक उलझनें उत्तरार्द्ध में बढ़ेंगी। साथ ही आनन्द-विनोदके कई अवसर प्राप्त होंगे। सगे-सम्बन्धियोंसे विवादके अवसर आ सकते हैं। २-३ मित्र अच्छा सहयोग देंगे। प्रयासोंमें सफलता देने वाले योग विद्यमान हैं। एक व्यक्ति विरोध करता रहेगा। भविष्य कुछ अनिश्चित सा प्रतीत होगा। धन लाभके लिये ५-७-१४-१६-२३ या २४-२६ ता० श्रेष्ठ हैं, सम्भव है कि ४-१३-२२ भी अच्छी रहें। मासान्तमें कुछ अस्वाभाविक व्यय उठ खड़े होंगे। व्यापारकी प्रगति अवरुद्ध सी रहेगी। घरमें उत्सव या मंगल कार्य। प्रेम सम्बन्धमें आंशिक सफलता। उदर विकार। दौड़धूप करनी पड़ेगी। २२ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—यह मास सुधारोंकी सूचना देता है। कुछ स्थायी और जटिल समस्याएं पूर्ववत् रहेंगी। फिर भी जीवन सफलताकी ओर प्रगतिकी ओर बढ़ेगा। बौद्धिक उलझनें धीरे-धीरे घट जायगी। बाधाओं पर विजय। सगे-सम्बन्धियोंसे विवादके अवसर कई बार आवेंगे। आपमें नया उत्साह जाग उठेगा। हो सकता है कि उद्योग करनेके स्थान पर आप व्यसनों-विलासोंमें समय बिताने लगें। यदि ऐसा हुआ तो आगामी कई मासों तक पछताना पड़ेगा। धन लाभके लिये ४-१३-२३ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि २-३-११-२१-३० भी अच्छी रहेंगी. आकस्मिक लाभ सम्भाव्य। अस्वाभाविक व्यय सामने आवेंगे। घरमें कोई छोटा उत्सव। दौड़धूप करनी पड़ेगी। २० तारीख नेष्ट।

जनवरी—यह मास मिश्रित फल वाला है। तुलनात्मक दृष्टिसे प्रथमार्द्धको कुछ

अधिक अच्छा कह सकते हैं। आपकी रुचि व्यसनों और मनोरजनोंमें रहेगी। उत्तरार्द्ध में कलह-विवादके अवसर आवेंगे पर साथ ही आपमें नये साहस और आत्मविश्वासका उदय होगा। एक पुराना मित्र सहयोग देगा। धन लाभके लिये १-६-१६-२८ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ७-१७-२६ भी अच्छी रहेगी। कष्टप्रद व्ययसे बच न सकेंगे। व्यापारमें सुधार करेंगे। टैक्स विभाग वालोसे सावधान रहना चाहिये। घरमें कोई छोटा मंगल कार्य। प्रेम-सम्बन्धमें आंशिक सफलता। उदर विकार। दौड़धूप अवश्य। १६ ता० नेष्ट।

सिंह

नवम्बर—यह मास संघर्षपूर्ण है। गत मासमें जो समस्याएं दबने लगी थीं या उनके घटनेकी आशा उत्पन्न हुई थी वे फिर उभर सकती हैं। परिस्थितियोंमें ऐसा मोड़ आ सकता है, कि आपको अपनी योजनामें परिवर्तन करना पड़े। आशंकाएं अशान्त बनेगी। तुलनात्मक दृष्टिसे देखें तो प्रथमार्द्ध अधिक अच्छा है। मित्रों-परिजनोंसे थोड़ा-बहुत सहयोग अवश्य मिलेगा। धन लाभके लिये ५-६-७ १३-१४-१५-२३-२४-२५-२६ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ३-१२-२१ भी अच्छी रहें। किन्तु लाभकी तुलनामें व्ययके योग प्रबल हैं, १-१०-१६-२६ ता० में सावधान रहें, एक विशेष व्यय या हानिके योग भी हैं। टैक्स विभाग वालोंसे सावधानी अपेक्षित है। घर-परिवारके सुख, एक छोटा उत्सव, यात्राएं अवश्य। एक अप्रिय समाचार। अनिद्रा और दुःस्वप्न। २० ता० नेष्ट।

दिसम्बर—यह मास कुछ असुविधापूर्ण है। चिन्ताएं समस्याएं और आशंकाएं चलती रहेगी। पर यह तो कई मासोंसे चल रही है और आप उनसे सुपरिचित हैं। उद्योग करने के हौसले बने रहेंगे, पर आपका दृष्टिकोण निराशावादी रहेगा। मासान्त होते-होते सुधारों की सम्भावनाएं जन्म लेने लगेंगी। प्रयासोंमें सफलता पानेके लिये ४-१३-२३ ता० अनुकूल हैं। धन लाभके लिये २-३-४-११-१२-१३-२१-२२-२३-३१ ता० श्रेष्ठ हैं। विशेष व्ययके कारण लाभका पता न चलेगा। ७-८-१६-१७-१८-२६-२७ ता० में सावधान रहें। व्यवसाय को नये रूपमें चलानेका विचार करते रहेंगे। घरमें उत्सव। छोटी-छोटी यात्राएं होंगी। उदर विकार और शिरमें पीड़ा। १७ ता० नेष्ट।

जनवरी—कुछ स्थायी समस्याएं चलती रहेंगी और बीच-बीच परेशान भी करेंगी। साथ ही कठिनाइयों और बाधाओं पर विजय देने वाले योग उत्तरार्द्धसे पूर्व ही आरम्भ हो जायंगे। कई समस्याएं सुलझ जायंगी। चिन्ताएं घटेंगी। नयी आशाओंका उदय होगा। व्यसनों-विलासोंसे बच सकें तो जीवनका नवनिर्माण कर सकते हैं। सहयोग देने वाले मिलेंगे। धन लाभके लिये १-८-६-१८-१६-२७-२८ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ७-१७-२६ भी अच्छी रहेंगी। व्यापारको सुधारनेके लिये बाहरी सहायता मिल जायगी। उत्सवोंमें सम्मिलन। गृहस्थ सुखोंमें बाधाएं, कष्टप्रद यात्रा सम्भाव्य। ३ या ४ ता० नेष्ट।

कन्या

नवम्बर—यह मास प्रगतिकी सूचना देता

है। प्रफुल्लित करने वाली घटनाएं भी होंगी उत्साहमें वृद्धि। उद्योग करनेमें रुचि लेंगे। सहयोग देने वाले मिल जायंगे। कामनाएं पूर्ण होंगी। धन लाभके लिये ३-५-१२-१४-२१-२३ या २४ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि १-८ १०-१५-१७-१६-२७-२६ भी अच्छी रहेंगी, कोष वृद्धि सम्भाव्य, नवीन वस्त्र-वैभव-सम्पदा। नयी योजनाके साथ व्यापार बढ़ेगा। उत्सवों-दावतोंमें सम्मिलन, हर्षदायक समाचार। जीवनको सुधारने-संवारनेका प्रयत्न करना चाहिये। गृहसुखोंकी प्राप्ति। छोटी-सुखद यात्राएं। १७ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—यह मास सुधारोंकी सूचना देता है। प्रथमार्द्धको अधिक अच्छा कह सकते हैं। अवरोध दूर हो जायंगे, किन्तु उत्तरार्द्धमें उत्साह कुछ घट जायगा। प्रयासोंमें सफलता मिलेगी। कामनाएं पूर्ण होंगी। धन लाभके लिये १-६-१६-२८ श्रेष्ठ हैं। आशा है कि २-३-७-११-१६-२१-२६-३० भी अच्छी रहेंगी, एक-दो छोटे आकस्मिक लाभ। विशेष व्यय और हानिके योग पूर्ववत् चलते रहेंगे। व्यापार बढ़ेगा। समाजमें मान, उत्सवोंमें सम्मिलन, हर्षदायक समाचार। परिवार-कुटुम्बमें मंगल कार्य। पत्नीसे सहयोग सुखोंकी प्राप्ति। छोटी यात्राएं। १४ या १५ ता. नेष्ट।

जनवरी—यह मास सामान्य अच्छा है। उत्तरार्द्ध पहुंचते-पहुंचते कुछ बौद्धिक उलझनें उत्पन्न हो जायंगी। क्रोध और खीझको नियन्त्रणमें रखना चाहिए। परिवार और निकट सम्पर्क वालोंसे कलह-विवाद। व्यसनों में रुचि। उद्योग करनेमें विशेष रुचि न रहेगी, फिर भी सफलता देने वाले योग विद्यमान हैं। धन लाभके लिये ५-१५-२४ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ३-७-१३-१७-२२-२६ भी अच्छी रहेंगी, व्यापार मन्द गतिसे चलेगा। पुलिस और टैक्स विभाग वालोंसे सावधान रहना चाहिये। मनोरंजनके अवसर मिल जायंगे। सामान्य सुखोंकी प्राप्ति। ज्वर या उदर विकार सम्भाव्य। मासान्तमें एक प्रिय व्यक्ति से भेंट। ११ ता० नेष्ट।

तुला

नवम्बर—यह मास अच्छा है। कार्यकारी जीवनमें कुछ अवरोध रहेंगे और न होंगे तो उत्तरार्द्धमें उत्पन्न हो जायंगे, उनका प्रभाव व्यापार पर पड़ेगा। मित्र और महत्वपूर्ण व्यक्ति सहयोग देंगे। कामनाएं पूर्ण होंगी, आत्मविश्वास बढ़ा हुआ रहेगा। धन लाभके लिये ३-५-१२-१४-२३ या २४ ता० श्रेष्ठ हैं, आकस्मिक लाभ सम्भाव्य, उत्तरार्द्धमें कुछ विशेष व्यय सामने आवेंगे और कुछ विशेष लाभ भी होंगे। २५ ता० के आसपास जीवनमें उतार-चढ़ाव, समाजमें प्रभाव वृद्धि, उत्सवोंमें सम्मिलन, सुसमाचार। घर या कुटुम्बमें कोई मंगल कार्य हो सकता है। दौड़धूप करनी ही पड़ेगी। १५ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—यह मास अच्छा है। जीवनमें कुछ कठिनाइयां रहेंगी। किन्तु आपके उत्साह और स्वबाहु बल पर विश्वासमें निरन्तर वृद्धि होती जायगी। सहयोग देने वाले मित्र और प्रियजन मिल जायंगे। कामनायें पूर्ण होंगी। जीवनके नवनिर्माणके लिये ग्रहस्थिति अनुकूल

है। धन लाभके लिये १-२-८-९-१०-११-१७-१८-१९-२०-२१-२७-२८-२९-३० ता० श्रेष्ठ हैं, दो आकस्मिक लाभ भी होंगे जो २१ और २८ तारीखोंमें हो सकते हैं। व्यापारमें सन्तोषजनक प्रगति होगी। सामाजिक वातावरण आनन्द-विनोदसे परिपूर्ण रहेगा। उत्सवों-मंगल कार्यों में भाग लेंगे। पारिवारिक सुखोंकी प्राप्ति। १२ ता० नेष्ट।

जनवरी—यह मास सामान्य अच्छा है। अपने महत्वपूर्ण काम पूर्वार्धमें बना लेना चाहिये। उत्तरार्द्धमें नयी समस्याएं आवेंगी और उत्साह घट जायगा। जीवन अव्यवस्थित सा रहेगा। धन लाभके लिये ७-१७-२६ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ४-५-१४-१५-२३-२४ भी अच्छी रहेंगी, एक छोटा आकस्मिक लाभ। विशेष व्यय होता रहेगा, ३-११ या १२-२१-३० ता० में सावधान रहना चाहिये। व्यापार को सुधारनेके लिये जो योजनाएं आपने बनायी थी उन्हें कुछ समयके लिये रोकना पड़ेगा। पारिवारिक सुखोंमें बाधाएं उठ खड़ी होंगी। घरमें विवाद। उत्सवादिमें सम्मिलन। सुसमाचार। उदर विकार या चोट-चपेट। अप्रिय दौड़धूप। ८ ता० नेष्ट।

वृश्चिक

नवम्बर—यह मास मिश्रित फल वाला है। प्राय: वैसी ही परिस्थितियां रहेंगी जैसी गत माससे चली आ रही हैं। उत्तरार्द्धमें कुछ परिवर्तन आवेंगे जो आपके निजी भाग्यानुसार अच्छे या बुरे हो सकते हैं। क्रोध और खीझमें वृद्धि। मित्रोंसे सहयोग मिलेगा। शुभ स्वप्न दिखायी देंगे। प्रयासोंमें सफलता। धन लाभ के लिये ७-१६-२६ ता० श्रेष्ठ हैं। सम्भव है कि १-८-१०-१७-१९-२७-२९ भी अच्छी रहें, एक छोटा आकस्मिक लाभ। नवीन वस्त्र-वैभव। विशेष व्ययसे बच न सकेंगे। व्यापार को सुधारनेमें पूंजी लगावेंगे। समाजमें प्रतिष्ठा की वृद्धि, एक सुसमाचार, सुखोंमें कुछ अवरोध रहेंगे। यात्राएं होंगी। १३ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—यह मास सामान्य अच्छा है। आप प्रयत्न करें तो इसे और भी अच्छा बना सकते हैं। बीच-बीच क्रोध और खीझका अनुभव। निकट सम्पर्क वालोंसे कलह-विवाद के अवसर आ जायंगे। उत्तरार्द्धमें कार्यमें अवरोध आवेंगे, सम्भव है कि आपको अपनी योजनाओंमें परिवर्तन करना पड़ जाय। शुभ स्वप्न दिखायी देंगे। जिनका फल अगले महीने प्राप्त होगा। मित्रोंसे सहयोग मिलेगा। किसी धार्मिकोत्सवमें भाग लेंगे। लाभके लिये ४-१३-२३ ता० श्रेष्ठ हैं, सम्भव है कि २ या ३-५-११-१४-२१-२४-३० भी अच्छी रहें। कारोबारमें पूंजी लगावेंगे। मनोरंजनके अवसर मिल जायंगे। यात्राएं होंगी। दिनचर्या अस्तव्यस्त। १० ता० नेष्ट।

जनवरी—इस मासमें शुभ फलोंमें वृद्धि होने लगेगी। ९ या १० ता० से आपमें चमत्कारिक उत्साह और स्वबाहु बल पर विश्वास जाग उठेंगे। बड़े मनोयोगसे उद्योग करेंगे। कामनाएं पूर्ण होंगी। सहयोग देने वाले व्यक्ति मिल जायेंगे। नयी योजनाके साथ व्यापार बढ़ेगा। स्थायी साधनोंसे धन लाभ, इस सम्बन्धमें १-९-१८-१९-२७-२८ ता० श्रेष्ठ

हैं, आशा है कि २-३-५-७-१०-११-१२-१५-१७-२०-२१-२४-२६-२९-३० भी अच्छी रहेंगी, समाजमें प्रभाव वृद्धि, उत्सवोंमें सम्मिलन, सुसमाचार। स्वास्थ्यमें सुधार। छोटी सफल यात्राएं। ६ ता० नेष्ट।

धनुः

नवम्बर—इस मासमें व्यक्तिगत रूपसे एक घिराव जैसी स्थितिमें रहेंगे। मासान्तमें कुछ उलझाव आ जायंगे। आशंकाएं आपको अशान्त बनावेंगी। अनिद्रा और दुःस्वप्न। विरोधी सक्रिय रहेंगे पर कुछ विगाड़ न सकेंगे। शत्रु-मित्रमें भेद कर पाना कठिन होगा। दो प्रभावशाली व्यक्ति सहयोग देंगे। धर्म और सत्कर्मों पर अनास्था। प्रयासोंमें सफलता देने वाले योग विद्यमान है। धन लाभके लिये १-५-१०-१४-१९-२३ या २४ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ७-९-१६-१८-२६-२८ भी अच्छी रहेगी। विशेष व्यय और हानिके योग चलते रहेंगे। एक प्रियजनसे विछोह। कष्टप्रद यात्रा सम्भाव्य। १० या ११ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—यह मास कुछ संघर्षपूर्ण रहेगा। कई प्रकारकी आशंकाएं आपको अशान्त बनावेंगी। आलस्य और थकानका अनुभव। श्रम और उद्योग करनेमें मन न लगेगा। फिर भी आप प्रयत्न करें तो सफलता अवश्य मिलेगी। विचित्र स्वप्न दिखायी देंगे। अनैतिक कामोंकी ओर प्रवृत्ति रहेगी। एक या दो मित्र अच्छा सहयोग देंगे। धन लाभके लिये ४-५-६-१३-१४-१५-२३-२४-२५ ता० श्रेष्ठ हैं, ये ता० प्रयासोंमें सफलता देने वाली भी हैं। व्यके योग कुछ ऐसे प्रबल हैं कि ऋण या संचित धनका सहारा लेना पड़ सकता है। समाजमें आनन्द-विनोदके अवसर मिल जायंगे। घरमें एक छोटा उत्सव। यात्रा और दौड़धूप। एक अप्रिय समाचार सुनायी देगा। ८-१७ या १८-२७ ता० नेष्ट।

जनवरी—संघर्षपूर्ण होते हुए भी यह मास अच्छा है, क्योंकि अन्ततोगत्वा सुधारोंके आरम्भ की सूचना देता है। आलस्यका अनुभव। उद्योग करनेका जी न चाहेगा या उसके सुयोग ही न मिलेंगे। फिर भी यदि आप प्रयत्न करेंगे तो सफलता मिलेगी, इस दृष्टिसे १-९-१९-२८ ता० अनुकूल हैं। निकट सम्पर्क वालोंसे वैमनस्य। अनैतिक कामोंमें रुचि। स्थायी साधन और एकाध अन्य रास्तेसे धन लाभ, इस सम्बन्धमें ४-१३-२२-३१ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि १-७-९-१७-१९-२६-२८ भी अच्छी रहेंगी। व्यापारमें धीरे-धीरे सुधार होने लगेगा। समाजमें मानकी कमी खटकेगी। सामान्य पारिवारिक सुखोंकी प्राप्ति। कष्टप्रद यात्रा या दौड़धूप। ४-१४-२३ ता० नेष्ट।

मकर

नवम्बर—इसे उपलब्धियोंका मास कह सकते हैं। आपकी व्यक्तिगत स्थिति कुछ असन्तोषपूर्ण भले ही रहे पर जीवनके अन्य क्षेत्रोंमें चतुर्मुखी सुधार होंगे। बड़े उत्साह और आत्मविश्वासके साथ उद्योग करेंगे। कोई महत्वपूर्ण सफलता या विजय भी मिल सकती है। महत्वाकांक्षाएं पूर्ण होंगी। यदि आप जीवनमें कुछ श्रेष्ठ काम करना या बड़े आदमी बनना चाहते हैं तो ग्रहस्थिति अनुकूल

है। अविवाहितोंके विवाह होंगे । बेकार हैं तो काम-धन्धेसे लग जायंगे। नौकरीमें पदोन्नति होगी और व्यापार बढ़ेगा । समाजमें प्रतिष्ठा ऊंचाई पर पहुंच जायगी। पारिवारिक सुख। घरमें मंगल कार्य । दौड़धूप अवश्य। ८ या ६ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—धन लाभ और सफलता देने वाले योग आते हैं और चले जाते हैं । जो उनका लाभ उठा लेते हैं वे ही बड़े आदमी बनते हैं। आपके जीवनमें जो श्रेष्ठ योग गत दो मासोंसे चल रहे हैं वे इस मास भी रहेंगे पर उनका प्रभाव घट जायगा। १५ ता० से पहले-पहले अपने लक्ष्य तक पहुंचनेका प्रयास करना चाहिये। प्रयासोंमें सफलता मिलेगी। उत्तरार्द्ध में आलस्य और थकान । मित्रोंसे सहयोग मिलेगा। धन लाभके लिये १-७-८-६-१६-१७-१८-१६-२६-२७-२८ ता० श्रेष्ठ हैं, कोई लाभ २७ या २८ ता० में हो सकता है। समाजमें अस्वाभाविक व्यय होता रहेगा । समाजमें प्रतिष्ठा बढ़ेगी । उत्सवों-मंगलकार्योंमें सम्मिलन। ५ या ६ ता० नेष्ट।

जनवरी—यह मास अच्छा है, आनन्द-विनोद में दिन बीतेंगे। महत्वपूर्ण काम इसी मासमें बना लेना चाहिये क्योंकि सफलता देने वाले योग अगले मास बलहीन हो जायंगे । आधारहीन आशंकाएं अशान्त रखेंगी। दुःस्वप्न दिखायी देंगे। गुप्त शत्रु सक्रिय रहेंगे पर कुछ बिगाड़ न सकेंगे। दो सज्जन व्यक्ति सहयोग देंगे। कामनाएं पूर्ण होंगी। धन लाभके लिये ३-४-१३-१४-२२-२३-३१ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा १७-२६ भी अच्छी रहेंगी। एक छोटा आकस्मिक लाभ । विशेष व्यय और छुटपुट हानिसे बच पाना कठिन है। समाजमें मान। पत्नी और परिवारके सुख। प्रेम सम्बन्ध में सफलता। दौड़धूप अवश्य । २-२६ ता० नेष्ट।

कुम्भ

नवम्बर—यह मास सुधारोंकी सूचना देता है। अनेक संघर्ष रहेंगे जो मासान्तमें बढ़ भी सकते हैं। किन्तु आपका आत्मविश्वास और उत्साह इतना बढ़ जायगा कि किसी भी कठिनाईका सामना कर सकेंगे । बाधाओं पर विजय प्राप्त होगी। मित्र और अन्य व्यक्ति सहयोग देंगे । प्रयासोंमें सफलता मिलेगी। शुभ स्वप्न दिखाई देंगे। प्रगतिकी ओर बढ़ेंगे। किसी देवता महात्मा या महापुरुषकी कृपा आप पर होगी । धन लाभकी रूपरेखा बन जायगी। लाभके लिये २-३-५-११-१२-१४-२०-२१-२३-२४ ता० श्रेष्ठ है। व्यापारमें नयी योजनाएं आरम्भ करनेका निश्चय कर लेंगे। समाजमें यश सम्मान और उत्सवोंमें सम्मिलन। दौड़धूप अवश्य। ६ ता० नेष्ट।

दिसम्बर—यह मास सुधारोंके साथ प्रगति की सूचना देता है। पहली ता० से ही शुभ फलोंमें वृद्धि होने लगेगी। और मासान्त तक समाधान पूर्ण स्थितिमें पहुँच जायंगे। दृढ़तापूर्वक उद्योग करेंगे । प्रयासोंमें सफलता मिलेगी । उत्तरार्द्ध में द्विविधापूर्ण स्थिति उत्पन्न हो सकती है । सम्भव है कि साहस और मनोबलकी कमी अथवा आलस्य या व्यसनों-विलासोंके कारण इस ग्रहस्थितिका पूरा लाभ न उठा सकें। किन्तु यदि सदुपयोग

करें तो यह मास स्मरणीय बन सकता है। किसी वहापुरुषके दर्शन। उत्सवोंमें सम्मिलन व्यापार बढ़ेगा। लाभके नये स्रोत खुलेंगे। व्यस्तता में दिन बीतेंगे। दौड़धूप अवश्य। ४ और ३१ ता० नेष्ट।

जनवरी—यह मास अच्छा है प्रयासोंमें सफलताके साथ प्रगतिकी सूचना देता है। पर यह ध्यान रखें कि १२ ता० से शुभ फल घटने लगेंगे और २४ से २६ ता० तकका समय संघर्षपूर्ण व्यतीत होगा। इस बीच कोई अप्रिय घटना भी हो सकती है। मासान्त होते-होते पुन: अस्थायी सुधार आरम्भ हो जायेंगे। अपने महत्वपूर्ण काम प्रथमार्द्धमें ही बना लेने चाहिये। निकट सम्पर्क वालोंसे वैमनस्य। धन लाभके लिये ४-५-१४-१५-२३ ता० श्रेष्ठ हैं। आशा है कि ६-७-८-१६-१७-२५-२६ भी अच्छी रहेगी। व्यापारमें पूंजी लगावेंगे। पुलिस और टैक्स विभाग वालोंसे सावधान रहना चाहिये। कष्टप्रद यात्रा। २७ ता० नेष्ट।

मीन

नवम्बर—आत्मविश्वासके साथ कोई बड़ा काम करना चाहेंगे पर सफलताके मार्गमें बाधाएं आवेंगी। उनसे आप अनुत्साहित न होंगे पर मासान्तमें कुछ शीथिल पड़ जायंगे। शत्रुओं-बाधाओं पर विजय और मित्रोंसे सहयोग देने वाले योग चलते रहेंगे। धन लाभके लिये १-७-१०-१६-१९-२६ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ५-१४-२३ या २४ भी अच्छी रहेंगी, आकस्मिक लाभ, प्राचीन धन या बकाया रकम की प्राप्ति। ८-९ ता० में सावधान रहें। व्यापारकी स्थिति सन्तोषजनक, किन्तु, उत्तरार्द्धमें उतार-चढ़ाव आवेगे। उत्सवादिमें सम्मिलन। सन्तान सुखकी प्राप्ति। ४ ता० नेष्ट। आगामी मास सफलताके व्यापक सन्देश लेकर आ रहा है।

दिसम्बर—यह मास पर्याप्त अच्छा है। २ या ३ ता० से शुभ फलोंमें वृद्धि होने लगेगी और ३१ तारीख तक समाधान पूर्ण स्थितिमें पहुँच जायगे। कार्यकारी जीवनके अवरोध धीरे-धीरे करके दूर हो जायंगे। श्रम और उद्योग करनेमें रुचि लेंगे। प्रयासोंमें सफलता मिलेगी। धन लाभके लिये ४-१३-२३- तारीखें श्रेष्ठ हैं, आशा है कि २ या ३-७-११-१६-२१-२२-२६-३०-३१ भी अच्छी रहेंगी, आकस्मिक लाभ सम्भाव्य, विशेष व्ययके योग चलते रहेंगे। व्यापारमें नयी व्यवस्था आरम्भ करेंगे। समाजमें प्रतिष्ठा और प्रभावकी वृद्धि, उत्सवादिमें सम्मिलन, महत्वपूर्ण व्यक्तियोंसे भेंट, हर्षदायक समाचार। व्यसनों-विलासोंमें रुचि। दौड़धूप अवश्य। १ या २ और २९ ता० नेष्ट।

जनवरी—यदि आप व्यसनों-विलासोंमें समय नष्ट न करें और अपना सन्तुलन तथा विवेक बनाये रहें तो कुछ महत्वपूर्ण उपलब्धियां इस मासमें हो सकती हैं। सहयोग देने वाले व्यक्ति मिलेंगे। शत्रु और बाधाओं पर विजय। जीवनके चतुर्मुखी सुधार करनेके लिये ग्रहस्थिति अनुकूल है। धन लाभके लिये १-३ या ४-८-९-१८-१९-२२-२७-२८-३१ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ५-७-१५-१७-२४-२६ भी अच्छी रहेंगी, लाभ स्रोतका विकास, विशेष व्यय होता ही रहेगा। व्यापार बढ़ेगा। समाजमें प्रतिष्ठा वृद्धि। उत्सवों-कार्यक्रमोंमें सम्मिलन। घरमें मंगल कार्य सम्भाव्य। व्यस्ततामें दिन बीतेंगे। २५ ता० नेष्ट।

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार चक्र

आगामी ६ मास अकल्पित घटनापूर्ण

कार्तिक शुक्ल पक्षमें शुक्रास्तोदयका प्रभाव

सिंह राशिमें शनि राहुका योग विश्वशान्तिमें बाधक

—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी—

ज्योतिष एक विज्ञान है

विगत ३५ वर्षोंसे मैं यह स्तम्भ लिखता आ रहा हूं । अपनी स्वल्प बुद्धिके अनुसार ज्योतिश्शास्त्रका अध्ययन-अनुशीलन करके देशविदेशके सम्बन्धमें जो भविष्यवाणियां की गई वे अधिकांशमें सत्य सिद्ध हुईं —इसकी साक्षी 'ज्योतिष्मती' और 'श्रीविश्वविजय-पंचांग' के विज्ञ वाचक वृन्द दे रहे हैं । दैवज्ञने कभी यह अभिमान नहीं किया कि जो कुछ भविष्यवाणी वह करता है वह शतप्रतिशत सही होती है। जहां राज्याश्रयप्राप्त एलोपैथी-डाक्टरी और आयुर्वेद विज्ञान अभी तक शत-प्रतिशत सफलताकी गारण्टी नहीं दे पाये, वहां निराश्रित ज्योतिर्विज्ञानके गणितविभागने शतप्रतिशत सत्यता सिद्ध कर दिखायी है। ज्योतिर्गणितके द्वारा वर्षों पूर्व सूर्य-चन्द्रग्रहणों के स्पर्श-मोक्षका जो समय निश्चित कर दिया जाता है उसमें एक मिनटका भी अन्तर नहीं आता। यद्यपि ज्योतिश्शास्त्रके फल विभागमें अभी इतनी सूक्ष्मता नहीं बन पाई है । फलित ज्योतिषको दैवविद्या कहा गया है, इसीलिए राष्ट्र समाज और व्यक्तिविशेषके सम्बन्धमें भविष्यवाणी करने वालेको 'दैवज्ञ' कहा जाता है। यह दैवविद्या तपस्या साधना एवं अनुभव-गम्य है। आधुनिक वातावरणका एक साधना-हीन दैवज्ञ भी मनुष्य है, सर्वज्ञ निर्भ्रान्त नहीं, अतः उसकी बुद्धि भी भ्रान्त हो सकती है। ग्रहगतिरूप दैवी संकेतोंको समझनेमें भूल हो सकती है। उसका ज्ञान ईश्वरीय ज्ञानके समान सदा सत्य ही हो यह नहीं कहा जा सकता।

तथापि मेरा विश्वास है कि भारतीय ज्यो-तिर्विज्ञानका भविष्यकथन-शास्त्र इस देशका अत्यन्त पुरातन विज्ञान है । इतिहासमें इसके सम्बन्धमें अनेक घटनाओंका उल्लेख मिलता है। भगवान् श्रीकृष्णके जन्मके समय भविष्य बतलानेकी गर्गमुनिकी कथाका उल्लेख भागवत में मिलता है। महाभारतमें भी अनेक स्थानों पर भविष्य कथनकी, तथा अशुभ योगसे उत्पन्न होने वाली घटनाओंकी चर्चा आई है । बाल्मीकि रामायणमें भरतने भविष्य-कथन-शास्त्रके अध्ययनकी सूचना अपने पिताको सिन्धु देशसे लिखी है । एक पुराण 'भविष्यपुराण' के नामसे है—जिसमें भारतके भविष्यकी अनेक सूचनाएं हैं। इसी प्रकार प्रत्येक पुराण में एक अध्याय युग-वर्णनका मिलता है, जिसमें आज तककी स्थितिका सच्चा चित्र मिलता है। स्वयं भगवान् बुद्धके जन्मके समय उनके भविष्यकी जो बातें जातक कथाओंमें मिलती हैं वे आजसे ढाई हजार वर्ष पहलेकी हैं और उनसे यह प्रमाणित होता है कि भविष्य कहने की प्रथा बहुत पूर्वकालसे प्रचलित रही हैं। वैदिक साहित्यमें भी इस तरहके प्रमाण मिलते

हैं, जिनसे उस कालमें भारतीय जन आकाशके ग्रह नक्षत्रों और योगोंसे भविष्य पर विचार किया करते थे। इस प्रकार यह शास्त्र ग्रीक और अरब, एवं इजिप्ट और मय लोगोंमें भी प्रचलित रहा है और इसका इतिहास ग्रीक. अरब, इजिप्ट, मेक्सिको आदिके ग्रन्थोंमें मिलता है. इस कारण इस शास्त्रकी पुरातनता में सन्देह नहीं है। मुगलों तकने इसका आश्रय लिया है, मुगल बादशाहोंने अनेक भारतीय और अरब पण्डितोंका आश्रय लेकर शासनमें सहायता प्राप्त की है, 'आइनेअकबरी' और 'तुजकु-जहांगीरी' में अल्बेरूनी आदि विद्वानोंने बहुत कुछ लिखा है।

यह विषय इतना महत्वका है कि इसकी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए, इसका निरीक्षण परीक्षण अवश्य होना चाहिए, और उससे प्राप्त होने वाले तथ्योंका विचार शासकीय स्तर पर अवश्य होना चाहिए। आज तक बिना किसी रिसर्च या शासकीय आश्रयके यह शास्त्र देशके कुछ चोटीके विद्वानोंके पास सुरक्षित चला आ रहा है, और आश्चर्यजनक परिणाम भी मिलते हैं। संसारमें आजके विज्ञानने चाहे जितनी ही प्रगति क्यों न की हो, पर भविष्य जाननेका उसके पास कोई साधन उपलब्ध नहीं हुआ है, अतएव इस भारतीय विज्ञानकी ओर शासनका ध्यान अवश्य जाना चाहिए। अनेक उच्चराज्याधिकारी फल ज्योतिष पर पूर्ण विश्वास रखते हैं, श्रीनेहरूजी और भू०पू० प्रधान मंत्री श्रीमती गांधीने भी एकाधिकबार दैवज्ञसे परामर्श लिया इसके प्रमाण मौजूद हैं, किन्तु, जो मंत्री निजी तौर पर दैवज्ञके सामने जाकर नतमस्तक होते हैं—वे सार्वजनिक रूपसे यह कहते हैं कि—"हम ज्योतिष पर आस्था नहीं रखते।" इस पर सर्वसाधारण जनताको इनके चरित्र पर साश्चर्य खेद ही होगा, अस्तु।

मेदिनीय अथवा राष्ट्रीय भविष्य

राष्ट्रीय भविष्य अनेक प्रकारसे देखा जाता है। इस सम्बन्धमें अनेक शाखायें हैं, जिसके लिए जो मार्ग प्रशस्त हो, जिसको जिस गुरुसे जैसा ज्ञान मिला हो निर्णय करें, यही उचित है। हमारे सामने सर्व प्रथम वराहमिहिराचार्यकृत 'वाराही संहिता' प्रमुख ग्रन्थ है, इसके अनुसार ग्रहोंके परस्पर युद्ध, उदय अस्त, वक्रमार्ग, ग्रहोंके विशेष योग, और विश्व में कहां शान्ति और कहां पर अशान्ति रहेगी इसके निर्णयार्थ सर्वतोभद्रचक्र, कर्पूरचक्र, कूर्मचक्र और नरपति जयचर्याका संघट्टचक्र भी है। अतिवृष्टि अनावृष्टि झंझावातादिके लिए सप्तनाड़ी चक्र उपयोगी है, इन्हींको आधार मानकर मैं अपनी अल्पबुद्धि और सीमित साधनसे विगत ३५ वर्षोंसे जो कुछ लिखता आ रहा हूं वह भी ८०% से अधिक सत्य सिद्ध हुआ है। यदि इस विज्ञान को राज्याश्रय प्राप्त हो और तत्तद्-शाखाओंके विशेषज्ञ अनुभवी विद्वान् एकत्र होकर सामूहिक निर्णय दें तो इसमें शतप्रतिशत सफलता निश्चित है।

कर्क-सिंह राशिके शनिका प्रभाव

विगत ४ वर्षोंसे 'श्रीविश्वविजयपंचांग' और 'ज्योतिष्मती'में उक्त राशियोंमें शनिका जो दुष्प्रभाव विस्तृत रूपमें (शताब्दीके उदाहरण सहित) बता दिया गया था—उसका प्रत्यक्ष

फल गत और वर्तमानवर्षकी सामाजिक राजनैतिक घटनाओं एवं रोमांचकारी अभूतपूर्व बाढ़ तूफान तथा आये दिनकी यान-दुर्घटनाओंसे हस्तामलकवत् सत्य प्रमाणित हो रहा है। विगत ३ वर्षोंसे जबसे शनि पुनर्वसु नक्षत्र नीरनाड़ीमें आया, तबसे प्रतिवर्ष बाढ़ें आ रही हैं। वर्तमान वर्षमें शनि सज़ल नाड़ियोंमें चल रहा है। गत २१ जूनसे गुरु, २४ जूनसे बुध और ५ जुलाईसे १० अक्टूबर तक सूर्य सजल नाड़ियोंमें शनिके साथ है। इस योगने भारतमें अभूतपूर्व बाढ़से जन-धनका विनाश किया।

आजसे १२ वर्ष पूर्व सं० २०२४ वि० के 'श्रीविश्वविजयपंचांग' में पृष्ठ २० पर 'युद्ध अनिवार्य हैं' लिखा था। उसको मैंने विगत सं० २०३३ वि० के पंचांगमें पृष्ठ २६ पर उद्धृत करते हुए शनिके प्रभावका जो विवेचन किया था वह समय अब अगले कुछ वर्षोंमें आने वाला है, अतः पाठकोंके स्मरणार्थ उसे पुनः ज्यों का त्यों यहां उद्धृत किया जा रहा है—

"आजसे ६ वर्ष पूर्व (अब १२ वर्ष पूर्व) सं० २०२४ वि० के "श्रीविश्वविजय-पंचांग' में पृष्ठ २० पर 'युद्ध अनिवार्य है, सन् १९८० के आसन्न संसारमें विश्व-युद्ध भड़क उठेगा।' लिखा था। हम अपने ६ वर्ष पूर्व (अब १२ वर्ष पूर्व) लिखे गए उक्त विचार पर अडिग हैं। हमारे उक्त विचारकी पुष्टि सन् १९८२ से आने वाला तुला वृश्चिक धनुः राशिका शनि कर रहा है। आगामी सं० २०३९ आश्विन कृष्णा ३ मंगलवार ५ अक्टूबर १९८२ को शनि तुला राशिमें प्रवेश करेगा। ५ नवम्बर १९८२ को तुला राशिमें शनि प्लूटोकी युति होगी। सं० २०४१ पौष कृष्णा १३ गुरुवार दि. २० दिसम्बर १९८४ को शनि वृश्चिक राशिमें प्रवेश करेगा, और आगे सं० २०४४ पौष कृष्णा १० बुधवार दि. १६ दिसम्बर १९८८ को धनुः राशिमें प्रवेश करके सं० २०४६ चैत्र कृष्ण १० गुरुवार दि. २२ मार्च १९९० ई० तक इसी अग्नितत्वात्मक धनुः राशिमें रहेगा। तुला वृश्चिक धनुः राशिका शनि संसारमें युद्ध महामारी दुर्भिक्षादिसे प्रजाको पीड़ित करने वाला है। यथा—

तुलावृश्चिकचापेषु यदा याति शनैश्चरः।
त्रिभागशेषा पृथिवी मांसशोणित कर्दमैः॥

यों तो प्रत्येक ३० वर्षोंके बाद शनि उक्त राशियोंमें भ्रमण करता है। किन्तु, कुम्भयुग में शनि यूरेनस नेपच्यूनका युद्ध शताब्दियों बाद जब आता है तब "त्रिभागशेषा पृथिवी मांसशोणित कर्दमैः" उक्ति चरितार्थ होती है। निष्कर्ष यह है कि यदि १९८२ तक विश्वके बड़े मदान्ध राष्ट्र रूस अमेरिका चीन आदिने भारतके विश्व-कल्याणकारी आदर्शको मानकर घातक शस्त्रास्त्रोंकी होड़ समाप्त न की तो आगे विश्व-शांतिके सभी प्रयत्न निष्फल होंगे और धनुः राशिके शनिमें विश्वविनाशक तृतीय महायुद्ध फूट पड़ेगा। ईश्वर आसुरी शक्ति सम्पन्न राष्ट्रोंको सद्बुद्धि दे।"

विस्मयकारी घटनाएं घटेंगी

आगामी वर्ष २०३६ (सन् १९८०) में शनि सिंह राशिमें ही रहेगा और १८ नवम्बर

१९७८ से राहु भी सिंह राशिमें प्रवेश कर जावेगा। साथ ही २५ दिसम्बर १९७८ से ९ मई १९७९ तक सिंह राशिमें शनि वक्री रहेगा। दीपमाला मंगलवारकी और कार्तिक शुक्लपक्षमें शुक्रका अस्तोदय है, अत: १ नवम्बर से आगेके ६ मासमें भारतको अनेक राजनैतिक सामाजिक आर्थिक प्राकृतिक संकटोंका सामना करना पड़ेगा। प्रधानमंत्री श्री देसाईको अभूतपूर्व कठिनाईसे जूझना पड़ेगा। केन्द्रीय गृह-वित्त-विदेश-संरक्षण विभाग एवं पंजाब उत्तर-प्रदेश मध्यप्रदेश काश्मीर हरयाणा बिहार और दक्षिण भारतके कुछ राज्योंके मंत्रिमंडलों में अकल्पित नाटकीय उलटफेर होंगे। राष्ट्रीय स्तरके दो महापुरुषोंका स्वास्थ्य चिन्ताजनक बनेगा और कुछ अधिकारी दुर्घटनाग्रस्त होंगे। भयंकर यान दुर्घटनाएं होंगी। छात्रों श्रमिकों कृषकों और हरिजनोंकी समस्या यत्रतत्र उग्र रूप धारण करेंगी। पूर्वोत्तरीय भारतमें कहीं प्रकृतिप्रकोप आंधी तूफान महामारी दुर्भिक्ष या चौंका देने वालो यान दुर्घटनाएं होंगी। आगामी वर्ष सिंहके शनिमें राष्ट्रपति प्रधान मंत्री और श्री जयप्रकाश नारायण एवं आचार्य कृपलानीके स्वास्थ्यमें अचानक गिरावट आवेगी। देशविदेशके किसी महापुरुषके देहावसानसे राष्ट्रीय ध्वज झुकेगा। श्रीमती गांधी का पुन: प्रधानमंत्री पद पानेका स्वप्न साकार नहीं होगा। आगामी वर्ष श्रीमती गांधी, श्री शेखअब्दुल्ला, पाकिस्तान व बंगलादेशके राष्ट्रपति, श्री भुट्टो, सादात एवं श्री कार्टरके लिए अरिष्ट सूचक है। संसद और विधान सभाओं में अभूतपूर्व हंगामे होंगे। सत्तारूढ़ दल और प्रतिपक्षमें पारस्परिक अशोभनीय स्थिति उत्पन्न होगी। नेता और विधायक एकदूसरे की टांग खींचनेमें शक्तिका दुरुपयोग करेंगे। बड़े नगरों और राजधानियोंमें बन्द हड़ताल आदिसे जन-जीवन अस्तव्यस्त होगा। मंत्रिमण्डलका विस्तार या फेर बदल मुख्यमंत्रियोंको किंकर्तव्य-विमूढ़ बना देगा। स्वार्थ और पद-प्रतिष्ठाके लिए सिद्धान्त और उच्चादर्शको भुलाया जावेगा।। कई राजनेता एवं उच्चाधिकारियोंके पाप अनावृत्त होंगे।

मंगलवारी दीवाली और शुक्रास्तोदय

यहां ३१ अक्तूबरको मंगलवारी दीपावलो और कार्तिक शुक्ला १ दि. १ नवम्बर ७८ को शुक्र राक्षसगण नक्षत्रमें अस्त होगा तथा कार्तिक शु० १५ दि. १४ नवम्बर ७८ को शुक्र देवगण नक्षत्रमें उदय होगा। कार्तिक मासके एक पक्षमें शुक्रका अस्तोदय शुभ नहीं है। जालन्धर प्रदेश (पंजाब) गुजरात, सिन्ध, काठियावाड़, मरुस्थल, नेपाल, मिश्र, मालवा ईरानमें दुर्भिक्ष, प्रकृतिप्रकोप रोग शोकादि, या सामाजिक राजनैतिक गड़बड़से प्रजामें असन्तोष व्यापेगा। पूर्वी भारतमें महामारी, आंधी बवण्डर शीत लहरसे हानि पहुँचेगी। समुद्री तूफानसे कुछ जहाज क्षति ग्रस्त होंगे। मार्गशीर्ष मासमें वृश्चिक राशिमें चतुर्ग्रही योग है और यहीं पर कर्क राशिमें गुरु वक्री होकर २५ मार्च ८० को मार्गी होगा। कार्तिक कृष्ण अमावस्याको मंगलवार स्वाति नक्षत्र आयुष्मान् योगमें दीपावली पर्व पड़ रहा है। ये सब योग किसी भयंकर दुर्घटना या छत्रभंग (किसी राष्ट्रके प्रधान पुरुषकी मृत्यु) के द्योतक हैं। दिसम्बरसे अप्रैल तक इन योगोंका प्रभाव रहेगा। पौषमास राजधानी दिल्ली और उत्तर-

प्रदेश हरियाणा पंजाब विहार काश्मीर नेपाल पाकिस्तान और बंगलादेशके लिए अरिष्टप्रद हैं। यहाँ दलगत संघर्ष, कृषक, हरिजन, श्रमिक, छात्र आन्दोलन उग्र रूप धारण करेगा। शास्त्रकारोंने कार्तिकी अमावस्याको मंगलवार स्वाति नक्षत्र आयुष्मान् योग और राक्षसगणमें शुक्रास्त तथा देवगणमें शुक्रोदयका फल यों लिखा है—

यदि भवति कदाचित् कार्तिके नष्टचन्द्रे,
रविशनिकुजवारे स्वात्यायुष्मान्योगे।
गति चलति पशूनां स्थावरं जंगमं च,
नृपतिकुल विनाशं छत्रभङ्गं करोति॥

शुक्रास्ते राक्षसगणे हिन्दुदेशेषु विग्रहः।
खर्परे राजयुद्धानि मिश्रदेशेऽन्नविग्रहः॥
मरुस्थले सिन्धुदेशे दुर्भिक्षं मध्यमं भवेत्।
यानपात्रविनाशोऽब्धौ फिरंगाणां च विग्रहः॥
विराटढुण्ढपांचाल सौराष्ट्रेषु च रौरवम्।
तथा राज्यपरावर्त्तो मालवेषु जनक्षयः॥
जीर्णदुर्गे भयं भंगः पत्तनेऽन्नमहार्घता।
नव्यमुद्रा प्रकाशः स्याद्दक्षिणे सुख सम्पदः॥
जालन्धरेऽपि दुर्भिक्षं विग्रहो रण संभवः।

आगामी वर्ष सं० २०३६ वि० (१९७९-८०) के सामाजिक राजनैतिक व्यापारिक भविष्यका विस्तृत विवेचन २०३६ के श्रीविश्वविजयपंचांगमें देखें।

भारतीय भाग्यांक भविष्य

नवम्बर १९७८ ई०

तारीख	बम्बई	देहली	भरतपुर	बल्लभगढ़
१ से ३ तक	५ या ८	६ या ९	७ या ०	१ या ८
६ से ८ तक	६ या ९	७ या ०	१ या ८	२ या ९
९ से ११ तक	७ या ०	१ या ८	२ या ९	३ या ०
१३ से १५ तक	१ या ८	२ या ९	३ या ०	१ या ४
१६ से १८ तक	२ या ९	३ या ०	१ या ४	२ या ५
२० से २२ तक	३ या ०	१ या ४	२ या ५	३ या ६
२३ से २५ तक	१ या ४	२ या ५	३ या ६	४ या ७
२७ से २९ तक	२ या ५	३ या ६	४ या ७	५ या ८

दिसम्बर १९७८ ई०

तारीख	बम्बई	देहली	भरतपुर	बल्लभगढ़
१ या २ को	३ या ६	४ या ७	५ या ८	६ या ९
४ से ६ तक	४ या ७	५ या ८	६ या ९	७ या ०
७ से ९ तक	५ या ८	६ या ९	७ या ०	१ या ८
११ से १३ तक	६ या ९	७ या ०	१ या ८	२ या ९
१४ से १६ तक	७ या ०	१ या ८	२ या ९	३ या ०
१८ से २० तक	१ या ८	२ या ९	३ या ०	१ या ४
२१ से २३ तक	२ या ९	३ या ०	१ या ४	२ या ५
२५ ये २७ तक	३ या ०	१ या ४	२ या ५	३ या ६
२८ से ३० तक	१ या ४	२ या ५	३ या ६	४ या ७

जनवरी १९७८ ई०

तारीख	बम्बई	देहली	भरतपुर	बल्लभगढ़
१ से ३ तक	३ या ८	४ या ९	५ या ०	१ या ६
४ से ६ तक	४ या ९	५ या ०	१ या ६	२ या ७
८ से १० तक	५ या ०	१ या ६	२ या ७	३ या ८
११ व १२ को	१ या ६	२ या ७	३ या ८	४ या ९

उपरोक्त भाग्याङ्क प्रायः कभी-कभी एक ही दिनमें दहाई व इकाई होकर युगल (जोड़ी दड़ा) के रूपमें भी लाभकारी बनते हैं। प्रस्तुत लेखसे विशेष लाभ उठानेके इच्छुक पाठकगण सर्वप्रथम जवाबी लिफाफे सहित पत्र व्यवहार करें। एक वस्तुकी तेजी मन्दीका एक चांस नमूनार्थ फ्री भेजा जायगा।

विश्नाथ दैवज्ञ
श्रीगणेशदैवज्ञभवन, १९१३ पुरानी वस्ती
जयपुर—१ (राजस्थान)

वैज्ञानिक अनुसंधान पर व्यापार भविष्य

(१६-१०-७८ से १३-१-७६ तक)

[लेखक :—श्री प्रेमचन्द्र जैन पोरसा वाले]

प्रस्तुत लेख बुध-शुक्र-सूर्यकी विशेष दूरी (Angular Position) व इन ग्रहोंसे निकलने वाली चुम्बकीय धाराएं Graphical Method व सूर्यसे मंगल शनि गुरुकी कोणीय दूरी पर आधारित है।

आधुनिक युगमें आमतौर पर देखा है कि लोग ऐसा विश्वास करते हैं कि ग्रह असर ५०० वर्ष पहले जैसा करते थे वैसा अब नहीं करते। वास्तविकता यह है कि ग्रहोंके प्रभाव में करोड़वें भागकी कमी नहीं आई हैं। उसका कारण ग्रहोंकी स्थितिमें परिवर्तन है।

बुध ग्रह प्रधानतः व्यापारिक ग्रह हैं। छोटा ग्रह होते हुए भी अन्य बड़े ग्रहोंकी अपेक्षा इसका प्रभाव बाजारों पर अत्यन्त तीव्र पड़ता है, ऐसा अनुभवमें आया है। आजसे हजारों वर्ष पूर्व भी ज्योतिषाचार्योंने बुधको प्रमुख व्यापारिक ग्रह माना है। जब बुधसे अदृश्य चुम्बकीय धाराएं—Constant Difference (स्थिर अन्तर बुध शुक्र सूर्यसे) परिवर्तन अन्तर, जब वनता है, तो बाजारोंमें १०-२० दिन तेजी मंदीका तूफान अवश्य आता है।

बुध ग्रह एक राशिमें औसतमान २५ दिन रहता है, परन्तु जब विशेष स्थिति (वक्री मार्गी गति) में एक ६५ या ६६ दिन इन ६६ दिनों के अन्दर तेजी-मंदीका तूफान आ जाता है। ८-१० दिन प्रवेशसे नीचे भाव बने हों, तो इन ६५ दिनोंमें तेजी आ जाती है। ऊंचे हों तो नीचे भाव बनते हैं। इसी प्रकार २५ दिनके बजाय १४-१५ या १६ दिन एक राशिमें रहे तब भी एक तीव्र लाइन बनती है।

अतः २६ अक्टूबर १६७८ को बुध वृश्चिक राशिमें ६४ दिनके लिये प्रवेश होता है, ४ जनवरी १६७६ तक इसी राशिमें भ्रमण करेगा। २३-१०-७८ को उदय होता है, अतः अलसी अरण्डा फली सरसों वायदा में २० अक्टूबर ७८ से २६ अक्टूबर ७८ तक मंदीकी लाइन इकतरफा चलेगी या एक-दो दिन जैसी लाइन चले वैसा व्यापार करें। ३० अक्टूबर ७८ को पश्चिममें (१८-१०-७८ को वक्री) शुक्र अस्त होगा जो ११ नवम्बर ७८ पूर्वमें उदय होगा। २६-१०-७८ वक्री शुक्रकी बुधसे युति होगी। १३-११-७८ मंगल पश्चिममें अस्त होगा जो १६७ दिन बाद २७ अप्रेल १६७६ को पूर्वमें उदय होगा, जिसका प्रभाव-विशेष ३० जनवरीसे अप्रेल ७६ तक होगा। नवम्बर में दो विशेष Position बनी है। पहले शुक्रास्त व उदय, फिर १८-११-७८ को जब राहु सिंह प्रवेश करेगा, सभी क्रूर ग्रह केन्द्रमें होंगे, इसका प्रभाव करीब डेढ़ महीने चलेगा इसीके साथ बुध शुक्रका Constant Difference २०-११-७८ से ३०-११-७८ तक बुधसे शुक्र, ४० अंश ४४ अंश पीछे रहेगा। अतः यहां सरसों अलसी मूंगफली एरण्ड कपासिया, अरहर, चना मूंग इत्यादि विशेष प्रभावित होंगे, अतः २५ नवम्बर

७८ के आसपास मन्दी आवे खरीदें, तेजी आवे तो वेचें। ५-२-७९ को विपरीत लाइन चलेगी नोट करें।

उपरोक्त आधार पर, अलसी अरण्ड, व आम वायदा इकतरफा उल्लेखनीय लाइनें ३० रुपयेसे ५० रुपये तक तेजी मन्दी आवेगी। जो तारीखें नहीं दर्शायी हैं, उनमें बाजार कम चलेंगे या न के बराबर ऐसी उम्मीद है।

२० से ३० अक्टूबर तक मंदी विशेष।

८ से १५ नवम्बर व २० से ३० नवम्बर तक मंदी।

९ से १७ दिसम्बर तूफानी तेजो (यदि पहले मंदी चली हो)

३० दिसम्बरसे १३ जनवरी १९७९ तक तूफानी मंदी (यदि तीसरी लाइन तेज हो)।

नोट :—मंगल इस वर्ष १६७ दिन का अस्त। १९७६-७७ में १२७ का हुआ था, ५-१२-७९ को सूर्यकी बुधसे अधोयुति होगी। दैनिक रूपसे तेजी मंदी नजरानेकी तारीखें जो सोना चांदी तिलहन वायदा तीन दिनमें एक बार फल जावेगी। २३,२४ अक्टूबर, ३-११-७८ से ६-११-७८ तिलहन ९-११-७८ से १३-११-७९। सोना, चांदी, २०,२१ नवम्बर, २-१२-७८ से ४-१२-७८, तिलहन, परिवर्तन एकाएक ८-१२-७८ से ९-१२-७८ चांदी सोना १७,१८ दिसम्बर १९७८। २७-१२-७८ से ३१-१२-७८ इनमें विशेष बाजार चलेंगे। व्यापार लाभ हानिमें जिम्मेदारी नहीं होगी। तेजी मंदी समाप्ति जानने को जवाबी पत्र भेजें।

चेतावनी—

सोना चांदी तांबा पीतल रुई पाट रेशम कालीमिर्च तिलहन दलहन देसी घी खली शेयर्स जीरा धनियां मेथी सौंफ अजवाइन लालमिर्च हल्दी गुड़ खांड, पोस्ता लहसुन आदिमेंसे हाजर स्टाककी वार्षिक भेंट किसी एक वस्तुकी ३०४) छहमाहकी १७८) तीन माहकी १०४) वायदेकी किसी एक वस्तुकी वार्षिक भेंट ४५४) छह माहकी २४४) तीन माहकी १२८) होगी। इसमें ३।३ दिनके चांस होंगे, किन्तु टाइम सहित दैनिक मासिक रिपोर्ट ५४) पाक्षिक ३०) साप्ताहिक १८) तेजी-मंदी प्रदर्शक वार्षिक "भविष्यवाणी" कार्तिक शुक्ला १—संवत् २०३५ से दीपावली संबत् २०३६ पर्यन्त सभी वस्तुओंकी दैनिक ३।३ दिनकी साप्ताहिक-पाक्षिक तथा लम्बी लाइनके चांस तथा वार्षिक सारांश सहित मूल्य १८) मनीआर्डर ही भेजें। वी०पी० किसी भी वस्तुकी नहीं की जाती। मनीआर्डरके सबसे नीचे वाले कूपन पर अपना पूरा पता हिन्दीमें ऐसा लिखें कि जो अच्छी तरह पढ़ा भी जा सके। पत्रोत्तर जवाबी कार्ड पाकर ही दिया जावेगा।

पता :—राजाराम जैन ज्योतिषी, मैनपुरी (उ०प्र०)

सन्निकट मकान डाक्टर कपूर, मुहल्ला कटरा [पिन २०५००१]

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

['श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग' से]

अक्टूबर १९७८ ई०

ता. १७ मंगलवार–तुलामें सूर्यसंक्रांति मु० ३० ।
१९ गुरुवार–श्रीगणेश४ व्रत (करवाचौथ)
२४ मंगलवार–अहोई अष्टमी ।
२७ शुक्रवार–रमाएकादशी व्रत ।
२८ शनिवार–गोवत्साद्वादशी ।
२९ रविवार–प्रदोषव्रत, धन १३, धन्वन्तरी ज॰
३० सोमवार–रूप १४, श्रीहनुमज्जयन्ती ।
३१ मंगलवार–दीपावली श्रीमहालक्ष्मी-पूजन, श्रीमहावीर निर्वाण दिन ।

नवम्बर १९७८ ई०

ता. १ बुधवार–अन्नकूट गोवर्धनपूजा, बलिपूजा
२ गुरुवार–यम २, भय्यादूज, विश्वकर्मा ज.
८ बुधवार–गोपाष्टमी ।
१० शुक्रवार–प्रबोधिनी ११ व्रत स्मार्तोंका भीष्म पंचक प्रारंभ ।
११ शनिवार–प्रबोधिनी ११ व्रत वैष्णवोंका तुलसी विवाह ।
१२ रविवार–प्रदोषव्रत ईदुलजुहा बकरीद ।
१३ सोमवार–वैकुण्ठ १४ व्रत ।
१४ मंगलवार–भीष्मपंचक कार्तिकस्नान स. मेला पुष्करराज रेणुकातीर्थ गढ़गंगा जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य जयन्ती, श्री नानक जयन्ती, त्रिपुरोत्सव, सत्यव्रत ।
१६ गुरुवार–वृश्चिकमें सूर्यसंक्रान्ति मु० ४५
१८ शनिवार–श्रीगणेश ४व्रत चंद्रोदय २०।३०
२३ गुरुवार–श्रीमहाकालभैरवाष्टमी ।
२६ रविवार–उत्पन्ना ११ व्रत ।
२७ सोमवार–मल्लद्वादशी ।
२८ मंगलवार–भौमप्रदोषव्रत ।
३० गुरुवार–अमावस्या ।

दिसम्बर १९७८ ई०

ता. १ शुक्रवार–चन्द्रदर्शन मु० ३०
४ सोमवार–श्रीगुरुतेगबहादुर बलिदान दि.
५ मंगलवार–चम्पा ६ स्कन्दषष्ठी ।
१० रविवार–मोक्षदा ११ व्रत, गीताजयन्ती ।
११ सोमवार–प्रदोषव्रत, मुहर्रम ताजिया ।
१४ गुरुवार–सत्यव्रत, दत्तजयन्ती अन्नपूर्णा ज.
१५ शुक्रवार–पौषसंक्रांति मु. १५ पुण्यकाल अगले दिन ।
१८ सोमवार–श्रीगणेश ४व्रत चन्द्रोदय २०।५६
२५ सोमवार–बड़ादिन, श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती
२६ मंगलवार–सफला एकादशी व्रत ।
२७ बुधवार–प्रदोषव्रत ।
२९ शुक्रवार–अमावस्या ।
३१ रविवार–चन्द्रदर्शन मु० ४५ ।

जनवरी १९७९ ई०

ता. ४ गुरुवार–श्रीगुरु गोविन्दसिंह जयन्ती ।
८ सोमवार–पुत्रदा ११ व्रत स्मार्त्तवैष्णवोंका
९ मंगलवार–पुत्रदा ११ व्रत निम्बार्क सम्प्र.
१० बुधवार–प्रदोषव्रत ।
१२ शुक्रवार–सत्यव्रत ।
१३ शनिवार–लोहड़ी, पौषी १५ शाकम्भरी जयन्ती ।



साहित्य-समीक्षा

[समालोचनार्थ प्रत्येक पुस्तककी दो-दो प्रतियां सम्पादकके पास पहुंचनी चाहिए। एक प्रतिसे प्राप्ति स्वीकार रूपमें केवल पुस्तकका नाम ही प्रकाशित हो सकेगा। —सम्पादक]

सूक्तिसुधा

लेo—डाo वेदप्रकाश शास्त्री एम.ए.पी.एच.डी.। प्रकाशक—कमलेश प्रकाशन, गांधी-बाजार, हैदराबाद ५०००२-। पृष्ठ १८० मूल्य लिखा नहीं।

इस पुस्तकके लेखक डाo वेदप्रकाश शास्त्रीसे 'ज्योतिष्मती' के पाठक भलीभांति परिचित हैं। 'सूक्तिसुधा' उनकी काव्यमयी एक अनुपमकृति है, जिसमें लोकतन्त्र, शासन-पद्धति, ग्रामीण भारत, पर्दाप्रथा, विज्ञान और कला जैसे जीवनके विविध विषयों पर अभिनव मौलिक छन्दोंमें सूक्तियोंके माध्यमसे मानव-मात्रको जागरूक बनानेका प्रयत्न किया है। पुस्तकमें चार प्रवाह हैं। प्रथम प्रवाहमें 'सर्वेश्वर' आदि २३ विषयों पर १७५ आवृत्तिविलास छन्दोंमें बोधगम्य विवेचन किया गया है। द्वितीयप्रवाहमें २०३ प्रवाहिका छन्द हैं। तृतीय प्रवाहमें जीवन सम्बन्धी विविध विषयों पर २०० मनोरमण छन्द हैं और चतुर्थ प्रवाह में शास्त्रीय नीति वाक्यों पर आधारित १५० सरस सूक्तियां हैं। इनमेंसे ७ सूक्तियां इस अङ्कके प्रारम्भमें पृष्ठ ३ पर दी गई हैं। कागज और छपाई सुन्दर है। यह पुस्तक प्रत्येक साहित्यप्रेमी सज्जनके घर और पुस्तकालयोंके लिए संग्रहणीय है। लेखक एक होनहार उदीय-मान् प्रतिभाशाली लेखनीके धनी उत्साही-नबयुवक हैं। इनके अन्य प्रकाशित छोटे बड़े ग्रन्थोंका परिचय आगामी अङ्कोंमें यथासमय प्रकाशित होगा।

धन्वन्तरि-परिचय

पृष्ठ ११०, मूल्य ३) रु०

लेखक और प्रकाशक—श्री रघुवीरशरण शर्मा वैद्य, ग्राम तथा पो० जालखेड़ा जिला बुलन्दशहर (उ०प्र०)

'धन्वन्तरि-परिचय' के भूमिका लेखक भारत प्रसिद्ध विद्वान् श्री शिव शर्मा हैं। जो अनेकवार अखिल भारतवर्षीय आयुर्वेदीय महासम्मेलनके प्रधान पद पर रह चुके हैं। और जिनको आयुर्वेद पर व्याख्यान देनेको अमेरिका आदि देशोंके विद्वान् भी बुलाते हैं। इस पुस्तकके लिखने पर लेखकको झांसी यूनिवर्सिटीने डी.एस.सी.ए. (आयुर्वेद वृहस्पति) की उपाधि प्रदान की है। भूमिकामें श्रीशिव शर्माजीका यह लिखना कि "वहुत गंभीर अध्ययन है लेखकका। पाण्डित्य प्रतिभा और परिश्रम इन तीनों गुणोंका निपात एकत्र मिलना कठिन है, धन्वन्तरि-परिचयके प्रत्येक पृष्ठ पर इन तीनोंकी छाप है।" बहुत महत्व-पूर्ण है। लेखकने पुस्तक लिखनेमें ७८ ग्रन्थोंसे सहायता ली है, जैसा कि ग्रन्थोंकी सूचीसे स्पष्ट है। धन्वन्तरिपरिचयमें अनेक विषय हैं, हम इनमेंसे मुख्य विषयों पर ही प्रकाश डालेंगे। समुद्र-मंथनका स्थान भृगु-कच्छ (भरोंच) लिखा है। प्राचीनकालमें भरोंच भारतका

प्रसिद्ध बन्दरगाह था। अब वहांसे समुद्र हट गया है, वहां मिलने वालोंमें एक भगवान् धन्वन्तरि भी थे। इनको तभी सूर्य देवता स्वर्ग (त्रिविष्टप=तिब्बत) ले गये थे। एक ऋषि भृगुकी लक्ष्मी नामकी पुत्री थीं, ये विष्णु भगवान्‌की पत्नी बनी। उक्त समुद्र-मंथन का वर्णन लेखकने श्रीमद्भागवत आदि ११ ग्रंथोंसे लिखा है, किन्तु कहीं भी उक्त धन्वन्तरि का वंश परिचय नहीं लिखा और ना ही इनकी चार भुजा लिखी है। फिर भी वैद्य समाज ४ भुजा वाले चित्रोंका पूजन करता है। आश्चर्य है। अमृत (जीवनीय द्रव्य) प्राप्तिके बाद दैत्यराज बलिने मोहिनी रूपधारी विष्णु भगवान्‌से कहा है कि हम सभी दैत्यदानव और देव ऋषि कश्यपकी सन्तान हैं, अर्थात् एक पिता तीन माँकी सन्तान हैं, अतः न्यायानुसार अमृत विभाजन कर दो। किन्तु मोहिनीने इस पर ध्यान नहीं दिया। तीन धन्वन्तरि काशीके राजा हुए हैं—इनमें अन्तिम धन्वन्तरि दिवोदास धन्वन्तरि नामसे प्रसिद्ध हैं। विश्वामित्रके पुत्र ऋषि सुश्रुत इन्हींके शिष्य थे, सुश्रुत संहिताके निर्माता ये ही सुश्रुत हैं। उक्त धन्वन्तरिके समकालीन राजा दशरथ, मिथिलाधीश सीरध्वज, कैकेय देशके राजा अश्वपति कौशल्याके पिता दक्षिण कौशलके राजा भानुमन्त तथा लंकेश रावण आदि थे। धन्वन्तरिके पुत्र प्रतर्दन थे, जो भगवान् रामके राज्याभिषेक में सम्मिलित हुए थे। प्रसङ्गवश आने वाली गरुड़, नाग, काक और मूषिक जातियों पर भी लेखकने प्रकाश डाला है, इनके स्थानोंका भी उल्लेख किया है। हम यहां पर गरुड़ जाति पर कुछ प्रकाश डाल रहे हैं। गरुड़ जातिका जटायु, जातिका ब्राह्मण, पंचवटीका राजा तथा दशरथका मित्र था। सूर्यवंशी राजा सगरकी स्त्री सुमति गरुड़ जातिकी थी। गरुड़ जातिके मनुष्य राजा युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें उपायन (भेंट) लेकर आये थे और द्रौपदीके स्वयंवरमें भी आये थे। एक बार दैत्य दानवों और देवोंमें युद्ध हुआ था तब गरुड़ लोग दैत्योंके पक्षमें लड़े थे। भागवतमें लिखा है कि राजा मांधाता अपने पिता युवनाश्वके उदरसे हुआ है। लेखकने इसका खण्डन करके मत्स्यपुराणके प्रमाणसे राजा अन्तिनारकी कन्या गौरीके गर्भसे उत्पन्न लिखा है।

लेखकने रावण (लंकेश) ऋषि विश्वामित्र, ऋषि भरद्वाज ऋषि च्यवन तथा भार्गव परशु रामको समय-समय पर होने वालोंमें अनेक लिखा और उनके समयोंको भी प्रमाणोंसे सिद्ध किया है। हमारे विचारसे पुस्तक सब के लिये परम उपयोगी है, विशेषकर वैद्योंको तथा इतिहासके विद्यार्थियोंको, क्योंकि लेखक की यह मौलिक रचना है अतः इतिहासकी मार्गदर्शिका है। ऐसे उपयोगी साहित्यमें हलका कागज और कहीं-कही मुद्रणदोष कुछ अखरने वाला है।

लेखककी दूसरी पुस्तक 'संक्रामकरोग' प्रथम भाग तथा 'श्रीमदापदुद्धार बटुकभैरव स्तोत्र' 'विद्याधर-ग्रन्थावली' 'धन्वन्तरिका ऊर्ध्वजत्रु रोगाङ्क' आदि अनेक छोटे-बड़े ग्रन्थ समालोचनार्थ प्राप्त हुए हैं, उनकी समीक्षा आगामी अङ्कोंमें प्रकाशित होंगी।

—हरदेव शर्मा त्रिवेदी

"हृदयफुफ्फुसरोग चिकित्साङ्क"

आयुर्वेदिक पत्रिका सुधानिधिका 'हृदय फुफ्फुस रोग चिकित्सांक' (फरवरी-मार्च ७८) पृष्ठ संख्या ४५६, मूल्य रु० १६—०० ।

सम्पादक—आचार्य श्री रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी, प्रकाशक—धन्वन्तरि कार्यालय, विजयगढ़ (अलीगढ़) उ०प्र० ।

आयुर्वेदीय पत्रिका सुधानिधि का विशेषाङ्क 'हृदय-फुफ्फुस रोग चिकित्सांक, देखा । प्रकाशकने साहसिक एवं प्रशंसनीय कार्य किया है । विषय सामग्री निःसन्देह ज्ञानवर्द्धक है । हमारा मत है कि इससे सर्वसाधारणको यदि वह ध्यान-पूर्वक इस अङ्कका अवलोकन करे तो इस विषयमें अच्छी ज्ञानवृद्धि हो सकती है । क्या ही अच्छा होता—यदि विषय वस्तुके साथ-साथ प्रकाशक महोदय इस अङ्कको ग्लेज़ कागज पर मुद्रण करवाते तो यह अङ्क जिल्द बन्धवाकर अध्ययन-कक्षमें शोभा पा सकता था, जितना आकर्षक इसका मुख पृष्ठ बना है—यदि कागज़ भी भीतरका उतना अच्छा होता तो इसका मूल्य १६) के स्थान २०) में भी अखरता नहीं था ।

फिर भी सुधानिधि-परिवार हमारी हार्दिक बधाईका पात्र है । हमारी कामना है कि 'सुधानिधि' भविष्यमें चिकित्सा-विज्ञान सम्बन्धी अपना यह कार्य सुचारु रूपेण करता हुआ सर्वसाधारणको आयुर्वेदकी महत्तासे अवगत करवाने एवं आयुर्वेदकी उन्नतिका अपना परम लक्ष्य प्राप्त करेगा ।

—डा० विजय मोहन सिंघा
सोलन ।

राजनैतिक भविष्यवाणी

सूक्ष्मबुद्धिके निर्णयानुसार ग्रहोंकी स्थिति ७-१०-१९७८ से २०-२-१९७९ तक केंद्रीय सरकारमें मूलरूपसे ऊँचे पदों सम्बन्धी जो माँग कर रहे हैं इसमें अधिक प्रभाव नवम्बर दिसम्बर तक रहेगा । २०-२-७९ तक दो महान् नेताओंसे हाथ धोना पड़ेगा । १९७५-७६ के दौरानकी स्थिति तथा आम चुनाव १९७७ वाली स्थिति श्री मुरारजी देसाईको त्यागपत्र देने पर मजबूर कर देगी ।

केन्द्रकी उथल-पुथलका प्रभाव दो उत्तरी भारतके मुख्य-मंत्रियों पर भी पड़ेगा, जिसकी झलक १७-१०-७८ से २७-११-७८ के बीच स्पष्ट रूपसे दिखाई देगी ।

—आर.डी. शास्त्री
एम.ए. (बी.ए. आनर्स) चण्डीगढ

व्यापार वाणी

[वैद्यरत्न कविराज पं० शंकरलाल गौड़—"शंभुकवि" तपस्थली दूरा (आगरा)]

कार्तिक

कार्तिक मासमें पांच मंगलवार हैं, पांच मंगलके फल भारतीय ज्योतिष शास्त्र फलित इस प्रकार है। यथा :—जिस चान्द्रमासमें पांच मंगल पड़ते हैं प्रजामें आपसमें विक्षोभ लड़ाई-झगड़ा होता है। रक्तविकारसे प्रजामें हानि, बच्चोंमें चेचक, स्त्रियोंमें रक्तविकार प्रदर रोग बढ़ जाता है। राज प्रजामें भी मतभेद होते हैं। लाल वस्तुओंमें तेजी आती है। धान्य भाव भी तेज होते हैं। तुलाकी संक्रान्ति कार्तिक कृष्णा १ मंगलवार ता० १७-१०-७८ को लगी है। मंगलवारको संक्रान्तिका लगना रोग, वायु, अग्नि विग्रहकी संभावना बनी रहती है। लवण, सज्जी आदि खार, तिल, तैल, घृत, गुड़, आदि रस, गेहूं, अलसी आदि धान्य और कपूर कस्तूरी चन्दन आदि सुगन्धित वस्तुओंका भाव तेज हो जावे। तिथि कृष्णा सप्तमीको बृश्चिकके मंगल वस्तुमात्रमें तेजीके योग बनाते हैं। राजा दोषपूर्ण हो जावे प्रजा रोगयुक्त हो जाती है। पापग्रहोंके योगसे विशेषकर तेजीके योग बनते हैं, मंगलवारकी दीपाबली दीनोंके लिए दुःखदायी है। जैसा कि किंवदन्तीसे स्पष्ट है। यथा :—"शनि मंगल की पड़ें दिवाली। मरे रंक जीवे भण्डशाली।' सुदीपक्षमें शुक्रास्त पश्चिम दिशामें जो राक्षसगणमें अस्त हो रहा है। हिन्दू देशोंमें विग्रह हो, खर्पर राज्यमें युद्ध, मिश्रमें अन्नका विग्रह है, मरुस्थल और सिन्धु देशमें सामान्य दुर्भिक्ष हो, विमान और जहाज़ोंका विनाश" "फिरंगाणां च विग्रहः" विराट ढुंढ पांचाल सौराष्ट्र देशोंमें कष्ट हों, राज्यका बदल और मालव देशमें मनुष्यका क्षय होता है। जीर्ण दुर्गोंके टूटनेका डर, पट्टनमें अन्नकी महंगी हो। नवीन मुद्राका प्रचलन हो। दक्षिणमें सुख-सम्पदा हो। इसी पक्षमें तिथि (शुक्ला) पूर्णिमा मंगलवारको शुक्रका उदय हुआ है। गण देवता में शुक्रका उदय है। धान्यभाव तेज, सोना चांदी तेज़ होते हैं। राज्यमें परिवर्तन हो। सुभिक्षका भी संचार होता है। शुक्रका अस्त आग्नेय मंडलमें हुआ है अतः भूकम्प, उल्कापात अंधकार कोई अद्भुत वार्ता हो। थोड़ी वृष्टि भी होती है।

काश्मीर उत्तरप्रदेशमें उत्पात हो जाता है। शुक्रका उदय वायुमंडलमें हुआ है, महावायु चले, महाभय उपस्थित हो। वर्षाका अभाव रहे। ब्राह्मणोंका विनाश हो विन्ध्यवासी राजों में विग्रह हो। परकोट पर्वतोंके शृङ्ग तोरण के स्थान यह सब वायुसे भग्न हो जाय। मंगलवारी पूर्णिमा अशुभकारी है, तथा भय करने वाली है।

मार्गशीर्ष

मासके प्रारंभमें भौम अस्त पश्चिम दिशा में धान्य भावको तेज करता है। तिथि द्वितीया (कृष्णपक्ष) में वृश्चिककी संक्रान्ति गुरुवार को लगी है अतः शुभकारी तथा तिल, तै,ल

कपास, सूत, कपड़ा आदि तेज होते हैं, इस दिन वृषके चन्द्रमा है अतः सर्व धान्यके संग्रह की राय देते हैं, सर्व प्रकारके धान्य तथा राल, कांच लवण आदिका संग्रह करके दूसरे महीने में बेचनेसे लाभ होवे । किन्तु तीसरेमें रहनेसे फिर हानिकी संभावना रहती है । वदी पक्षमें तिथिकी वृद्धि हुई है अतः "मार्गमास वदि पक्षमें, 'शंकर' तिथि बढ़ जाय ! रक्तपात विग्रह कहीं, विश्वयुद्ध दिखलाय !!" सुदी पक्ष में बुधोदय पूर्वमें उपलवृष्टि वायु संचारके साथ कहीं-कहीं वर्षा होगी । तिथिक्षय इस पक्षमें विशेष हानिका सूचक है ।

पौष

पौष मासका प्रारंभ शुक्रवारको हुआ है । इस मासमें पांच शुक्रवार तथा पांच शनिवार हैं । दोनोंके फल नेष्ट ही हैं । पांच शुक्रवारसे मंदीका रुख बनता है । यवन राष्ट्रोंमें उत्पात होता है । पांच शनि मार्केटमें तेजियां बनाया करते हैं । प्रजामें अराजकता, धान्य भाव तेज हों । ईशान देशमें भंग होनेका योग है । अर्थात् किसी राष्ट्रके कर्णधारका निधन संभव होता है । फल शुभ नहीं माना गया है ।

पौषवदी १ शुक्रवारको धनुः संक्रान्ति वार-प्रवृति अनुसार शनिवारको लगी है । जो चौल, कर्नाटक, गौड़, देवगिरी, मलय, मालवामें उप-द्रवों द्वारा कष्ट होता है । सूत कपड़ा तिल, तैल, घृत, सोनेका भाव तेज होता है । जिससे पहले खरीदने वालेको लाभ होगा । संक्रान्ति १५ मुहूर्ती है । वक्री शनि वदी पक्षमें तिथि १ सोमवारको हुए हैं । तिल, तैल, उड़द, मूंग, मोठ, ऊनी वस्त्र गेहूँ चणा, मटर, पर तेजी आती है । सुदी पक्षमें वृश्चिक राशि पर शुक्र मंदीकारक सुभिक्षकारक है । विशेय तेजियां नहीं बनती है । शनिवारकी पूर्णिमा अशुभ है ।

इस अंकके सम्बन्धमें

२२वें वर्षका यह नववर्षाङ्क परिस्थितिवशात् कुछ विलम्बसे प्रकाशित हो सका इसका मुझे खेद है । अभी इन दो-तीन मासोंमें प्रकृतिप्रकोप जलप्लावनसे देशका जनजीवन अस्तव्यस्त हो गया था यह पाठकोंको विदित है । इस दैवीप्रकोपसे हिमाचल-प्रदेश भी अछूता नहीं रहा, अतः इस अङ्कके मुद्रण कार्यमें भी बाधा पड़ी और इधर गत दो सप्ताहसे मेरा स्वास्थ्य सन्तोषजनक नहीं रहा । एतदर्थ यह अङ्क जैसा मैं चाहता था नहीं निकल पाया । शरत्पूर्णिमा होते ही ग्राहकोंके पत्र और तारोंका तांता लग गया अतः इस अङ्कको जैसेतैसे ८८ पृष्ठोंमें पूर्ण करके प्रेमी पाठकोंकी सेवामें प्रस्तुत किया जा रहा है । जो महत्वपूर्ण सामग्री इस अङ्कमें न आ सकी वह आगामी अङ्कमें आ सकेगी । यदि पूरी सामग्री १०४ पृष्ठोंमें दी जाती तो १० दिनका और विलम्ब हो जाता और यह अङ्क दीपावलीसे पहले प्रकाशित न हो सकता । परिस्थितिवशात् इस विलम्बके लिए पाठक क्षमा करेंगे । ज्योतिषसम्बन्धी अन्य सब कार्य स्थगित हैं, अतः इस सम्बन्धमें पत्र-व्यवहार न करें ।

—हरदेव शर्मा त्रिवेदी

"JYOTISHMATI" REGISTRAR NEWS PAPERS FOR INDIA R.N., 4941/57

हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा कुमार प्रि॰ प्रैस सोलनमें छपकर ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलनसे प्रकाशित।